# अक्लमन्दी का ख़ज़ाना

# नीतिसंग्रह शिरोमणि

वा

## अक्लमन्दी का खज़ाना

अर्थात्

चाणक्य नीति, शुक्र नीति, विदुर नीति, भर्तृहरि नीति, चीनी महात्मा कनफ्यूशियस की नीति, तथा उर्दू, अरबी, अँगरेजी और संस्कृतके अनेकानेक नीति-ग्रन्थोंकी नीतिका बालोपयोगी सरल हिन्दी अनुवाद।


लेखक—

हरिदास वैद्य





प्रकाशक

*हरिदास एण्ड कम्पनी*





कलकत्ता

२०१, हरिसन रोड के नरसिंह प्रेस में

बाबू रामप्रताप भार्गव द्वारा

मुद्रित।

नवम्बर सन् १९१८ ई०

चौथी बार २०००　　　　मूल्य २।)

# भूमिका

महात्मा शुक्राचार्य्य ने बहुतही ठीक कहा है, कि व्याकरण से शब्द और अर्थका ज्ञान होता है, न्याय और तर्क-शास्त्रसे जगत् के पदार्थों का ज्ञान होता है और वेदान्तसे संसारकी असारता एवं देहकी अनित्यताका ज्ञान होता है, किन्तु लौकिक व्यवहारमें इन शास्त्रोंसे कुछ भी प्रयोजन नहीं निकलता। सामाजिक कार्य्य-व्यवहार निर्वाह करने और सुखपूर्व्वक जीवन बितानेके लिये जिस चीजकी बड़ी भारी आवश्यकता है, वह "नीतिशास्त्र" है। जिस तरह जीवधारियोंको जीवनरक्षाके लिये अन्न-जल की जरूरत है, उसी तरह संसारके कार-व्यवहार चलानेके लिये "नीति" की आवश्यकता है। यह शास्त्र महलोंमें रहनेवाले राजासे लेकर कुटीर-निवासी क्षुद्र मनुष्य तकके लिये समान भावसे जरूरी है।

खेदकी बात है, कि यही "नीतिशास्त्र" संस्कृत भाषामें है। आजकल, संस्कृतका पठन-पाठन राजा भोजके समय या उनके पहले के जमाने की तरह नहीं है। बहुत कम लोग संस्कृत पढते हैं। मुसल्मानी राजत्वकालमें लोगोंकी रुचि फ़ारसी-अरबी की तरफ़ थी और आजकल विशेष रुचि अङ्ग

रेजी की ओर है। खैर, इतनी ही है, कि आजकल पहले से अधिक हिन्दी-शिक्षित पाये जाते हैं। वे जैसी पुस्तकें स्कूलों में पढते हैं, उनसे उनको यथेष्ट नीति ज्ञान नहीं होता। यही कारण है, कि आजकल के लडकोंमें माता-पिताकी भक्ति, स्त्रियोंमें पति-प्रेम, पुरुषोंमें स्वपत्नी-अनुराग, सेवकोंमें स्वामि-भक्ति, विद्यार्थियोंमें गुरु-भक्ति, भाई-भाईयोंमें भ्रातृ-प्रेमका अभाव पाया जाता है।

हिन्दीके सभी पाठक संस्कृत, अँगरेजी, अरबी, फारसी प्रभृति सभी देशी-विदेशी भाषाएँ नहीं जानते, इसीलिये वे सुधा-समान नीति-रसके चखनेसे वञ्चित रहते हैं। बस, इसी कारणसे, मैंने हिन्दीके पाठकोंके उपकारार्थ संस्कृतके कतिपय ग्रन्थों, फारसीकी कई पुस्तकों और अँगरेजी की कितनी ही किताबों तथा मासिकपत्रोंसे अनमोल और समयोपयोगी वाक्योंको चुनकर, सरल हिन्दीमें अनुवाद करके, इस पुस्तक में सजा दिया है। अगर मैं यह कहूँ, कि भारत, ईरान अरब, चीनके प्राय सभी नीति-विशारदोंकी नीतिका संग्रह, पूर्णतया या सबसे अधिक हिन्दीकी इसी पुस्तकमें किया गया है, तोभी अत्युक्ति न समझनी चाहिये। कनफूशियस और शुक्राचार्य्य ने राजनीति बहुत लिखी है, किन्तु मैंने उसे इस जमानेमें, इस मुल्कके लिये, विशेष उपयोगी न समझ कर छोड दिया है और पश्चिमीय नीतिके संग्रह करनेमें भी इस बातका ध्यान रक्खा है। इस पुस्तकमें एशियाई नीति अधिक

है और यूरोपीय कम, तथापि अब हिन्दी पाठकोंको नीतिके लिये दूसरी पुस्तक देखने की आवश्यकता न होगी।

इस पुस्तककी भाषा मैंने यथाशक्ति नितान्त सरल और सीधी सादी रक्खी है, जिससे साधारण हिन्दी जाननेवाले बाल, वृद्ध, युवक, नर और नारी एव शिक्षित, अर्द्धशिक्षित, हर अवस्थाके मनुष्य, इससे लाभ उठा सकेंगे। बहुत कहनेसे क्या, नीतिकी बाहुल्यता और भाषाकी सरलताके कारण यह पुस्तक हिन्दी-संसारमें नई चीज़ है। आशा है, कि हिन्दी पाठक मेरी मिहनत की कदरदानी करके मेरा उत्साह पूर्ववत बढाते रहेंगे।

इस पुस्तकके लिखनेमें मुझे संस्कृत ग्रन्थोंके सिव *The Sayings of Confucius*, *The Wisdom of the East* तथा *Arabian Wisdom* इत्यादि अँगरेजी पुस्तकोंसे भी बहुत-कुछ सहायता मिली है। फारसी गुलिस्ताँके आठवे बाबके अनुवाद करनेमें बाबू रामप्रतापजी भार्गव और मुनशी बद्रीप्रदासजी भार्गव से मदद मिली है। अत मैं उक्त महाशयोंको हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता।

कलकत्ता
१—११—१९११

विनीत—
हरिदास।

# वक्तव्य

आज इस पुस्तकका चौथा संस्करण देखनेसे मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इसका पहला संस्करण सन् १८११ में हुआ था। इन कई वर्षों में इसकी कोई ७००० कापियाँ हाथो-हाथ खरीद कर, हिन्दी-प्रेमियोंने मुझे बहुतही उत्साहित किया है। इसके लिये मैं उनका चिरकृतज्ञ हूँ। यह मेरा अहोभाग्य है कि हिन्दी पाठक मेरी लिखी पुस्तकोंको विशेष प्रेम और चावसे खरीदते हैं। अगर यह बात न होती, तो स्वास्थ्यरक्षा, गुलिस्ताँ, गीता, अकलमन्दोंका खजाना, पाँचो भाग अँगरेजी-हिन्दी-शिक्षा और बँगला-हिन्दी-शिक्षाके एडीशन पर एडीशन न होते। कई पुस्तकोंकी तो दस दस और चालीस-चालीस हजार कापियाँ तक बिक गई हैं।

इस "अकलमन्दोंके खजाने"को सुशिक्षित, अर्द्धशिक्षित सभी श्रेणीके लोग बहुत ही पसन्द करते हैं, इसलिये इस बार इसकी भी पृष्ठ-संख्या बढ़ाकर ३३० कर दी गई है। छपाई भी चिकने आइभोरी कागज पर कराई है। इसलिए मूल्य १॥) के बजाय २) करना पड़ा है। इस कागजके अकालमें, इस मूल्यमें भी उचित मुनाफा नहीं है, तोभी इस पुस्तकका प्रचार बढ़ाने और झोपड़ी-झोपड़ीमें पहुँचानेकी गरजसे, इतने परही सन्तोष करना मुनासिब समझा। आशा है, प्रेमी पाठक इसे पहलेकी तरह खरीद कर प्रकाशकोंको हानि से बचा लेंगे।

विनीत—

१ दिसम्बर, १८१८

हरिदास।

# नीतिसंग्रह-शिरोमणि

उर्फ

# अक़्लमन्दी का खज़ाना ।

## चाणक्य-नीति ।



### पहला अध्याय ।

---

मूर्खं चेलेको पढाने, दुष्टा नारीके पालन करने और दुःखियोंके साथ व्यवहार करनेसे विद्वान् भी दुःख भोगता है तब दूसरोंकी क्या बात है ?

(२) दुष्टा स्त्री, दगाबाज दोस्त, जवाबदिही करनेवाला नौकर और साँपवाले घरमें रहना—ये सब निस्सन्देह मृत्यु के समान है ।

(३) जब मनुष्य पर विपत्ति पड़ती है तब उसका बचाव धन से हो सकता है, इसवास्ते विपत्ति के लिये पहले से ही धन को बचाकर रखना उचित है। यदि स्त्री पर कष्ट आपड़े तो उसकी रक्षा धनसे करनी चाहिये, किन्तु जब स्वयं अपने ऊपर ही मुसीबत आपड़े, तब अपनी रक्षा स्त्री और धन दोनों से करनी चाहिये।

(४) चतुर मनुष्य को चाहिये कि जहाँ उसका आदर-सम्मान न हो, जहाँ उसकी जीविका न हो, जहाँ उसके भाई-बन्धु न हों और जहाँ विद्या पढ़नेका भी लाभ न हो,—वहाँ कदापि न बसे।

(५) जहाँ साहूकार, वेदज्ञ ब्राह्मण, राजा, नदी और वैद्य, ये पाँचो न हो,—वहाँ चतुर मनुष्यको एक दिन भी न रहना चाहिये।

(६) जो बेरोजगार है, जो बेहया या बेशर्म है, जो निडर है, जो मूर्ख है और जिनका स्वभाव उदार नहीं है—उन लोगोंसे प्रीति न करनी चाहिये।

(७) काम में लगाकर नौकर की परीक्षा होती है, अपने ऊपर मुसीबत आनेसे नाते-रिश्तेदारों की जाँच होती है, विपत्तिकाल में मित्र की परीक्षा होती है और धन-धान्य, सुख-सम्पत्ति के नाश हो जानेपर स्त्री की परीक्षा होती है।

(८) जो सङ्कट पड़ने पर सहायता करता है, दुर्भिक्ष के समय धन-धान्य से मदद करता है, वैरियो के सताने पर

उन से छुटकारा कराता है, कचहरी या राज-दर्बार में साथ देता है और किसी की मृत्यु हो जानेपर श्मशान पर भी हाज़िर रहता है,—उसे ही मित्र या भाई-बन्धु कह सकते हैं।

(८) बुद्धिमान् को चाहिये कि यदि अच्छे कुलकी लड़की बद-सूरत भी हो, तो उससे शादी कर ले, किन्तु नीच वंश की सुन्दरी कन्या से भी कदापि विवाह न करें, क्योंकि शादी-विवाह सदा समान कुल में होने से ही सुखदायी होते हैं।

(१०) चतुर मनुष्य को चाहिये कि नदियों का, हथियार बाँधनेवालोंका, गाय-भैंस आदि सींगवाले जानवरों का, शेर-चीते आदि नाख़ूनवाले जानवरोंका, औरतों का तथा राज-कुटुम्बियों का कभी विश्वास न करें। जो इन का विश्वास करेगा, उसका नाश अवश्य ही होगा।

(११) यदि विषमें भी अमृत हो, तो उसे ले लेना चाहिये। अगर विष्ठा आदि मैली चीज़ों में भी सोना मिले तो उसे न छोड़ना चाहिये। अच्छी विद्या यदि नीच मनुष्य के पास भी हो, तो अवश्य सीख लेनी चाहिये। स्त्री रत्न यदि दुष्ट कुल में भी हो, तोभी ले लेना चाहिये।

(१२) औरतें मर्दों से दूना खाती हैं और उन से चौगुनी शर्म करती हैं। उन में पुरुषों की अपेक्षा छः गुना साहस और अठगुणी कामाग्नि (पुरुषेच्छा) होती है।

ा उद्योग करे,—उस मित्रको उस घड़े के समान समझना चाहिये जिसके मुंहपर तो दूध भरा है, किन्तु भीतर जहर भरा है। जिस भांति ऐसा घड़ा त्यागने-योग्य है, वैसे ही वैसा दुराचारी मित्र भी छोड़ने योग्य है।

( ६ ) खोटे मित्र पर तो किसी भांति विश्वास करना ही न चाहिये, किन्तु अच्छे मित्र पर भी बुद्धिमान् एकाएकी विश्वास न कर बैठे, क्योंकि इस बातका भय अवश्य है कि कभी अच्छा मित्र भी, किसी तरह नाराज होनेसे, सब गुप्त बातों को प्रकाशित करके सब काम चौपट न करदे।

( ७ ) जो बात मनमें विचारी हो, उसे किसी से भी न कहना चाहिये। सोची हुई बात के कह डालने से, बहुधा, बनते-बनते काम बिगड़ जाते हैं, अतएव जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय तब तक तो अपने पेट की बात को पेटमें रखना ही ठीक है।

( ८ ) मूर्खता मनुष्य को दुःख देती है, जवानी भी दुःख देती है, किन्तु दूसरे के घर का बसना तो सब से ही अधिक दुःखदायी होता है।

( ९ ) सब ही पहाड़ों में माणिक नहीं होते, सब ही हाथियों के मस्तक में मोती नहीं होते, सब ही वनों में चन्दन नहीं होता और सब ही स्थानों में सज्जन पुरुष नहीं होते।

( १० ) वह मां बाप जो अपने पुत्र को विद्या

पढ़ाते, उसके ( अपने पुत्रके ) दुश्मन होते हैं न कि मा बाप, क्योंकि मूर्ख पुत्र विद्वानो की मण्डली में इस भाँति अच्छा नही लगता, जैसे कि हंसोंके बीच मे बगुला शोभा नही पाता।

( ११ ) लाड करनेमें बहुत से दोष हैं, किन्तु सजा देने मे बहुत से गुण हैं। इसवास्ते पुत्र और शिष्य ( चेले ) को ताड़ना देना ही अच्छा है, परन्तु लाड करना हानिकारक है।

( १२ ) कम से कम एक नया श्लोक नित्य पढ़ना चाहिये, यदि एक श्लोक रोज़ न हो सके तो आधा ही पढ़ना चाहिये, यदि आधा भी न बन पड़े तो चौथाई ही रोज पढ़ना चाहिये. क्योंकि दान करने और पढ़नेसे दिन को सार्थक करना, बहुत ही ज़रूरी बात है।

( १३ ) अपनी स्त्री की जुदाई, अपने ही आदमियों से अपना अनादर और युद्ध से बच कर निकल गया हुआ दुश्मन,—ये विना आग ही मनुष्य को जलाते रहते हैं।

( १४ ) वह वृक्ष जो नदीके किनारे होते हैं अवश्य ही नष्ट हो जाते हैं, वह स्त्री, जो अड़ोस-पड़ोस के या दूसरों के घरों में बहुधा आया-जाया करती है, अवश्य ही बदचलन हो जाती है। इसी भाँति वह राजा जिसके मन्त्री नहीं होता, निश्चय ही नाश हो जाता है।

( १५ ) ब्राह्मणों का बल विद्या है, राजा का बल फौज है, वैश्यों का बल धन है और शूद्रों का बल चाकरी है।

( १६ ) वेश्या निर्धन पुरुष को त्याग देती है, प्रजा निर्बल

राजा को छोड देती है, पखेरू फलहीन वृक्ष को छोड देते हैं और अभ्यागत ( मिहमान ) भोजन करनेके बाद घर को छोड कर चल देते हैं।

( १७ ) जिसका चाल चलन खराब है, जिसकी नज़र हमेशा पाप-कर्म्मों में रहती है, जो खराब जगहमें रहता है और जो दुष्ट है,—ऐसे मनुष्य के साथ जो मित्रता करता है, वह शीघ्र ही नाश हो जाता है।

( १८ ) अपने बराबर वालों के साथ प्रेम शोभा देता है, राजा को चाकरी शोभा देती है, व्यवहारों में वाणिज्य-व्योपार शोभा देता है और घरमें सुन्दर स्त्री शोभा देती है।

# तीसरा अध्याय।

ऐसा कौन है, जिसके कुल में कुछ दोष नहीं है? ऐसा कौन है जिसे किसी रोगने कभी नहीं सताया? ऐसा कौन है जिसे कभी कुछ दुःख न हुआ हो? ऐसा कौन है, जिसे सदा सुख ही सुख मिला हो?

इसका खुलासा मतलब यह है, कि ऐसा कोई नहीं है जिसके कुलमें दोष न हो। ऐसा कोई नहीं है, जिसे कुछ न कुछ बीमारी कभी न हुई हो। ऐसा कोई नहीं है, जिसे कभी कोई दुःख न हुआ हो और ऐसा भी कोई नहीं है जो सदा सुखी ही रहा हो यानी जिसे मुसीबतने कभी दर्शन न दिये हो।

(२) आचार (चाल-चलन) से कुल का पता लगता है। बोली से मनुष्य के देश का पता लगता है। आदर-सत्कार से प्रीति का पता लगता है और शरीर से भोजन का पता लग जाता है।

(३) कन्या अच्छे कुल में देनी उचित है। पुत्र को विद्याभ्यास कराना मुनासिब है। दुश्मन को दुःख पहुँचाना और दोस्तको धर्म कार्य्य की सलाह देनी उचित है।

(४) दुष्ट मनुष्य और साँप इन दोनोंमें साँप अच्छा है, किन्तु दुष्ट मनुष्य अच्छा नहीं, क्योंकि सर्प तो समय आने पर काटता है परन्तु दुष्ट पैड पैंड पर दुःख देता है।

(५) राजा लोग कुलीन पुरुषों को जहाँ-तहाँ से ढूंढ़ कर इसवास्ते रखते हैं कि अच्छे कुलवाले मनुष्य राजा को उसकी ऊँची-नीची और मध्यम अवस्था में भी नहीं छोड़ते।

मतलब यह है कि हीन कुलवाले लोग राजाकी उन्नत अवस्थामें तो उसके संग चिपटे रहते हैं, किन्तु जब उसका विपत्तिकाल आता है तब उसे दुःखमें छोड़ कर नौ दो ग्यारह हो जाते हैं, किन्तु उत्तम कुलवाले पुरुष तीनों अवस्थाओं में संग नहीं छोड़ते। अतएव कुलीन पुरुषों का संग्रह करना ही अच्छा है।

(६) प्रलयकाल में समुद्र भी अपनी मर्यादा छोड़ कर जगत् को डुबा देता है, किन्तु सज्जन पुरुष प्रलय के समय भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ते।

(७) मूर्ख मनुष्य से दूर रहना ही ठीक है क्योंकि वह देखनेमें तो मनुष्य है, लेकिन है दो पाँववाला जानवर। मूर्ख अपने वचन रूपी बाणोंसे ऐसे छेदता है,जैसे अन्धे मनुष्यको काँटा।

(८) मनुष्य चाहे कैसाही खूबसूरत और जवान हो और उसने कैसेही बड़े कुलमें जन्म क्यों न लिया हो, यदि वह विद्याहीन हो तो वो ढाकके फूलोंके समान लगता है, जिन में सुगन्ध तो नामको भी नहीं होती, किन्तु देखनेमें खूबही सुन्दर मालूम होते हैं।

(९) कोयलों की शोभा "स्वर" (मीठी आवाज) है, स्त्रियों की शोभा "पातिव्रत" है। पुरुषों की शोभा "विद्या" है और तपस्वियोंकी शोभा "क्षमा" है।

(१०) कुलके लिये एक को छोड़ देना उचित है, गाँवके लिये कुल को त्याग देना मुनासिब है, देशके लिये गाँव को और अपने लिये तो पृथ्वीकोही छोड़ देना ठीक है।

(११) जो उद्योगी पुरुष हैं उनसे दरिद्रता दूर रहती है, जप करनेवालोंके पास पाप नहीं फटकता चुप रहनेमे लड़ाई-झगड़ा नहीं होता और जागनेवालोंके पास भय नहीं आता।

(१२) सीता अति सुन्दरी थी, इसवास्ते उसे रावण ले गया, रावण अति अभिमानी था इसलिये रामचन्द्र द्वारा मारा गया, राजा बलि अत्यन्त दानी थे, अतएव वामन भगवान्ने उन्हें बन्धनमें डाल कर पाताल भेज दिया, इस-वास्ते सबही कामोंमें "अति" अच्छी नहीं है।

खुलासा मतलब यह है कि सीता अति सुन्दर थी, इस वास्ते उसका हरण हुआ। रावणमें अति घमण्ड था, इस वास्ते उसका नाश हुआ और बलिमें अतिदान देने की प्रकृति थी, इसवास्ते उसका बन्धन हुआ। इस बातको देखकर मनुष्यों को चाहिये कि किसी विषयमें भी "अति" न करें क्योंकि जगत्‌के सभी कार्य्य, अतिसे किये जाने पर, परिणाममें निस्सन्देह कष्टदायी होते हैं।

(१२) सामर्थ्यवानोंके लिये कौनसी चीज भारी है व्यापारियोंके लिये कौनसी जगह दूर है? सुन्दर विद्यावाले के लिये परदेश कौनसा है? मीठी वाणी बोलनेवालोंके लिये अप्रिय (कुप्यारा) कौन है?

इसका ऐसा मतलब है कि जो सामर्थ्यवान् हैं, उनके लिये कोई वस्तु भारी नहीं, यानी वह कठिनसे कठिन काम कर सकते हैं। जो उद्योगी (व्योपारी) हैं उनके लिये कोई देश दूर नहीं है अर्थात् वह दुनियाके एक छोरसे दूसरे छोर तक बेखटके पहुंचते हैं और धन कमाते हैं। जिनके पास विद्या-बल है, वे जहां जाते हैं, वहां ही सब उनके घरके से हो जाते हैं और उनका सब जगह आदर होता है; इसवास्ते उनको विदेश भी स्वदेश सा मालूम होने लगता है। जो मीठी बोली बोलते हैं उनसे तो जगत्‌के सबही प्राणी प्रसन्न रहते हैं। ऐसा कौन है, जो मीठी बोलीसे सन्तुष्ट न हो? त्रिलोकीके वश करनेके लिये मीठे वचनसे बढ़ कर कोई दूसरा मन्त्र ही नहीं है।

(१४) सुन्दर फूल और सुगन्धवाले एकही वृक्षसे सारा वन का वन महकने लगता है, जैसे सपूत (सुपुत्र) से कुल।

(१५) एकही सूखे और आगसे जलते हुए वृक्षसे सारा वनका वन नाश हो जाता है, जैसे एक कपूत (कुपुत्र) से कुलका कुल डूब जाता है।

(१६) अगर कुलमें एक भी सुपुत्र, विद्वान् और भला हो, तो उससे सारा कुल इस भाँति सुखी होता है, जैसे एक चन्द्रमासे रात्रि।

(१७) शोक-सन्ताप करनेवाले बहुतसे पुत्रोंके पैदा होने से क्या लाभ है? जिससे कुल को सुख मिले, ऐसा कुलका आश्रयदाता तो एकही पुत्र भला है।

(१८) बुद्धिमान्को उचित है कि पाँच वर्षकी अवस्था तक पुत्रका लाड-प्यार करे। इसके पीछे पन्द्रह वर्षकी अवस्था तक उसको ताड़ना दे (लाड न करे) और जब वह सोलहवें वर्षमें पैर धरे, तब उससे ऐसा बर्ताव करे, जैसा मित्र मित्रके साथ करता है।

नीतिका यह नियम क्या ही अच्छा है। परन्तु आज कल के अधिकांश लोग नीतिशास्त्रको न स्वयं पढ़ते हैं न बच्चों को पढ़ाते हैं। वे लोग इस नियमसे अज्ञान रहनेके कारण बिल्कुल उल्टा काम करते हैं और अपने भविष्य जीवनके लिये विष-वृक्ष तैयार करते हैं। अनेक मनुष्य ऐसे देखने में आते हैं, जो सदा मोहके वश हो कर पुत्रको लाडमें बिगाड

देते हैं। जब पुत्र बदचलन हो जाता है और मूर्ख रह जाने के कारण, उनका अनादर करता और सिरमें जूतियाँ तक लगाने को तय्यार होता है तब हाथ मलते और पछताते हैं, किन्तु पीछे क्या हो सकता है? कच्चे घड़े परही निशान हो सकते हैं। पके घड़े पर निशान नहीं हो सकते। दूसरे इस किस्मके लोग भी हैं जो सदा-सर्वदा पुत्रके जवान हो जाने पर भी उससे कठोर बर्ताव रखते हैं। इससे भी कुफल फलता है, यानी पिता पुत्रमें प्रेमका अङ्कुर नहीं जमने पाता और वे एक दूसरेके शत्रु से बन जाते हैं। अतएव सुखार्थी दूरदर्शी मनुष्यों को चाणक्यका यह वचन, सदा, सादर पालन करना उचित है।

(१६) उपद्रव उठने पर, दुश्मनके हमला करने पर, भारी अकाल पड़ने पर और दुष्टका सङ्ग होने पर,—जो मनुष्य भागता है वही जिन्दा रहता है।

इसका खुलासा मतलब इस भांति समझना चाहिये कि यदि अपने नगरमें महामारी, प्लेग आदि उपद्रव उठ खड़े हों या गदर हो जावे तो नगर को छोड़ कर भाग जानेमें ही भलाई है। इसी भाँति यदि अपने ऊपर शत्रु आक्रमण करे और अपनेमें उससे लड़कर पार पानेकी ताकत न हो तो भाग कर जान बचाना ही ठीक है। अगर स्वदेशमें भयानक पड़ जाय और दूसरे देशमें सुकाल हो, तो स्वदेश ह[illegible] उस देशमें भाग जानेसे ही जान बच सकती है

यदि दैवात् दुर्जनका साथ हो जाय, तो उसे छोड़ भागनेमें ही जीवनकी भलाई है।

( २० ) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चार पदार्थ मुख्य हैं। जिस मनुष्यको इन चारोंमेंसे एक भी प्राप्त न हुआ, उसका मनुष्यों में जन्म लेने का फल केवल मरना ही हुआ।

( २१ ) जिस जगह मूर्खों का आदर नहीं होता, जहां अन्नका जखीरा जमा रहता है और जहां पति पत्नी में लड़ाई-झगड़ा नहीं होता,—वहां लक्ष्मी आपसे आप मौजूद रहती है अर्थात् ऐसे घर को छोड़ कर लक्ष्मी कदापि नहीं जाती।

---

# चौथा अध्याय।

इस बातका निश्चय है कि जब जीव गर्भमें रहता है तबही उसके ललाटमें उसकी "उम्र, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु" ये पांचों लिख दिये जाते हैं।

( २ ) जब तक शरीर आरोग्य है और जब तक मौत दूर है, तब तक अपनी भलाई का उपाय करना उचित है, क्योंकि प्राणान्त होनेके बाद कोई क्या कर सकेगा?

जब तक मनुष्यका शरीर किसी व्याधिसे पीड़ित न हो और मृत्यु न आवे, तबही तक वह अपनी पारलौकिक भलाईके लिये भगवद्भजन, दान, पुण्य, परोपकार आदि कर सकता है। जब काफ, खाँसी और दम घेर लेंगे और काल अपने कराल चुगलमें फँसा लेगा, तब मनुष्य हाथ मलने और पछतानेके सिवाय क्या कर सकेगा? फिर उसे वह पिछला समय कोटि यत्न करने पर भी न मिलेगा।

( ३ ) विद्या काम धेनु ( गाय ) के समान है, क्योंकि वह अकालमें भी फल देती है, विद्या परदेशमें माताके समान है, विद्या को गुप्त धन कहते हैं, अतएव मनुष्य-मात्र को विद्या पढ़नेका उद्योग जी-जानसे करना चाहिये।

( ४ ) गुणवान् पुत्र तो एकही भला होता है, यदि गुणरहित पुत्र सौ भी हों तोभी कुछ लाभ नहीं है। जैसे एक चन्द्रमा सारे अन्धेरे का नाश कर देता है, मगर हज़ारों तारोंसे वह काम नहीं हो सकता।

( ५ ) पुत्र दो प्रकारके होते हैं—एक वह, जिसने जन्म लिया और शीघ्रही मर गया और दूसरा वह, जो बहुत दिन तक जिया। यदि चिरञ्जीवी पुत्र मूर्ख हो, तो उससे वही पुत्र भला है, जो जन्म लेतेही मर गया, क्योंकि उससे बहुत थोड़ा दुःख हुआ। किन्तु चिरञ्जीव मूर्ख पुत्र अच्छा नहीं है, क्योंकि वह जब तक जीता रहेगा तब तक कुढ़ाता और जलाता रहेगा।

( ६ ) खराब गाँवका बसना, नीच कुलकी चाकरी, खराब भोजन, कर्कशा या कलह कारिणी स्त्री, मूर्ख पुत्र और विधवा कन्या,—ये छ बिना आग ही शरीर को जलाते रहते हैं।

( ७ ) उस गायसे क्या फायदा, जो न दूध देवे न गाभिन होवे ? उस पुत्रसे क्या लाभ, जो न विद्वान् होवे न भक्तिमान् ?

( ८ ) जगत् की आगसे जलते हुए पुरुषों की शान्ति और विश्रामके तीनही हेतु हैं —पुत्र, स्त्री और सज्जनों की सङ्गति।

( ९ ) राजा एकही बार हुक्म देते हैं, विद्वान् एकही बार बोलते हैं और कन्या का दान एकही बार किया जाता है,—ये तीनों बातें एकही दफा होती हैं, बार-बार नहीं होतीं।

कन्या-दान एकबारही होता है। एक बार दान की हुई चीज़ पराई हो जाती है। दानकर्त्ता को फिर उसके दान करनेका कोई अधिकार नहीं रहता। इस बातको मोटी समझकी आदमी भी सरलतासे समझ सकते हैं।

( १० ) तपस्या अकेलेमें ठीक होती है, पढ़ना दो जनों का साथ होनेसे अच्छा होता है गाना तीन जनोंसे अच्छा बनता है, सफ़रमें चार जनोंके साथ रहनेमें सुख मिलता है, पाँच जनोंसे खेती अच्छी होती है और बहुत जनोंके एक साथ मिल कर युद्ध करनेसे युद्धमें जय होती है।

( ११ ) वही भार्या ठीक है, जो पवित्र और चतुर हो, वही भली है जो पतिव्रता हो, वही पत्नी भली है, जिस पर पति का प्रेम हो और वही स्त्री श्रेष्ठ है, जो सत्य बोलती हो।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि उपरोक्त गुणोंवाली भार्या प्रशंसा-योग्य है। उससेही पुरुषको स्वर्ग-सुख मिलता है और वही भार्या अच्छी तरह पालन-पोषण और खातिर करने लायक़ है।

( १२ ) जिसके पुत्र नहीं है, उस का घर सूना है, जिसके भाई-बन्धु नहीं हैं, उस को दिशाएँ सूनी हैं, मूर्ख का हृदय सूना है और दरिद्रके लिये तो सब कुछही सूना है।

( १३ ) अभ्यास ( मश्क़ ) न करनेसे शास्त्र विष हो जाता है, न पचनेसे भोजन विष हो जाता है, दरिद्र आदमीके लिये सभा और बूढे पुरुषके लिये नव-यौवना स्त्री जहरके समान मालूम होती है।

( १४ ) जिस धर्ममें दया न हो, उसे छोड़ देना चाहिये। जो गुरु विद्या-हीन हो, उसको त्याग देना ही ठीक है। जो अपनी स्त्री लड़ाकी हो यानी उसके मुँह पर सदा क्रोध ही छाया रहता हो, तो उसे अलग कर देनाही उचित है और जो भाई-बन्धु अपनेसे मुहब्बत न रखते हों तो उनको भी त्याग देनाही मुनासिब है।

( १५ ) कौन समय है ? कौन मेरे मित्र हैं ? कौन देश

है ? मेरी आमदनी और खर्च क्या है ? मैं किसका हूं ? मुझ में कितना बल है ? इतने प्रश्न मन में बारम्बार विचारने चाहियें।

मतलब यह है कि जो शख्स उपरके सवालात मनमें सदा विचारता रहता है वह एजाएकी मुसीबतमें नहीं फँसता। किसी कामके आरम्भ करनेसे पहिले तो उपरोक्त प्रश्न अवश्यही विचारने चाहियें।

(१६) ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्यों का देवता अग्नि है, ऋषि-मुनियों का देवता उनके हृदयमें रहता है, अल्पबुद्धियों अर्थात् कम-अक्लों का देवता मूर्त्तिमें रहता है, किन्तु सम दर्शियोंका देवता सब ठौरही रहता है।

(१७) स्त्रियोंका गुरु केवल पति है। अभ्यागत (मिह-मान) सबका गुरु है। ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य इन तीनों वर्णों का गुरु अग्नि है और चारोंही वर्णों का गुरु ब्राह्मण है।

---

# पाँचवाँ अध्याय।

जिस भाँति कसोटीपर घिसने, काटने, आगमें तपाने और हथौडोसे कूटनेपर "सोने" की परीक्षा होती है, उसी भाँति 'दान, शील (स्वभाव), गुण और चालचलन' से पुरुषकी परीक्षा होती है।

(२) जबतक डर पास न आया हो तबतक ही डरसे

और राज्य भी मनुष्य मोक्ष पाता है। इस विषयमें सन्देह करनेकी जगह नहीं है। मतलब यह है, कि उपरोक्त कामों में कोई किसीकी मदद नहीं कर सकता।

जब मनुष्य गर्भमें रहता है और जन्म लेनेतक जो-जो कष्ट सहाता है, उनमें उसका दुःख बँटानेवाला कोई नहीं होता। इसी भाँति मरनेके समय, उसपर जो-जो भय और कष्ट पड़ते हैं उनमें उसको सहायता करनेवाला कोई नहीं होता। माता, पिता, पुत्र और प्राणप्यारी स्त्री सब देखा करते हैं, मगर कुछ कर नहीं सकते जिसकी जानपर बीतती है, वही भोगता है। यदि मनुष्य जीवित अवस्थामें पापकर्म, जुल्म, अत्याचार, चोरी आदि करता है तो उनका दण्ड उसे ही नरकोंमें पड़कर भोगना पड़ता है। वहाँ सगे-सम्बन्धी, भाई-बन्धु, स्त्री, पुत्र आदि उसकी कोई सहायता नहीं कर सकते। और जब वह अपने सुकर्मों या पुण्य फलसे स्वर्गमें जाता है या एकदम संसारके आवा-गमनसे छूटकर मोक्ष या निर्वाण पाता है तो उस सच्चे सुखमें भी उसका हिस्सा बँटानेवाला या मददगार कोई नहीं होता।

( १७ ) जो ब्रह्मको चीन्हते हैं वे स्वर्गको तिनके के समान समझते हैं, जो वीर पुरुष होते हैं वे अपनी ज़िन्दगीको भी तिनके के समान समझते हैं। जिन्होंने अपनी इन्द्रियोंको जीत लिया है उनके लिये 'स्त्री' तृणके समान मालूम होती है और जिनको किसी चीज़की जरूरत ही नहीं है वे संसार को भी तिनके के समान समझते हैं।

( १४ ) परदेशमें मनुष्यका मित्र 'विद्या' है। घरमें पुरुष का मित्र 'स्त्री' है। रोगीका मित्र 'दवा' है और मरे हुए मनुष्यका मित्र 'धर्म' है।

( १५ ) समुद्रमें वर्षा होना व्यर्थ है, अघाये हुए मनुष्य को भोजन कराना वृथा है, जो स्वय धनवान् है, उसे दान देनेसे कुछ लाभ नहीं है और दिनमें चिराग जलानेसे भी कुछ फ़ायदा नहीं है।

समुद्रमें आप ही अथाह जल भरा है, अगर वहां वृष्टि हो ही जाय तो क्या लाभ? वृष्टि यदि मारवाड़ देश जैसे पानीको तरसते हुए देशमें हो तो बेशक उसका होना अच्छा है। जिसका पेट भरा हुआ है, उसे खिलानेसे क्या पुण्य हो सकता है? कदापि नहीं। भोजन तो भूखेको ही कराना उत्तम है। जो स्वय धनवान् है उसे दान देनेसे क्या लाभ होगा? अर्थात् कुछ भी लाभ न होगा। यदि निर्धनको धन दिया जाय तो बेशक पुण्य-सञ्चय होसकता है। जब सूर्यका चाँदना जगत्में फैल रहा हो तब चिराग जलाना व्यर्थ नहीं तो और क्या है?

हमारे बहुतसे भाई आजकल इस श्लोकके विरुद्ध कार्य करते हैं। वे लोग धापे हुओंको भोजन कराते हैं, तीर्थोंके धनवान् ऐश्वर्यशाली पण्डोंके चरणोंपर धन अर्पण कर देते हैं। भला, वे क्या पुण्य-सञ्चय करके अपना परलोक सुधार सकते हैं? हमारे भोले भाले भाइयोंको दान-

हम ताकत।मंशा लेना और इसपर अमल करना बहुत ही आवश्यक है।

(१६) क्योंकि जलके समान दूसरा जल नहीं है, अपने बल (ताकत) के समान दूसरा बल नही है क्योंकि समय पडनेपर अपना बल ही काम आता है, पराये बलसे कुछ लाभ नही होता आँखोंके समान दूसरा कोई चाँदना करनेवाला नही है और अन्नके समान कोई प्यारी चीज नही है।

(१७) निर्धन मनुष्य 'धन' चाहते है, पशु पक्षी 'बोलना' चाहते है, मनुष्य 'स्वर्ग'की इच्छा रखते है और देवता 'मोक्ष' की वाञ्छा रखते है।

(१८) सत्यके सहारे ही पृथ्वी ठहरी हुई है, सत्य हीके बलसे सूर्य्यनारायण तपते और जगत्का अन्धकार नाश करते है एव सत्य ही से हवा चलती है। मतलब यह है कि सब कुछ सत्य ही से स्थिर है।

(१६) लक्ष्मी चलायमान है यानी वह सदा नही रहती, प्राण, जीवन और मकान वाडी आदि भी सदा नही रहते। तात्पर्य्य यह है कि ससारमे सब कुछ अनित्य है, यदि है तो केवल "धर्म" ही नित्य और निश्चल है।

(२०) पुरुषोंमे 'नाई' चालाक होता है, पक्षियोंमें 'कौआ' सयाना होता है पशुओंमें 'स्यार' [ गीदड ] धूर्त्त होता है और औरतोंमें 'मालिन' मक्कारा होती है।

(२१) जन्म देनेवाला, जनेऊ आदि सोलह सस्कार करा-

नेवाला, विद्या पढानेवाला अन्न देनेवाला और भयसे छुडानेवाला—ये पांचों पिता समझे जाते हैं।

(२२) राजाकी स्त्री, गुरुकी स्त्री, मित्रकी स्त्री, अपनी स्त्रीकी माता (सास), और अपनी जननेवाली माता—ये पांचों माता कहलाती हैं।

## छठा अध्याय।

मनुष्य "शास्त्र" को सुननेसे धर्मको जानता है, मूर्खता छोड़ता है और ज्ञान तथा मुक्ति-पद पाता है।

(२) पक्षियोंमें "कव्वा" चाण्डाल होता है, पशुओंमें "कुत्ता" चाण्डाल होता है, मुनियोंमें "पाप" चाण्डाल होता है और सबमें "निन्दा करनेवाला" चाण्डाल होता है।

(३) कांसीका बरतन राखसे मांजनेपर शुद्ध होजाता है, ताम्बेका बरतन खटाईसे पवित्र होता है, स्त्री मासिक-धर्म होजानेपर शुद्ध होती है और नदी धारकी तेजीसे शुद्ध होती है।

(४) राजा, ब्राह्मण और योगी घूमनेसे सम्मान पाते हैं; परन्तु स्त्री घूमनेसे नष्ट होजाती है यानी बिगड़ जाती है।

(५) जिसके पास धन होता है, उसीके दोस्त और भाई

…और जिसके पास लक्ष्मी होती है, वही पुरुष और वही विद्वान् कहलाता है।

(६) जैसी भावी (होनहार) होती है वैसी ही बुद्धि हो जाती है, वैसे ही उपाय होजाते है और वैसे ही मददगार मिल जाते है।

(७) काल ही सब जीवोंको पचाता है, काल ही सबका नाश करता है और सबके सो जानेपर भी काल ही जागता रहता है। काल ऐसा बलि है कि उसे कोई भी टालनेमें समर्थ नहीं है।

(८) जो जन्मसे ही अन्धे है, उन्हें कुछ नहीं दीखता, जो काम (स्त्री-इच्छा) से अन्धे होरहे है, उन्हें भी कुछ दिखाई नहीं देता, जो नशेसे मतवाले होरहे हैं, उन्हें भी कुछ नहीं सूझता और स्वार्थी (मतलबी) को तो दोष दिखाई ही नहीं देता।

(९) जीव आप ही बुरे-भले कर्म करता है, आप ही अपने किये कर्मोंका फल भोगता है, आप ही ससारमें भ्रमता है और आप ही ससारके बन्धनसे छूटता और मोक्ष पा जाता है।

मतलब यह है कि मनुष्य बिना किसीकी प्रेरणाके आप ही कभी अच्छे कर्म करता है और कभी बुरे कर्म करता है, पीछे आपही उनके अच्छे-बुरे फल—नरक स्वर्ग आदि भोगता है। आप ही ससारके बन्धनमें पड़ता है और आप ही अपने

पुण्य-कर्मों से जन्म-मरणसे रहित होजाता है। जन्म-मरणसे छूट जानेको ही मोक्ष या मुक्ति कहते हैं।

(१०) प्रजाके किये हुए पापको राजा भोगता है। राजाके पापको राज-पुरोहित भोगता है, स्त्रीके किये हुए पापको उसका पति भोगता है और चेलेके किये हुए पापको उसका गुरु भोगता है।

(११) सिरपर कर्ज चढ़ानेवाला पिता शत्रुके समान है, पर-पुरुष रता मन्तारी वैरीके समान है, खूबसूरत स्त्री दुश्मनके समान है और अशिक्षित—मूर्ख—पुत्र भी शत्रुके ही समान है।

(१२) लोभीको धन देकर वशमें करना चाहिये, घमण्डीको हाथ जोड़कर वशमें करना चाहिये, मूर्खको उसके मनके माफिक काम करके वशमें करना चाहिये और विद्वान्को यथार्थ यानी सचसे वशमें करना चाहिये।

(१३) राज्य न रहे तो अच्छा, परन्तु बुरे राजाका राज्य अच्छा नहीं। मित्र न हो तो भला, किन्तु बुरे मित्रको मित्र बनाना भला नहीं। चेला न हो तो कुछ परवा नहीं। लेकिन जिसकी वजहसे अपनी निन्दा हो वैसा चेला न होना ही ठीक है। स्त्री बिना रहना उतना बुरा नहीं, किन्तु दुष्टा, स्त्रीका होना बहुत ही बुरा है।

(१४) खराब राजाके राज्य करनेसे प्रजाको सुख कहाँ मिल सकता है? खराब आदमीको मित्र बनानेसे सुख कैसे

मिल सकता है? खराब स्त्रीके घरमें होनेसे घरमें प्रेम कैसे हो सकता है? खराब चेलेको विद्या पढानेवालेके लिये नेकनामी कैसे मिल सकती है?

( १५ ) शेरसे एक गुण सीखना चाहिये, मुर्गेसे चार गुण सीखने चाहिये, कव्वेसे पाँच, कुत्तेसे छ और गधेसे तीन गुण सीखने चाहिये।

( १६ ) सिंह का स्वभाव है कि वह छोटे अथवा बडे काम को जिस तिस उपायसे किये विना नही रहता, यानी काम चाहे छोटा हो चाहे बडा हो, वह उसे हर उपायसे सिद्ध करता है। सिंह का यह काम प्रशंसा-योग्य है। मनुष्योंको सिंहसे यह गुण लेना उचित है।

( १७ ) चतुर पुरुषको चाहिये कि इन्द्रियोंको वश कर और देश तथा बलको समझ कर "बगुले" के समान अपना कार्य्य साधन करे।

( १८ ) मुर्गा ठीक समय पर जागता है, लडाई के समय तय्यार रहता है, भाई-बन्धुओंको उनका हिस्सा देता है और आप हमला करके भोग करता है,—ये चार गुण मुर्गेमें अच्छे हैं। मनुष्यों को चाहिये कि "मुर्गे" के इन गुणों की नकल करें।

( १९ ) कव्वा छिपकर मैथुन करता है, बहुत धीरज धरता है, समयपर घर हथिया लेता है, हर वक्त सावधान (चौकन्ना)

रहता है और किसीका विश्वास नहीं करता—ये पाँच गुण "काव्वे" से सीखने उचित है।

( २० ) कुत्ता बहुत खानेकी ताकत होते हुए भी थोड़ा सा खाना पाजानेसे सन्तुष्ट हो जाता है, गाढी नींद में सोता हुआ भी चटपट जाग उठता है, अपने मालिक को बहुत चाहता है और समय पर बहादुरी दिखाता है। "कुत्ते"के ये छः गुण अवश्य सीखने चाहिये।

( २१ ) गधा निहायत थक जानेपर भी बोझा ढोने को उद्यत रहता है, गर्मी सर्दीकी परवा नहीं करता और सदा चैन-आनन्दसे फिरता रहता है। "गधे" के ये तीन गुण सीखने उचित है।

( २२ ) जो मनुष्य ऊपर कहे हुए सिंह, बगुले, मुर्गे, काव्वे, कुत्ते और गधेके बीसों गुणोंको सीखकर उनके अनुसार काम करेगा, उसकी सदा सब कामोंमें जय होगी।

---

# सातवाँ अध्याय।

---

बुद्धिमान् को चाहिये कि अपने धनका नाश, अपने मनका दुःख, अपने घरका चरित्र, नीचका वचन और अपना अपमान ( अनादर ) किसीसे भी जाहिर न करे।

( २ ) अन्नके व्योपार, रुपये-पैसे के लेन देन विद्या पढ़ने,

( धन-दौलत आदि ) मिलते देखकर, फूले नहीं समाते, किन्तु दुष्ट लोग दूसरोंको मुसीबत या किसी जंजालमें फंसा हुआ देख कर बाग-बाग हो जाते हैं।

इस ज़मानेमें दूसरोंकी ओवृद्धि देखकर राजी होनेवाले साधु पुरुष विरले ही दिखाई पड़ते हैं, किन्तु पर सम्पत्ति देखकर कुढ़नेवाले शख्स अधिकतासे नजर आते हे। यद्यपि पराई सम्पत्ति देखकर कुढ़नेसे अपनेही स्वास्थ्यको हानि होती है और लाभ की कुछ भी सम्भावना नहीं होती तथापि जिनका स्वभाव ही ऐसा खराब हो गया है, वे अपनी अधम प्रकृतिको छोड़नेमें असमर्थ होते हैं।

पर-सम्पत्ति को बढ़ते देख कर, चित्तमें जो एक प्रकारके अनिर्वचनीय आनन्दका उदय होता है, उसे हम लेखनी द्वारा लिखकर जतानेमें असमर्थ हैं। हमने स्वयं दोनों प्रकारकी प्रकृतियोंका अनुभव किया है।

( १० ) अगर अपना दुश्मन अपनी निस्बत जबरदस्त हो, तो उसकी मरजी माफ़िक़ काम करके उसे अपने क़ब्ज़े में लाना चाहिये, यदि वह अपने से कमजोर हो तो उसे लड़भिड़ कर वशमें करना चाहिये। यदि अपने समान हो तो उसे प्रथम तो नम्रतासे वश करनेका उद्योग करना चाहिये, यदि वह नम्र बर्ताव से क़ाबूमें न आवे तो बलसे वश करना उचित है।

( ११ ) राजा का बल उसकी भुजायें हैं, ब्राह्मण का बल ब्रह्मज्ञान है और स्त्रियोंका बल उनकी सुन्दरता, तरुणाई और लावण्य है।

[illegible] का मतलब यह है, कि जिस राजाके पास [illegible] तीर लगा, उसके सामने कौन शत्रु सिर उठा [illegible]? उसका दाग जिस देश पर होगा, वह अवश्य उसके हाथमें आजायगा। जो ब्राह्मण ब्रह्मको पहचानता होगा, वह क्या न कर सकेगा? प्राचीन कालमें ब्राह्मणोंमें यह बात पाई थी, इसी वजहसे उनका ठौर-ठौर सम्मान होता था। बड़े-बड़े महीपाल उनके चरणोंमें सिर रखना अपना सौभाग्य समझते थे किन्तु आज वह जमाना है कि यह जाति प्रायः बिल्कुल अधोगतिको पहुँच गयी है। अब इस जातिमें वेद-वक्ता ब्रह्मज्ञानी अँगुलियोंपर गिनने-योग्य भी कठिनता से मिलते हैं। इन लोगोंमें आज-कल छल-छिद्र, कपट, जाल-साजी आदिका बाजार गर्म है। स्त्रियोंकी सुन्दरता, तरुणाई और लुनाई पर किसका मन चलायमान नहीं होता? वे अपनी एक नजरमें महा बलवान् अजेय योधा को भी काबूमें कर लेती हैं, तपोबली तपस्वियोंके श्रीमान् खता कर देती हैं, तब साधारण कच्चे दिलवालोंका तो कहना ही क्या है? जो इनके कटाक्ष रूपी बाणोंसे अछूता बच जाता है, हम उसे सच्चा महाबली कहते हैं। ऐसा पुत्र बिरलीही जननी जनती है।

( १२ ) इस संसारमें बिल्कुल सीधा स्वभाव रखनेसे भी खराबी आती है, जैसे जङ्गलमें सीधे-सीधे वृक्षही काटे जाते हैं, किन्तु टेढे वृक्ष छोड़ दिये जाते हैं।

गोस्वामी तुलसीदासजीने बहुतही ठीक कहा है, "टेढ़ जानि शंका सब काहू, वक्र चन्द्रमहि ग्रसहि न राहू", अर्थात् टेढ़े से सब डरते हैं, सीधेसे कोई नहीं डरता जैसे पूर्ण चन्द्र में ग्रहण लगता है, किन्तु अपूर्ण चन्द्रको राहु भी नहीं ग्रसता अतएव, मनुष्योंको बिल्कुलही सीधा स्वभाव न रखना चाहिये।

( १३ ) हंसोंका स्वभाव है कि वे तालाबमें जल रहता है तब तक उसपर बसते हैं और जब वह सूख जाता है तब उसे छोड़कर दूसरी जगह चले जाते हैं और उस तालाबमें फिर जल भर जाता है तब वे फिर उसीका आश्रय लेते हैं। पुरुषों को चाहिये कि हंसोंकी चाल कदापि न चलें।

( १४ ) कमाये हुए धनको खर्च करनेसे धन-रक्षा होती है, जैसे तालाबके अन्दरके पुराने पानीको निकालनेसे तालाब की रक्षा होती है।

( १५ ) जिसके पास धन होता है,उसके बहुतसे मित्र होते हैं, जिसके पास धन होता है, उसके अनेक भाई बन्धु और रिश्तेदार होते हैं, जिसके पास धन होता है, वही मर्द और वही जीता हुआ गिना जाता है।

हमने भी अपनी अवस्थामें खूब देख लिया है कि इस श्लोकका अक्षर-अक्षर सत्य है। धनसेही जगत् है, धन बिना जगत् सूना है। धनहीनको न मा पूछती है न बाप। निर्धन

[illegible] उससे घर्षण करने लग जाती है और उसका [illegible] अनादर और अपमान करती है।

[illegible] जाति-बिरादरी भी नही चाहती और उसके रिश्तेदार भी उससे रिश्ता रखनेमें शरमाते हैं। सच बात तो यह है कि, जिसपर लक्ष्मीकी कृपा होती है, उससे जगत् राजी रहता है, लक्ष्मीवान्‌का जीना ही जीना है। जिनपर लक्ष्मीकी कृपा नही है, वे प्राण धारण करते हुए भी मरे हुए के समान हैं।

(१६) जो दानी है, जो मीठी वाणी बोलते है, जो देवता की पूजा करते हैं और जो ब्राह्मणोंका आदर-सत्कार करते है,—उन्हें स्वर्गीय पुरुष समझना चाहिये। यानी जो पुरुष स्वर्गसे इस मृत्युलोक में आते है,उनमे उपरोक्त चारों चिन्ह पाये जाते है।

(१७) जो अत्यन्त क्रोधी होते है जो मुँहसे कड़वे वचन निकालते है, जो दरिद्र होते है, जो अपने आदमियों से शत्रुता रखते है, जो नीच लोगोंकी सङ्गति करते है और नीच कुलवालोंकी नौकरी करते है,—उन्हें नरक-वासी समझना चाहिये। अर्थात् जो मनुष्य नरक-लोकसे आकर इस दुनियामें जन्म लेते हैं उनमें उपरोक्त लक्षण पाये जाते हैं।

(१८) यदि कोई सिंह की गुफामें चला जाय तो उसे गज-मोती मिलते हैं, किन्तु यदि कोई गीदड़के भिटेमें चला जाय तो उसे बछड़े की दुम और गधेका चमड़ा मिलता है।

(१९) कुत्ते की पूँछ किसी काम की नहीं होती क्योंकि उससे न तो उसका मल द्वार ही ढँका जाता है और न उससे मक्खी-मच्छर ही उड़ाये जा सकते हैं जो मनुष्य विद्याहीन हैं, वे कुत्ते की पूँछके समान व्यर्थ हैं।

(२०) वचन की शुद्धता, मनकी सफाई, इन्द्रियोंका वन्धेज, सब प्राणियों पर दया और पवित्रता,—ये परार्थियों की शुद्धियां हैं।

(२१) खूब विचार कर देख लो कि—जैसे फूलमें गन्ध है, तिलमें तेल है, काठमें आग है, दूधमें घी है और ऊखमें गुड़ है, वैसेही शरीरमें आत्मा है।

---

# आठवाँ अध्याय।

अधम (नीच) मनुष्य धनकी इच्छा करते हैं, मध्यम मनुष्य धन और मान दोनो चाहते हैं, किन्तु उत्तम मनुष्य केवल मानही चाहते हैं। सबब यह है कि उदार हृदय या बड़े मनुष्य 'मान' को समझते हैं।

) ऊख, जल, फल, फूल, मूल, औषधि और पान खाने न दान आदि करना चाहिये।

की [illegible] करने लग जाती है और उसका पीछे पीछे [illegible] अनादर और अपमान करती है।

[illegible]की जाति-बिरादरी भी नहीं चाहती और उसके रिश्तेदार भी उससे रिश्ता रखनेमें शरमाते हैं। सच बात तो यह है कि, जिसपर लक्ष्मीकी कृपा होती है, उससे जगत् राजी रहता है, लक्ष्मीवान्‌का जीना ही जीना है। जिनपर लक्ष्मीकी कृपा नहीं है, वे प्राण धारण करते हुए भी मरे हुए के समान हैं।

( १६ ) जो दानी हैं, जो मीठी वाणी बोलते हैं, जो देवता की पूजा करते हैं और जो ब्राह्मणोंका आदर-सत्कार करते हैं,—उन्हें स्वर्गीय पुरुष समझना चाहिये। यानी जो पुरुष स्वर्गसे इस मृत्युलोक में आते हैं,उनमें उपरोक्त चारों चिन्ह पाये जाते हैं।

( १७ ) जो अत्यन्त क्रोधी होते हैं जो मुँहसे कड़वे वचन निकालते हैं, जो दरिद्र होते हैं, जो अपने आदमियों से शत्रुता रखते हैं, जो नीच लोगोंकी सङ्गति करते हैं और नीच कुलवालोंकी नौकरी करते हैं,—उन्हें नरक-वासी समझना चाहिये। अर्थात् जो मनुष्य नरक-लोकसे आकर इस दुनियामें जन्म लेते हैं, उनमें उपरोक्त लक्षण पाये जाते हैं।

( १८ ) यदि कोई सिंह की गुफामें चला जाय तो उसे गज-मोती मिलते हैं, किन्तु यदि कोई गीदड़के भिटेमें चला जाय तो उसे बछड़े की दुम और गधेका चमड़ा मिलता है।

( १८ ) कुत्तेकी पूँछ किसी काम की नहीं होती, क्योंकि उससे न तो उसका मल द्वार ही ढँका जाता है और न उससे मक्खी-मच्छर ही उड़ाये जा सकते हैं जो मनुष्य विद्याहीन हैं, वे कुत्तेकी पूँछके समान व्यर्थ हैं।

( २० ) वचन की शुद्धता, मनकी सफाई, इन्द्रियोंका बन्धेज, सब प्राणियों पर दया और पवित्रता,—ये परार्थियों की शुद्धियाँ हैं।

( २१ ) खूब विचार कर देख लो कि—जैसे फूलमें गन्ध है, तिलमें तेल है, काठमें आग है, दूधमें घी है और ऊखमें गुड़ है, वैसेही शरीरमें आत्मा है।

---

# आठवाँ अध्याय।

अधम ( नीच ) मनुष्य धनकी इच्छा करते हैं, मध्यम मनुष्य धन और मान दोनों चाहते हैं, किन्तु उत्तम मनुष्य केवल मानही चाहते हैं। इसका सबब यह है कि उदार-हृदय या बड़े मनुष्य 'मान' को ही धन समझते हैं।

( २ ) जल, अन्न, फल,फूल, मूल,औषधि और पान खाने पर भी स्नान-दान आदि करना चाहिये।

( ३ ) दीपक अन्धेरा खाता है और काजल पैदा करता है। मतलब यह है कि जो जैसा अन्न खाता है, उसके सन्तान भी वैसी ही होती है।

( ४ ) हे बुद्धिमान्! गुणवानोंको धन दे, जो गुणी नहीं है, उनको धन मत दे। समुद्र का खारा पानी बादल के मुँह में जाने से मीठा हो जाता है और समस्त भूमण्डल के चराचर जीवोंको जिलाकर फिर करोड़ गुणा होकर समुद्रका समुद्रमें ही चला जाता है।

( ५ ) तेल मालिश कराकर, चिता-धूम लगनेपर, मैथुन करके, हजामत बनवाकर, जो स्नान नहीं करता,—वह स्नान न करने तक चाण्डाल रहता है।

( ६ ) अजीर्ण होनेपर "जल" औषधि है, भोजन पचजाने पर 'जल' बलवर्द्धक है, भोजन करते समय 'जल' अमृत है; किन्तु वही 'जल' भोजनके अन्तमें विषका काम करता है।

( ७ ) क्रिया बिना ज्ञानसे कुछ लाभ नहीं है। अज्ञानी मनुष्य मुर्देके समान है। बिना सेनापतिके सेना नाश हो जाती है और पतिहीना स्त्री नष्ट हो जाती है।

( ८ ) वृद्धावस्थामें 'स्त्री' का मरजाना, भाईके हाथमें 'धन' का चला-जाना और दूसरे के अधीन 'भोजन' मिलना'—ये तीनो बातें मर्दोंके लिये बड़ी ही दुःखदायिनी हैं।

( ९ ) अग्निहोत्र बिना वेद पढ़ना ठीक नहीं होता, दान बिना यज्ञ-हवन वगैर, ठीक नहीं बनते, भाव ( प्रेम ) बिना

सिद्धि नहीं होती, मतलब यह है कि प्रेम ( भाव ) से ही सब कुछ होता है।

( १० ) धातु, लकड़ी और पत्थर-सेवा प्रेम (भाव) से करो। ईश्वर-कृपासे, जैसा भाव (प्रेम) होगा वैसी ही सिद्धि होगी।

( ११ ) देवता न तो लकड़ी में है, न पत्थर या मिट्टीकी मूर्त्तिमें। देवता भावमें है, अतएव भाव (प्रेम) ही सबका कारण है।

( १२ ) 'शान्ति' के समान तप नहीं है, 'सन्तोष' के समान सुख नहीं है, 'तृष्णा' के समान रोग नहीं है और 'दया' से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।

( १३ ) 'क्रोध' यमराज है, 'तृष्णा' वैतरणी नदी है, 'विद्या' कामधेनु गाय है और 'सन्तोष' नन्दन-कानन या इन्द्रका बगीचा है।

( १४ ) गुणसे रूप खिलता है, शील(अच्छे स्वभाव)से कुल शोभा पाता है, सिद्धिसे विद्या शोभायमान लगती है और भोगने से धन शोभा पाता है।

जो गुणहीन हैं, उनकी खूबसूरती फ़िज़ूल है, जो शीलवन्त नहीं है, उनका कुल बुरा है, सिद्धि नहीं है तो विद्या व्यर्थ है और यदि भोगा नहीं जाता तो धनका होना व्यर्थ है।

( १५ ) जमीनके अन्दरका जल शुद्ध होता है, पतिव्रता नारी पवित्र गिनी जाती है दयालु राजा शुद्ध समझा जाता है और सन्तोषी ब्राह्मण पवित्र माना जाता है।

(१६) सन्तोष न रखनेवाला ब्राह्मण बुरा समझा जाता है, सन्तोषी राजा निन्दित माना जाता है। शर्म करनेवाली वेश्या अच्छी नहीं समझी जाती और कुलवती स्त्री बेशर्म (निर्लज्ज) होनेसे बुरी समझी जाती है।

मतलब यह है कि ब्राह्मण सन्तोषी अच्छा, राजा असन्तोषी अच्छा रण्डी बेशर्म अच्छी और कुलीन स्त्री शर्मदार अच्छी।

(१७) यदि कुल बड़ा हो किन्तु उसमें विद्याहीनता हो, तो उस विद्याहीन कुल से मनुष्यों को क्या फायदा पहुँच सकता है? कुल चाहे नीच हो किन्तु उसमें विद्वान् हो, तो उस विद्वान् के कुल का देवता भी आदर करते हैं।

(१८) जगत् में विद्वान् ही की बड़ाई होती है, सब जगह विद्वान् ही का सम्मान होता है, विद्या से ही सब कुछ प्राप्त होता है और सब ठौर विद्या की ही पूजा होती है।

(१९) पुरुष कैसा ही खूबसूरत और जवान क्यों न हो, उसने कैसे ही उच्च कुल में जन्म क्यों न लिया हो, किन्तु यदि वह विद्याहीन (मूर्ख) हो, तो इस भांति अच्छा नहीं लगता, जैसे बिना सुगन्धके ढाक का फूल।

(२०) जो मांस खाते और शराब पीते हैं एवं जो अपढ़ और अज्ञानी हैं,—इन पुरुषरूपी पशुओंके बोझसे पृथ्वी —

(२१) अन्न-हीन यज्ञ राज्यको जलाता है, ...ताओं को जलाता है और दान हीन यज्ञ कराने वाले)को जलाता है, इसवास्ते यज्ञके

# नवाँ अध्याय।



अगर आप इस संसार के बन्धन या जन्म मरण से छुटकारा पाना चाहते हैं, तो विषयों को विष (जहर) के समान समझकर छोड दो और क्षमा सरलता, दया, पवित्रता एव सत्य को अमृत की भांति पीओ

(२) जो नीच मनुष्य, आपस में, एक दूसरे के मर्म को पीडा पहुँचाने वाले वचन कहते हैं, वे इस भाँति नाश हो जायँगे जैसे दीमक के बिमौट में पड कर साँप नाश हो जाता है।

(३) सोने में गन्ध न की, ऊख में फल न लगाये चन्दन में फूल न उपजाये, विद्वान को धनवान् न बनाया और राजाको दीर्घजीवी न किया,—इससे मालूम होता है कि प्राचीन समय में ब्रह्मा को कोई अक्ल देनेवाला न था।

(४) समस्त दवाइयों में "गिलोय" उत्तम है, सब सुखों में "भोजन" प्रधान है, सारी इन्द्रियों में "आँख"मुख्य है और सब अङ्गोंमें "शिर" श्रेष्ठ है।

(५) आस्मान में दूत जा नहीं सकता, न वहाँ की बात ही चल सकती है, न किसीने पहिलेसे कह ही दिया है और न वहाँ के किसीसे मेल-मिलाप ही हो सकता है। ऐसी

[illegible] आकाश-स्थित सूरज और चाँदमें ग्रहण लगने को [illegible] जान जावे, तो उसे विद्वान् किस तरह न कहिये ?

( ६ ) विद्यार्थी ( पढनेवाले ), नौकर, मुसाफिर, भूखा, भयभीत, भण्डारी और दरबान,—यदि ये सात सो रहे हों तो इनको जगा देना उचित है।

( ७ ) सांप, राजा, शेर, बर्रं, बच्चा, पराया कुत्ता और मूर्ख,—यदि ये सात सोते हों तो इनको न जगाना चाहिये।

( ८ ) जिन ब्राह्मणोंने धन कमाने के लिये वेद पढे हैं और जो शूद्रका अन्न भक्षण करते हैं,—वे ब्राह्मण बिना जहर-वाले साँप के समान क्या कर सकते है ?

( ९ ) जिसके गुस्सा होनेसे भय नहीं है और जिसके खुश होनेसे धनकी आमदनी नहीं है, यानी जो नाराज हो-कर सज़ा नही दे सकता और प्रसन्न होकर कोई मिहरबानी नहीं कर सकता,—वह रूठ कर हमारा क्या कर सकता है ?

( १० ) जिस सांप में विष न हो उसे भी अपना फन बढाना चाहिये, क्योंकि खाली ढोंग से भी भय पैदा हो जाता है।

( ११ ) बुद्धिमान्‌को उचित है कि सुबह के वक्त जुआरियों की कथा यानी "महाभारत" पढे या सुने। दोपहर के समय स्त्री-प्रसग यानी "रामायण" पढे और रातके समय चोर की बात यानी "श्रीमद्भागवत" सुने या पढे।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि 'महाभारत में जूआ खेलनेवालों की बहुत कथायें मौजूद हैं, उनके पढने से मनुष्योंको जूएसे नफ़रत हो जाती है। राजा नलको मुसीबत और धर्मराज युधिष्ठिरको बुरी हालत होनेका कारण एक मात्र "जूआ" ही था। उन कथाओं को पढकर कौन जूएकी ओर देखना भी चाहेगा?

रामायण के पढनेसे मालूम हो जाता है कि जो शख्स, एकदम, स्त्रीके वशमें हो जाते हैं वे राजा दशरथ की तरह कष्ट भोगकर प्राण छोडने को लाचार होते हैं और जो पराई स्त्री को चाहते हैं वे रावणको भाँति कुटुम्ब, परिवार, धन-धान्य, और राज पाट सहित पानीके बबूले की भाँति बिलाय जाते हैं।

श्रीकृष्ण महाराजके १६१०८ रानियाँ और पटरानियाँ थी, मगर वे इतनी स्त्रियों के होते हुए भी इन्द्रियोंके वश न हुए। मनुष्यों को महात्मा कृष्णको आदर्श मान कर चलना उचित है। इन्द्रियाँ रातके समय मनुष्यों को अपने वशमें कर लेती हैं। इन्द्रियोंका दमन करनाही पुरुषोंके लिये उत्तम मार्ग है। भागवत में कृष्ण चरित्र खूब लिखा हुआ है, इसवास्ते रातके समय उसके सुननेसे पुरुष इन्द्रियोंके वशीभूत नही होता।

(१२) अपने हाथकी गूँथी हुई माला, अपने ही हाथों से घिसा हुआ चन्दन और निज हाथोंसे लिखा हुआ स्तोत्र,— इन्द्रकी लक्ष्मीका भी नाश कर देते हैं, तब सांसारिक मनुष्यों की क्या गिनती है?

( १३ ) ऊख, तिल, शूद्र, स्त्री, सोना, धरती, चन्दन, दही और पान,—इनका मर्दन (मथन) गुणदायक है।

ऊख के पेरने से खांड, गुड आदि सुन्दर पदार्थ तय्यार होते हैं। तिलों के पेरने से तेल निकलता है, जिससे समारमें उजियाला होता है और सैकडो काम निकलते है। शूद्र ( नीच जाति ) पीटने-कूटने से सीधा बना रहता है। पृथ्वी में हल चलाने से अनाज पैदा होता है, जिससे जगत् के चराचर जीवों का पालन होता है। दहीके मथने से, अमृत-समान पदार्थ, मक्खन और घी निकलते हैं। इसी तरह स्त्री वगैरह के विषयमें समझ लो।

( १४ ) अगर धीरज हो तो कंगाली बुरी नही लगती, अगर कपड़े खराब भी हों, मगर साफ हों तो बुरे नही लगते। अगर अन्न खराब भी हो, मगर गरमगरम हो तो अच्छा लगता है, यदि मनुष्य कुरूप भी हो, लेकिन अच्छे स्वभाव का हो तो वह बुरा नही मालूम होता।

---

# दसवाँ अध्याय।

जिसके पास 'धन' नहीं होता, वह नीचा नही समझा जाता, किन्तु जिसके पास 'विद्या' नही होती वह बेशक नीचा समझा जाता है।

( २ ) आंखोंसे देखकर जमीनपर पांव रखना चाहिये

कपड़ेसे छानकर जल पीना चाहिये, शास्त्रके अनुसार बात निकालनी चाहिये और मनमें विचार करके काम करना चाहिये।

आँखोंसे देखकर जमीनपर पैर रखनेसे मनुष्य, बहुधा कूआ, खाई, खन्दक आदिमें गिरकर प्राण गँवानेसे बच जाता है, एव सर्प आदि ज़हरीले जानवरोंपर भी पैर नहीं पड़ता। आसमानकी तरफ देखते हुए चलनेसे, अकसर आदमीकी जान खतरेमें पड़ जाती है।

पानीमें अनेक प्रकारके कीड़ोंका वास होता है तथा और भी ऐसी अनेक चीज़ें उसमें पड़ जाती है, जो मनुष्योंके प्राणान्त करनेके लिये काफ़ी होती हैं, इसवास्ते पानी हमेशा छानकर पीना उचित है। शायद यही कारण है कि "कपड़ेसे छानकर जल पीनेको" जैनधर्म-वालोंने धर्मका एक अङ्ग बना दिया है, मारवाड़में हर कोई मनुष्य बिना छाने जल नहीं पीता।

व्याकरणके नियमानुसार या शास्त्रोंके नियमानुसार मुँह से बात निकालना सुखदायी है। अशुद्ध या बेक़ायदे बोलनेसे शिक्षित-समाज अप्रसन्न होता है।

मनमें बिना विचारे हुए काम करनेका परिणाम सदा दुःखदायी होता है और विचारकर काम न करनेवाला सदा पछताता और हानियाँ सहता है, अतएव, दिलमें खूब सोच-समझकर किसी काममें पैर देना सुखदायी है।

(३) यदि सुख चाहते हो तो "विद्या" को त्याग दो और यदि विद्या चाहते हो तो "सुख" को तिलाञ्जलि दे दो, क्योंकि सुख चाहनेवालेको विद्या नहीं आ सकती और विद्या चाहनेवालेको सुख नहीं मिल सकता।

(४) कवि लोग क्या नहीं देखते? स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकती? शराबी क्या नहीं बकते? कव्वे क्या नहीं खाते?

कवि लोग सब कुछ देखते हैं। जो उन्होंने देखा नहीं है, उसे भी अपनी कवितामें दिखा देते हैं। ऐसा कोई काम नहीं है, जिसे स्त्रियाँ न कर सकती हों। शराबी अण्ड-बण्ड अनेक तरहकी बातें बका करते हैं और जो गुप्त-से-गुप्त भेद होता है, उसे भी नशेमें प्रकट कर देते हैं। कव्वे मैली-कुचैली, बुरी भली सब भाँतिकी चीज़ें खा जाते हैं।

(५) इस बातका निश्चय है, कि विधाता राजाको फकीर और फकीरको राजा बना देता है, एवं निर्धनको धनवान् और धनवान्को निर्धन कर देता है।

(६) लालचियोंको माँगनेवाला बुरा लगता है। मूर्खों को समझानेवाला बुरा लगता है। पर-पुरुष-रता स्त्रियोंको अपना पति बुरा लगता है और चोरोंको चन्द्रमा बुरा मालूम होता है।

(७) जो न तो विद्वान् हैं, न तपस्वी हैं, न दानी हैं, न शीलवन्त हैं, न गुणवान् हैं, न धर्मात्मा हैं,—वे मनुष्य नहीं

हैं, किन्तु पृथ्वीका बोझा बढ़ाते हुए मनुष्योंके रूपमें हिरन फिरते हैं।

(८) जिनका हृदय सूना है उनको उपदेशसे कुछ लाभ नहीं होता, जैसे मलयाचलपर पैदा होनेवाले बाँस चन्दन नहीं होजाते।

(९) जिसमें स्वाभाविक बुद्धि नहीं होती, उसे शास्त्रोंसे कुछ लाभ नहीं होता, जैसे अन्धेको दर्पणसे कुछ फायदा नहीं होता।

(१०) जिस तरह मल त्याग करनेवाली इन्द्रिय—गुदा—सौ दफ़ा धोनेपर भी पवित्र नहीं होती, उसी तरह दुष्ट आदमीको भला आदमी बनानेका उपाय जगत्‌में नज़र नहीं आता।

(११) महात्माओंकी नाराजीसे मृत्यु होती है, दुश्मनकी नाराजीसे धनका नाश होता है, ब्राह्मणकी नाराजीसे कुलका नाश होता है, किन्तु राजाकी नाराजीसे तो सब कुछ ही नाश होजाता है।

(१२) जिस वनमें बड़े-बड़े हाथी और शेर हों वहाँ रहना और वहाँके पके-पके फल खाना, शीतल पानी पीना, घास पर सो रहना, वृक्षोंकी छालोंके कपड़े पहिनना अच्छा है, किन्तु भाई-बन्धुओंके बीचमें धन हीन होकर जीना अच्छा नहीं है।

(३) यदि सुख चाहते हो तो "विद्या" को त्याग दो और यदि विद्या चाहते हो तो "सुख" को तिलाञ्जलि दे दो, क्योंकि सुख चाहनेवालेको विद्या नहीं आ सकती और विद्या चाहनेवालेको सुख नहीं मिल सकता।

(४) कवि लोग क्या नहीं देखते? स्त्रियाँ क्या नहीं कर सकती? शराबी क्या नहीं बकते? कव्वे क्या नहीं खाते?

कवि लोग सब कुछ देखते हैं। जो उन्होंने देखा नहीं है, उसे भी अपनी कवितामें दिखा देते हैं। ऐसा कोई काम नहीं है, जिसे स्त्रियाँ न कर सकती हों। शराबी अगड़-बगड़ अनेक तरहकी बातें बका करते हैं और जो गुप्त से-गुप्त भेद होता है, उसे भी नशेमें प्रकट कर देते हैं। कव्वे मैली-कुचैली, बुरी भली सब भाँतिकी चीज़ें खा जाते हैं।

(५) इस बातका निश्चय है, कि विधाता राजाको फकीर और फकीरको राजा बना देता है, एवं निर्धनको धनवान् और धनवान्‌को निर्धन कर देता है।

(६) लालचियोंको माँगनेवाला बुरा लगता है। मूर्खोंको समझानेवाला बुरा लगता है। पर-पुरुष-रता स्त्रियोंको अपना पति बुरा लगता है और चोरोंको चन्द्रमा बुरा मालूम होता है।

(७) जो न तो विद्वान् हैं, न तपस्वी हैं, न दानी हैं, ज्ञानवन्त हैं, न गुणवान् हैं, न धर्मात्मा हैं,—वे मनुष्य नहीं

है, किन्तु पृथ्वीका बोझा बढ़ाते हुए मनुष्योंके रूपमें हिरन फिरते हैं।

( ८ ) जिनका हृदय सूना है उनको उपदेशमें कुछ लाभ नहीं होता, जैसे मलयाचलपर पैदा होनेवाले बांस चन्दन नहीं होजाते।

( ९ ) जिसमें स्वाभाविक बुद्धि नहीं होती, उसे शास्त्रोंसे कुछ लाभ नहीं होता, जैसे अन्धेको दर्पणसे कुछ फायदा नहीं होता।

( १० ) जिस तरह मल त्याग करनेवाली इन्द्रिय—गुदा—सौ दफा धोनेपर भी पवित्र नहीं होती, उसी तरह दुष्ट आदमीको भला आदमी बनानेका उपाय जगत्‌में नजर नहीं आता।

( ११ ) महात्माओंकी नाराजीसे मृत्यु होती है, दुश्मनकी नाराजीसे धनका नाश होता है, ब्राह्मणकी नाराजीसे कुलका नाश होता है, किन्तु राजाकी नाराजीसे तो सब कुछ ही नाश होजाता है।

( १२ ) जिस वनमें बड़े-बड़े हाथी और शेर हों वहाँ रहना और वहांके पके-पके फल खाना, शीतल पानी पीना, घास पर सो रहना, वृक्षोंके छालोंके कपड़े पहिनना अच्छा है, किन्तु भाई-बन्धुओंके बीचमें धन हीन होकर जीना अच्छा

( १३ ) लक्ष्मी जिसकी माता है, कृष्ण जिसके पिता हैं, कृष्ण-भक्त जिसके भाई बन्धु हैं,—उसके लिये तीनों लोक स्वदेश ही के समान हैं।

( १४ ) नाना प्रकारके पखेरू रातको एक वृक्षपर बैठते हैं और सवेरा होते ही सबके सब दशों दिशाओंमें उड़ जाते हैं,—इसमें आश्चर्यकी क्या बात है ?

( १५ ) जिसके पास बुद्धि है वही बलवान् है, निर्बुद्धिके पास बल नहीं होता। मदसे मतवाले सिंहको जराथे, किन्तु बुद्धिमान्, स्यारने मार डाला।

( १६ ) यदि भगवान् जगत्के पालनकर्त्ता—विश्वम्भर—कहलाते हैं, तो मुझे अपनी जिन्दगीकी क्या फिक्र है ? यदि वह विश्वम्भर—संसारके पालनेवाले—न होते तो बालककी जीवन-रक्षाके लिये माताके स्तनोंमें दूध क्यों पैदा करते ? इस बातको बारम्बार विचारकर, हे कृष्ण ! मैं सदा-आपके चरण कमलोंकी सेवामें ही लगा रहता हूँ।

( १७ ) यद्यपि मुझे देव-वाणी—संस्कृत—का अधिक ज्ञान है, तथापि मैं दूसरी भाषाओंको भी प्रेम-दृष्टिसे देखता हूँ। क्योंकि स्वर्गमें अमृतके होनेपर भी देवताओंको लालसा स्वर्गीय स्त्रियोंके अधरामृत—होठोंके रस—में रहती है।

( १८ ) चाँवलोंसे दश गुणा बल आटेमें है; आटेसे दश गुणा बल दूधमें है, दूधसे आठ गुणा बल मांसमें है मांससे दश गुणा बल घीमें है।

(१८) साग खानेसे रोग बढ़ते हैं। दूध पीनेसे शरीर बढ़ता है। घी खानेसे वीर्य्य और मास खानेसे मास बढ़ता है।

---

# ग्यारहवाँ अध्याय।

उदारता (फ़ैयाज़ी), मीठा बोलना, धैर्य्य और उचित बातका ज्ञान,—ये चार गुण स्वाभाविक हैं यानी जन्मसे ही होते हैं। अभ्यास करनेसे ये गुण कदापि नहीं आते।

(२) जो अपनी जातिको छोड़कर दूसरी जातिमें मिल जाता है,वह अपने आप इस तरह नाश होजाता है जैसे राजा की अधर्मसे राज्य नाश होजाता है।

(३) हाथी डील डौलमें बड़ा भारी होता है, लेकिन ज़रासे अंकुशके वशमें होजाता है। क्या अंकुश हाथीके समान होता है? दीपकके जलते ही अँधेरा दूर हो जाता है। क्या दीपक अँधेरेके बराबर होता है? बिजलीसे पहाड़ोंका नाश [illegible] क्या बिजली पहाड़ोंके समान होती

मतलब यह है कि, जिसमें तेज रहता है वह छोटा भी बलवान् होता है। मोटा-ताजा और डील-डौलका भारी तेज-रहित होनेपर किसी कामका नहीं होता।

( ४ ) जिनका दिल घरमें फँसा रहता है, उनमें "विद्या" नहीं होती, जो मास खाते हैं, उनमें "दया" नहीं होती, जो धनके लोभी होते हैं, उनमें "सत्य" नहीं होता और जो पर-स्त्रियोंमें आसक्त रहते हैं, उनमें "पवित्रता" नहीं होती।

( ५ ) जिस भांति नीमकी जड़में दूध और घी सींचनेसे नीम मीठा नहीं होता, उसी भाँति दुष्ट आदमी भाँति-भाँति की शिक्षा दी जानेपर भी भला आदमी नहीं होता।

( ६ ) जिसके दिलमें पाप होता है, वही दुष्टात्मा होता है, दुष्टात्मा सौ तीर्थोंमें भी स्नान करनेसे उस भाँति पवित्र—निष्पाप—नहीं होता, जिस भाँति शराबका बरतन जला डालनेपर भी शुद्ध नहीं होता।

( ७ ) जो जिसके गुणोंकी उत्तमता नहीं जानता, वह सदा उसकी निन्दा ही किया करता है। इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है। क्योंकि भीलनी गज-मोतियोंका मूल्य न जाननेके कारण उनको तो फेंक देती है, किन्तु चिरमिटियोंके गहने बना-बनाकर पहनती है।

( ८ ) जो शख्स एक बरस तक रोज रोज बिना बोले-चाले—चुपचाप—भोजन करता है, उसकी हजार करोड़ वर्षोंतक स्वर्गमें पूजा होती है।

(९) विद्या अभ्यास करनेवालेको चाहिये कि स्त्री-इच्छा, क्रोध, लोभ, जीभका स्वाद, बदनका सजाना, खुल-तमाशे बहुत सोना और अति सेवा करना,—इन आठोंको छोड़ दे।

विद्यार्थियोंके हकमें उपरोक्त श्लोक बहुत ही ठीक कहा है। उपरोक्त आठों बातें विद्यार्थियोंके पथमें कण्टक-स्वरूप हैं। जिस विद्यार्थी में उपरोक्त बातें होंगी, वह कभी विद्वान् न हो सकेगा। इसवास्ते जो विद्वान् होना चाहते हैं, उन्हें स्त्री आदि से बिल्कुल ही किनारे रहना चाहिये। स्त्री विद्याभ्यास में पूरी पूरी बाधक होती है। इसी वजह से, प्राचीन समय में, भारतवासी पूर्ण विद्याभ्यास हो जाने पर विवाह करते थे। उस ज़माने में आज-कल की तरह दुधमुँहे बच्चोंका विवाह न होता था। इसका फल यह होता था, कि प्राचीन काल के मनुष्य पूर्ण बलवान्, वीर्य्यवान् और विद्वान् होते थे।

(१०) जो ब्राह्मण सदा वनमें बसता है और बिना जोती हुई ज़मीन के कन्द-मूल और फल फूल खाकर ज़िन्दगी बसर करता है एवं नित्य श्राद्ध करता है,—वह ब्राह्मण ऋषि कहलाता है।

(११) जो ब्राह्मण एक समय ही भोजन करके सन्तुष्ट हो जाता है; सदा पढ़ता और पढ़ाता है, यज्ञ करता और कराता है; दान लेता और देता है, एवं ऋतुकाल की रात्रियों में ही अपनी स्त्री से मैथुन करता है,—वह ब्राह्मण "द्विज" कहलाता है।

(१२) जो ब्राह्मण सांसारिक कर्मों में लगा रहता है, गाय, भैंस आदि पशुओं को पालता है, वाणिज्य, व्यापार और खेती करता है,—वह ब्राह्मण "वैश्य" कहलाता है।

(१३) जो ब्राह्मण लाख, तेल, नील, कुसुम, शहद, घी, शराब और मांस बेचता है,—वह ब्राह्मण "शूद्र" कहलाता है।

(१४) जो पराया काम बिगाड़ता है, दगाबाज़ी करता है, अपने मतलब साधने की फ़िक्र में रहता है, ठगपना करता है, दूसरों को देखकर कुढ़ता है, ऊपर से मीठी-मीठी बातें बनाता है, किन्तु भीतर से कड़वा होता है,—वह ब्राह्मण "बिलाव" कहलाता है।

(१५) जो बावली, कूआ, तालाब, बाग, बगीचा और देव-मन्दिर के नाश करने में भय-रहित होता है यानी निर्भय चित्त से इनका नाश करता है,—वह ब्राह्मण "म्लेच्छ" कहलाता है।

(१६) जो देव-धन और गुरु-धन को हरता है, परस्त्रियों से रमण करता है और सब जीवों में अपना गुज़ारा कर लेता है, वह ब्राह्मण "चाण्डाल" कहलाता है।

(१७) बुद्धिमानों को चाहिये कि सदा धन-धान्य को दान किया करें, किन्तु जमा न करें, क्योंकि दानी होनेके ही से राजा विक्रमादित्य, कर्ण और बलि का नाम आज जगत् में चला आता है। मधुमक्खियाँ बहुत दिनों तक कठिन परिश्रम करके मधु जमा करती हैं। उसे न वे खुद खाती

न दूसरों को देती है, किन्तु जब उनका सञ्चित मधु लोग ले जाते है, तब वे दोनों पैरोंको घिसती हैं यानी हाय हाय करती और पछताती है।

---

# बारहवाँ अध्याय।

जिसके सुन्दर सुखदायी मकान हो, जिसके पुत्र विद्वान् हों, जिसकी स्त्री प्रियवचन बोलनेवाली हो, जिसके पास इच्छानुसार धन हो, जो अपनी स्त्री से रमण करता हो, जिसके नौकर आज्ञापालक हों, जिसके घरमें अतिथि सेवा—मिहमानों की खातिर—होती हो, जिसके यहां भोलानाथ—शिव—की पूजा होती हो जिसके यहां नित्य मीठा अन्न और पानी तय्यार रहता हो, जो सदा साधुजनों की सङ्गति में समय व्यतीत करता हो, उसका ही "गृहस्थाश्रम" धन्य है।

(२) जो दयालु पुरुष अपनी श्रद्धा-अनुसार दुखी ब्राह्मणों को थोड़ा सा भी धन देता है, वह उसे अनन्त होकर मिलता है।

(१२) जो ब्राह्मण सांसारिक कर्मों में लगा रहता है, गाय, भैंस आदि पशुओं को पालता है, वाणिज्य, व्यापार और खेती करता है,—वह ब्राह्मण "वैश्य" कहलाता है।

(१३) जो ब्राह्मण लाख, तेल, नील, कुसुम, शहद, घी, शराब और मांस बेचता है,—वह ब्राह्मण "शूद्र" कहलाता है।

(१४) जो पराया काम बिगाड़ता है, दगाबाज़ी करता है, अपने मतलब साधने की फ़िक्र में रहता है, ठगपना करता है, दूसरों को देखकर कुढ़ता है, ऊपर से मीठी-मीठी बातें बनाता है, किन्तु भीतर से कड़वा होता है,—वह ब्राह्मण "बिलाव" कहलाता है।

(१५) जो बावली, कूआ, तालाब, बाग़, बग़ीचा और देवमन्दिर के नाश करने में भय-रहित होता है यानी निर्भय चित्त से इनका नाश करता है,—वह ब्राह्मण "म्लेच्छ" कहलाता है।

(१६) जो देव-धन और गुरु-धन को हरता है, परस्त्रियों से रमण करता है और सब जीवों में अपना गुज़ारा कर लेता है, वह ब्राह्मण "चाण्डाल" कहलाता है।

(१७) बुद्धिमानों को चाहिये कि सदा धन-धान्य को दान किया करें, किन्तु जमा न करें, क्योंकि दानी होनेके ही का। से राजा विक्रमादित्य, कर्ण और बलि का नाम आज ‹। जगत् में चला आता है। मधुमक्खियाँ बहुत दिनों तक ‹। करके मधु जमा करती हैं। उसे न वे ख़ुद खाती

न दूसरों को देती है, किन्तु जब उनका सञ्चित मधु लोग ले जाते हैं, तब वे दोनों पैरोंको घिसती है यानी हाय हाय करती और पछताती है।

---

# बारहवाँ अध्याय।

जिसके सुन्दर सुखदायी मकान हो, जिसके पुत्र विद्वान् हों, जिसकी स्त्री प्रियवचन बोलनेवाली हो, जिसके पास इच्छानुसार धन हो, जो अपनी स्त्री से रमण करता हो, जिसके नौकर आज्ञापालक हों, जिसके घरमें अतिथि सेवा—मिहमानों की खातिर—होती हो, जिसके यहाँ भोलानाथ—शिव—की पूजा होती हो, जिसके यहाँ नित्य मीठा अन्न और पानी तय्यार रहता हो, जो सदा साधुजनों की सङ्गति में समय व्यतीत करता हो, उसका ही "गृहस्थाश्रम" धन्य है।

(२) जो दयालु पुरुष अपनी ... ब्राह्मणों को थोड़ा सा भी धन देता है, ... अनन्तता है।

न में आता है। इस बातको विचारकर सब ही जीवोंको सन्तोष रखना चाहिये। सुकर्म करने और विद्या एवं धनोपार्जनका उद्योग करना चाहिये, किन्तु अधीर न होना चाहिये। क्योंकि जो कुछ पहिले ही से लिख दिया गया है, वह होकर रहेगा।

(५) महात्माओंमें यह बडी विचित्र बात है कि, जब वे लक्ष्मी हीन होते है, तब तो लक्ष्मीको तिनके के बराबर समझते है और जब उनके पास लक्ष्मी आ जाती है, तब उसके बोझके मारे एकदम नम्र होजाते है।

(६) जिसका किसीके साथ प्रेम होता है, उसीसे उसे भय होता है। प्रेम ही दुःखकी जड है, इसवास्ते प्रेमको छोडकर सुखसे रहना चाहिये।

(७) आनेवाली विपत्तिके रोकनेका उपाय, पहलेसे ही करनेवाला और एकाएक सिरपर आई हुई विपत्तिके नाश करनेकी तदबीर, तत्काल ही, सोचनेवाला,—ये दोनों सुखी रहते हैं और जो शख्स यह सोचता है कि जो होनहार है, वह अवश्य ही होकर रहेगी, वह मारा जाता है।

नीतिकारकी उपरोक्त शिक्षा राई-रत्ती सच है। हमको अपनी जिन्दगीमें इस वचनकी सत्यताकी परीक्षा करनेका दस-बीस बार मौका पडा है। हर बार इस बातको बावन तोले पाव रत्ती पाया है। संसारमें सुख-पूर्वक जीवन बितानेकी इच्छा रखनेवालोंको, हम इस वचनपर सदा ध्यान रखने और

इसके अनुसार चलनेकी सलाह ज़ोरसे देते हैं। आनेवाली विपत्तिके रोकनेका उपाय पहिलेसे ही करनेवाला सदा सुखी रहता है, इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं है।

( ८ ) अगर राजा धर्मात्मा होता है तो प्रजा भी धर्मिष्ठा होती है, यदि राजा पापी होता है तो प्रजा भी पापाचारिणी होती है। प्रजा राजाकी नकल करती है, जैसा राजा होता है वैसी ही प्रजा होती है।

( ९ ) धर्म हीन जीते हुए मनुष्योंको,मैं मुर्देके समान समझता हूँ, किन्तु धर्मयुक्त मरे हुओंको दीर्घजीवी समझता हूँ।

( १० ) धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष,—यही चार मुख्य हैं। जो इन चारोंमेंसे एकका भी अधिकारी नहीं है, उसका जन्म बकरीके गलेके स्तनोंकी नाईं फिजूल है।

( ११ ) दुर्जनोंका स्वभाव होता है कि ये पर-कीर्तिको सहन नहीं कर सकते, बल्कि, जल-जलकर खाक होते हैं। उनके ऐसा करनेका कारण यही मालूम होता है कि, वे कीर्तिमानोंकी पदवी नहीं पा सकते।

( १२ ) विषयोंमें फँसा हुआ "मन" बन्धनका कारण है और विषयोंमें न फँसा हुआ "मन" ही मोक्षका कारण है,इससे प्रतीत होता है कि "मन" ही बन्धन और मुक्तिका कारण है।

( १३ ) जब ब्रह्मप्राप्त होजाता है तब इस कायाका अभिमान नहीं रहता। कायाका अभिमान नाश होनेपर जहाँ-जहाँ मन जाता है वहाँ वहाँ ही समाधि है।

# चौदहवाँ अध्याय।

इस पृथ्वीपर "जल, अन्न और मीठे वचन" ये ही तीन रत्न हैं, किन्तु मूर्ख लोग पत्थरके टुकड़ोंको भी रत्न समझते हैं।

( २ ) जीव जो कुछ बुरे कर्म या अपराध करता है, उसके अपराधरूपी वृक्षमें "दरिद्रता, रोग, दुःख और बन्धन,"—ये चार फल लगते हैं।

मतलब यह है कि, निर्धनता, बीमारी, क्लेश और बन्धन —ये सब जीवके बुरे कामोंके फल हैं। जो जैसा बोता है, वह वैसा ही काटता है।

( ३ ) धन नाश होजानेपर फिर हाथ आ सकता है, मित्रके नाश होजानेसे दूसरा मित्र मिल सकता है, स्त्रीके नाश होजानेसे दूसरी स्त्री फिर आ सकती है और पृथ्वीके अधिकारमेंसे निकल जानेपर वह फिर अधिकारमें आ सकती है, किन्तु यह काया एक बार नाश होनेपर फिर नहीं मिल सकती।

मतलब यह है कि धन, मित्र, स्त्री और पृथ्वी नाश होनेपर फिर भी मिल जाते हैं, किन्तु यह मनुष्य-शरीर नाश हो जानेपर फिर नहीं मिलता। इसीवास्ते बुद्धिमान् और विवेकी

लोग कहा करते हैं कि मनुष्यका चोला बारबार नहीं मिलता। इसलिये बुद्धिमान् और दूरदर्शियोंको चाहिये कि इस दुर्लभ चोलेको पाकर कोई-न कोई ऐसा काम कर डालें, जिससे उनका नाम अमर होजाय और इस आवागमनके बन्धनसे छूटकर मुक्ति या निर्वाण पदको प्राप्त कर सकें। जो काम इस चोलेसे होसकता है वह और चोलोंसे नहीं बन सकता।

(४) एक तिनका मेहको एक बूँदको भी रोकनेमें समर्थ नहीं होता, किन्तु तिनकोंका समूह मेहकी मूसल धाराओंको भी नीचा दिखा देता है, उसी भाँति इस बातका निश्चय है कि, बहुतसे आदमियोंका समूह दुश्मनको, निस्सन्देह, परास्त कर सकता है।

(५) जलमें तेल अपनी शक्तिसे आप ही फैल जाता है, दुष्ट आदमीमें गुप्त बात अपने आप विस्तार पकड़ लेती है, सुपात्रको दिया हुआ दान स्वय बढ़ जाता है और बुद्धिमान्में जो शास्त्र-ज्ञान होता है, वह भी अपनी शक्तिसे अपने आप ही बढ़ता चला जाता है।

(६) धर्म-सम्बन्धी आख्यान (कथा) सुननेके समय, श्मशानमें जानेके समय और रोगियोंकी रोगावस्थामें जो बुद्धि उत्पन्न होती है, अगर वही बुद्धि, सदा, स्थिर बनी रहती, तो किसे इस संसारके बन्धनसे छुटकारा न मिल जाता?

...भोजन और अपने अपमानकी बात,—ये बातें बुद्धिमान्को किसीसे भी न कहनी चाहियें।

(१८) हे मनुष्य! दुर्जनोंकी संगति छोड़, साधुओंकी संगति कर, दिन-रात पुण्य कर और नित्य भगवान्को याद कर, क्योंकि यह जगत् अनित्य और असार है।

---

# पन्द्रहवाँ अध्याय।

जिसका दिल दया के मारे सब जीवों पर पिघल जाता है,—उसे ज्ञान, मोक्ष, जटा और भभूत की क्या ज़रूरत है?

(२) जो गुरु चेले को एक अक्षर भी बताता है, उससे उऋण होने के लिये संसार में ऐसा धन नहीं है, जिसे देकर शिष्य उऋण हो जावे।

(३) दुष्ट आदमी और काँटे से बचने के दो ही उपाय हैं —जूते से मुँह तोड़ना या दूर ही से बच जाना।

(४) जो मैले कपड़े पहिनता है, जो दाँतो को... नहीं करता है, बहुत भोजन करता है ... ...तें म...

निकालता है, सूरज के उदय होने और अस्त होनेके समय सोता रहता है,—वह यदि चक्रधारी विष्णु भी हों, तोभी उसे लक्ष्मी छोड़ देती है।

(५) संसार में कोई किसीका बन्धु नहीं है, धनही सब का बन्धु है, क्योंकि मित्र स्त्री, नौकर और भाई-बन्धु धन-हीन पुरुष को त्याग देते हैं किन्तु यदि वही धन-हीन फिर धनी हो जाता है, तो सबके सब उसके साथ लग लेते हैं।

(६) अन्यायसे कमाया हुआ धन दस बरस तक ठहरता है, ग्यारहवाँ वर्ष लगते ही मूल ( पूँजी ) सहित नाश हो जाता है।

(७) अयोग्य चीज भी योग्य पुरुष में योग्य हो जाती है और योग्य चीज भी नीच पुरुष में अयोग्य हो जाती है। अमृत पीने से राहु की मृत्यु हुई और विष पीने से शङ्कर के गले की सुन्दरता बढ़ गयी।

(८) वही भोजन है, जो ब्राह्मण भोजन करने से बचा हो, वही मित्रता है, जो गैर से की जाती है, वही बुद्धिमानी है, जिसमें पाप नहीं है, वही धर्म है जो बिना कपट के किया जाता है।

(९) मणि पाँव के आगे लोटती है, काँच सिर पर भी रक्खा जाता है; किन्तु बेचने और खरीदनेके समय मणि मणि ही रहती है और काँच काँच ही रहता है।

(१०) शास्त्रोंका अन्त नहीं है और विद्या बहुत है,

..... ..य थोड़ा है और विघ्न बहुत है, इसवास्ते जैसे हंस जलमें से दूध निकाल लेता है, वैसे ही मनुष्यों को सब का सार मात्र ग्रहण कर लेना उचित है।

(११) दूर से आये हुए, रास्ते से थके हुए और बिना मतलब घर पर आये हुए का बिना सत्कार किये हुए जो मनुष्य खाता है,—वह निश्चय ही चाण्डाल गिना जाता है।

(१२) जो चारो वेदोको पढकर और अनेक धर्मशास्त्रों को देख कर भी "आत्मा" को नहीं पहिचानते, वे कलछी के समान है, जो रसो का स्वाद नही जानती।

(१३) अमृतका घर, औषधियोंका स्वामी, अमृत ही के शरीरवाला और शोभायमान चन्द्रमा सूर्य मण्डल में जाकर निस्तेज हो जाता है, इस से प्रतीत होता है कि, पराये घर जाने से कौन नीचा नहीं होता?

(१४) भौंरा जब कमलिनी के फूलोंके बीचमें रहता है, तब उसके फूलों के रस के मदसे उसी में अलसाया हुआ पडा रहता है, किन्तु जब दैववश परदेश में चला जाता है, तब कमलिनी के फूलों के न होनेसे कुटज के फूलों को ही बहुत कुछ समझ लेता है।

(१५) बन्धन तो बहुत तरह के होते है, परन्तु प्रीति की रस्सी का बन्धन और ही होता है, भौंरा लकडी को काट ...है, किन्तु वह कमल-कोष मे, प्रीतिके कारण, शक्ति होते ... कुछ नहीं करता।

(१६) काटा हुआ चन्दन का वृक्ष अपनी सुगन्ध नहीं छोड़ देता, बुड्ढा हाथियों का सरदार भोग-विलास करना नहीं छोड़ देता, कोल्हूमें पेरे जाने पर ऊख अपनी मिठास नहीं छोड़ देता, इसी भांति अच्छे कुलका दरिद्र आदमी भी अपनी कुलीनता, सुशीलता और सुन्दर आचरण आदि सद्गुणों को नहीं छोड़ देता।

(१७) मैं ने संसार-बन्धन से छुटकारा पाने के लिये, ईश्वर के चरण-कमलों का ध्यान न किया, जो 'धर्म' स्वर्ग द्वार के किवाड़ों को तोड़ सकता है, मैंने उसका भी संग्रह न किया; मैंने स्त्री के पीन पयोधरों और जांघों का सुपने में भी आलिङ्गन न किया, इसवास्ते मैं केवल अपनी मांके जवानी-रूप वृक्ष के काटने में कुल्हाड़ी-स्वरूप हुआ।

(१८) स्त्रियाँ एक पुरुष से बात करती हैं, दूसरे को प्रेमभरी दृष्टि से देखती हैं, तीसरे को दिल से चाहती हैं, स्त्रियों का प्रेम एक से नहीं होता।

(१९) जो मूर्ख पुरुष अज्ञान से समझता है कि अमुक स्त्री मुझे प्यार करती है वह उसके अधीन होकर खेल के पक्षी के समान नाचा करता है।

(२०) धन पाकर किसे घमण्ड न हुआ ? किस विषयी पुरुष की मुसीबत दूर हुई ? संसारमें किसके मन को स्त्रियोंने खण्डित नहीं किया ? राजाका प्यारा कौन हुआ ? कौन मौत के वश न हुआ ? किस माँगनेवाले का दर्जा

स , धन, स्त्री और खाने-पीनेसे न कभी सन्तुष्टता हुई और न होगी । अर्थात् वे इन वासनाओंसे तृप्त न होते हुए ही इस प्रकार संसारसे कूँचकर जाते है और करते रहेंगे।

(२९) किये हुए होम, यज्ञ, दान और बलि—ये सब नाश हो जाते हैं, किन्तु जो देने-योग्य मनुष्य है, उसको दिया हुआ दान और प्राणी-मात्र पर दिखाई हुई दया व क्षमा कभी नष्ट नहीं होती ।

( ३० ) तिनका सबसे छोटा होता है, तिनके से रुई हल्की होती है, रुईसे भी हल्का भिक्षा माँगनेवाला होता है, जिसे हवा भी उड़ाकर नहीं ले जाती, क्योंकि वह समझती है कि कहीं भिक्षुक मुझसे भी कुछ न माँग बैठे ।

( ३१ ) जिसका मान भंग हो चुका है अर्थात् जिसकी इज्जतमें बट्टा लग चुका है, उसका जीना वृथा है। मरनेके समय तो पल-भर का ही कष्ट होता है, किन्तु मान भंग होने का कष्ट सदैव दिलमें खटकता रहता है।



# सोलहवाँ अध्याय ।

मीठी बातके बोलनेसे सब प्राणी राज़ी होते हैं, इसलिये कडवे वचन न बोलकर, हमेशा, मीठी बात ही बोलनी चाहिये ।

(२) मीठी और प्यारी लगनेवाली बात तथा अच्छे मनुष्यों का संग,—ये ही संसार-रूपी कडवे वृक्षके अमृत रूपी दो फल हैं ।

( ३ ) मनुष्य इस संसार में जितनी बार जन्म लेता है, यदि उतनी ही बार दान देने, पढने और तपस्या करनेका अभ्यास करता है तो वह संसार में बार बार मनुष्य-देह धारण करता है ।

( ४ ) जो विद्या 'सिर्फ़' किताबमें ही रहती है अर्थात् कण्ठस्थ नहीं की जाती, वह विद्या और वह धन जो पराये हाथमें है, मौक़ा पडने पर न वह विद्या ही किसी काम में आती है और न वह धन ही किसी काम में आता है ।

( ५ ) जिसने केवल पुस्तक के सहारे विद्याभ्यास

दुःख देकर अपनी जीविका उपार्जन करता है,—ये सब दूसरे के दुःखको नहीं जानते।

(१७) किसीने किसी स्त्री से पूछा,—"हे स्त्री। तू नीचे की तरफ़ क्या देखती है? क्या पृथ्वीपर तेरा कुछ गिर पड़ा है?" स्त्रीने उत्तर दिया,—"रे मूर्ख। क्या तू नहीं जानता, कि मेरा तरुणता-रूपी मोती खो गया है?"

(१८) हे केतकी। यद्यपि तेरे समीप अनेक साँप बसते हैं, तू काँटोंसे भी युक्त है, टेढ़ी है, कीचड़से पैदा हुई है और सहज ही में मिल भी नहीं सकती है, तथापि इतने दोष, होते हुए भी एकमात्र सुगन्धके कारणसे सबकी प्यारी होरही है, इससे निश्चय है कि एक भी गुण सब दोषोंको ढक देता है।

(१९) साँपके दाँतोंमें जहर रहता है, मक्खीके सिरमें जहर रहता है, बिच्छूकी पूँछमें जहर रहता है, किन्तु दुर्जन के तो सब शरीरमें ही जहर भरा रहता है।

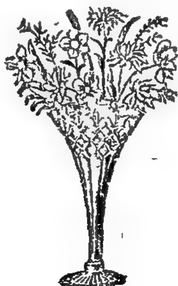
(२०) जो स्त्री बिना अपने पतिकी आज्ञाके व्रत उपवास करती है, वह अपने स्वामीको आयु (उम्र) को नाश करती है और मरनेपर नरकमें जाती है।

(२१) दान देने, सैकड़ों व्रत-उपवास करने और तीर्थाटन करनेसे स्त्री उतनी शुद्ध नहीं होती, जितनी कि अपने पतिके चरणोदक पीनेसे होती है।

जल पीने बाद जो पानी बच जाता है और सन्ध्या कर चुकने पर जो जल शेष रह जाता है, वह कुत्तेके मूत्रके समान होता है, वैसा जल पीकर चान्द्रायण व्रत करना चाहिये।

( २३ ) हाथ कङ्कणसे शोभा नहीं पाता, किन्तु दानसे शोभा पाता है। चन्दनसे शरीर शुद्ध नहीं होता किन्तु स्नानसे होता है। भोजन से तृप्ति नहीं होती, किन्तु सम्मान से होती है। छापा, तिलक इत्यादि भूषणोंसे मुक्ति नहीं होती, किन्तु ज्ञानसे होती है।

( २४ ) जो मनुष्य नाईके घर जाकर बाल बनवाता है, जो पत्थरसे लेकर चन्दनका लेप करता है और जो अपना मुख पानीमें देखता है, वह यदि इन्द्र भी हो तोभी उसको लक्ष्मी छोड़ देती है।



दुःख देकर अपनी जीविका उपार्जन करता है,—ये सब दूसरे के दुःखको नहीं जानते।

(१७) किसीने किसी स्त्री से पूछा,—"हे स्त्री ! तू नीचे की तरफ क्या देखती है ? क्या पृथ्वीपर तेरा कुछ गिर पड़ा है ?" स्त्रीने उत्तर दिया,—"रे मूर्ख ! क्या तू नहीं जानता, कि मेरा तरुणता-रूपी मोती खो गया है ?"

(१८) हे केतकी ! यद्यपि तेरे समीप अनेक साँप बसते हैं, तू काँटोंसे भी युक्त है, टेढ़ी है, कीचड़से पैदा हुई है और सहज ही में मिल भी नहीं सकती है, तथापि इतने दोष होते हुए भी एकमात्र सुगन्धके कारणसे सबको प्यारी होरही है, इससे निश्चय है कि एक भी गुण सब दोषोंको ढक देता है।

(१९) साँपके दाँतोंमें जहर रहता है, मक्खीके सिरमें ज़हर रहता है, बिच्छूकी पूँछमें ज़हर रहता है, किन्तु दुर्जन के तो सब शरीरमें ही जहर भरा रहता है।

(२०) जो स्त्री बिना अपने पतिकी आज्ञाके व्रत उपवास करती है, वह अपने स्वामीकी आयु (उम्र) को नाश करती है और मरनेपर नरकमें जाती है।

(२१) दान देने, सैकड़ों व्रत-उपवास करने और तीर्थाटन करनेसे स्त्री उतनी शुद्ध नहीं होती, जितनी कि अपने पतिके चरणोदक पीनेसे होती है।

(२२) पाँवोंके धोने बाद जो पानी बाकी रह जाता है,

हम हिन्दू लोग ऐसा समझते हैं कि, हम पहले भी कहीं थे और अब वहांसे चोला छोड़कर इस लोकमें जन्मे हैं। इस लोकमें आनेसे पहले हम जहां थे, वहां हमने जैसे बुरे या भले कर्म किये हैं, हमको उनके अनुसार ही फल मिल रहा है और अब जो कुछ बुरे या भले कर्म कर रहे हैं, उनका फल भावी जन्ममें मिलेगा। यानी इस लोकमें इस देहको त्याग कर, जहां जाकर जन्म लेंगे, वहां इस जन्मके सुकृत और दुष्कृत कर्मोंका फल भोगना होगा। हम लोगोंके खयालमें जीव बारम्बार मरता* और जन्म लेता है, केवल मोक्ष होजानेपर उसका जन्म लेने और मरनेका झगड़ा मिटजाता है। अङ्गरेज़ वगैर' पश्चिमीय दुनियाके आदमियोंके खयालमें पुनर्जन्म नहीं होता। किन्तु बात हम हिन्दुओंकी ही ठीक है। अब कुछ पश्चिमी विद्वान् भी पुनर्जन्मपर विश्वास करने लगे हैं और धीरे धीरे उनका विश्वास पक्का होजायगा।

( १३ ) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और म्लेच्छ,—ये सब जन्मसे नहीं होते, किन्तु गुण और कर्मसे होते हैं।

आजकल लोग ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व आदि जन्मसे मानने लग गये हैं, किन्तु प्राचीन कालमें यह बात नहीं थी। पहले

---

* जीव अमर और अविनाशी है। वह बारम्बार काया बदलता है यानी एक चोला छोड़ कर दूसरा चोला पहिनता है। कायाका नाश होता है, किन्तु जीवका नाश नहीं होता। जीवका मरना वैसा ही है, जैसा हमलोगोंका मैले कपड़े उतार फेंक देना और नये पहिनना।

है, तब सांसारिक मनुष्य उसको इज्जत क्यों न करेंगे? धर्मज्ञ राजाको उचित है कि, अच्छे-अच्छे और भयानक दण्डों से प्रजाको धर्म कार्य्यमें लगावे ।

( ८ ) बुद्धिमान् राजाका थोड़ासा भी धन सदा बढ़ता रहता है। सर्प आदि भयानक जीव भी शूरवीरता, नीति बल और धनसे वशमें होजाते हैं।

( ९ ) जो राजा धर्मपूर्व्वक प्रजाका पालन करता है, सब यज्ञ करता है, शत्रुओंको परास्त करता है, तथा दानी, क्षमाशील, वीर और निर्लोभ होता है एवं विषय-भोगोंसे बचता रहता है,—वह सतोगुणी राजा अन्तमें मोक्ष पाता है।

( १० ) जो राजा क्रोधी, निर्दयी, मदोन्मत्त, जीव-हिंसा चाहनेवाला और असत्यवादी होता है, वह तमोगुणी राजा अन्त समय नरकमें जाता है।

( ११ ) जो राजा घमण्डी, लालची, विषयी, ठग, कपटी, झगड़ालू, नीचोंका चाहनेवाला, अपने इच्छानुसार चलनेवाला, नीतिको न जाननेवाला और छली होता है,—वह राजाओंमें नीच समझा जाता है। ऐसे राजाको रजोगुणी कहते हैं। वह अन्तमें स्थावर योनिमें जन्म लेता है।

(१२) इस संसारमें सुख और दुःखका कारण केवल 'कर्म' है। पहले जन्मके किये हुए कर्मको ही "प्रारब्ध" कहते हैं। कर्म जीवके साथ छाया की भाँति रहता है—अर्थात् कर्म क्षण भर भी जीवका सङ्ग नहीं छोड़ता।

(२६) कर्मशील प्राप्तिका कारण प्रत्यक्षमें तो कुछ नज़र नहीं आता, परन्तु इस बातका निश्चय है कि, पूर्व-जन्मके कर्म के अनुसारही फल मिलता है।

(२७) अक्सर देखते हैं, कि मनुष्यको थोड़ा सा कर्म करनेसे भी बड़ा फल मिल जाता है। उसे पूर्वजन्मके कर्मका फल समझना चाहिये। इस जन्मके कर्मसे कुछ भी नहीं हो सकता।

(२८) कोई-कोई कहते हैं कि, इस जन्मके कर्मसेही सब कुछ होता है। तेल और बत्ती सहित चिरागको अगर हवा से न बचाया जाय, तो वह हरगिज़ नहीं जल सकता।

मनुष्यको चाहिये कि प्रारब्धको भूल जावे और पुरुषार्थ पर भरोसा रक्खे। बोल-चालकी भाषामें आज-कल प्रारब्ध को "तकदीर" और पुरुषार्थको "तदबीर" कहते हैं। तकदीर पर भरोसा करना अच्छा नहीं है। कौन जानता है कि, किसकी तक़दीरमें क्या लिखा है। तकदीर भी बिना तदबीर फल नहीं देती। हमारे पास पङ्खा पड़ा रहे, अगर हम उसे हाथमें लेकर न हिलावें तो हमें हवा कभी मिलेगी। भोजन की परोसी हुई थाली हमारे सामने रक्खी रहे, यदि हम हाथ में उठाकर मुँहमें न देंगे, तो भोजन हमारे पेटमें न पहुँ-चेगा। परमात्माने हमलोगोंको हाथ, पैर और बुद्धि वगैर तदबीर करनेके लिये ही दिये हैं। यदि हम ... फ़ा॰

है, वसाही वुद्धि हो जाती है और जैसी होनहार होती है, वैसे ही मददगार मिल जाते हैं।

(२२) जब इस बातका निश्चय है कि, इस जगत्में बुरा या भला सब पहले जन्मके कर्मानुसारही होता है, तब बुरे या भले कामोंके जतानेवाले उपदेशोंसे क्या फ़ायदा होगा?

(२३) बुद्धिमान् और सुचरित्र मनुष्य "पुरुषार्थ" को बडा मानते हैं। कायर—डरपोक—मनुष्य "प्रारब्ध" को बडा मानते हैं। उनके प्रारब्ध—तक़दीर—को बडा माननेका यह कारण है कि, वे लोग पुरुषार्थ करनेमें असमर्थ हैं।

(२४) यह सारा ससार 'पुरुषार्थ' और 'प्रारब्ध' के अधीन है। पहले जन्मके कर्मको 'प्रारब्ध' और इस जन्मके कर्म को 'पुरुषार्थ' कहते हैं। 'एक ही कर्म दो भाँतिका होता है।

(२५) संसारका स्वाभाविक नियम है कि, कमज़ोरको ज़बरदस्त दबा लेता है। कौन कमजोर है और कौन ज़बरदस्त है, यह बात बिना फल मिले मालूम नहीं हो सकती। यदि किसी कार्यके सिद्ध करनेके लिये कोशिश की जाय और वह काम सिद्ध हो जाय, तो कहा जायगा कि 'पुरुषार्थ' प्रबल है। अगर किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करनेके लिये भरपूर कोशिशों पर कोशिशें की जायें, मगर कामयाबी न हो, तो कहा जायगा कि, 'प्रारब्ध' बलवान् है।

की इच्छा करनेवाले राजा इन्द्र, दण्डक्य, नहुष और रावण आदिका अन्तमें नाश हो गया।

(४८) जो मनुष्य स्त्री के वश में नहीं होता, उसीको स्त्री से सुख मिलता है। घरका काम-काज स्त्री बिना नहीं चल सकता।

(४९) जो अत्यन्त मदिरा पान करते हैं, उनकी बुद्धि नाश हो जाती है, अधिक मदिरा नाश की निशानी है, क्योंकि इससे काम और क्रोधकी उत्पत्ति होती है। अत बुद्धिमान् मनुष्यको इस राक्षसोंसे बचनाही उचित है।

शराब भूल कर भी न पीनी चाहिये। शराबखोरी बड़ी खराब है। बहुतेरे मुसल्मान बादशाह और नव्वाब शराब-कबाबमेंही स्वाहा हो गये। प्राचीन कालके क्षत्रिय मदिरा पान करते थे, किन्तु परिमित रूपसे, इसीसे वह लाभ उठाते थे। किन्तु आजकल अनेकानेक ठाकुर बोतलवासिनीके नशेमें चूर रहकर अपनी रियासतोंको मटियामेट कर रहे हैं। जिनको अपने भविष्य जीवनको उन्नत दशा पर पहुँचाना हो वे इसी राक्षसीको अवश्य छोड़ दें।

(५०) राजाको चाहिये कि पर-स्त्री-सङ्गम की इच्छा न करे दूसरे के धन पर मन न डिगावे और प्रजाको दण्ड देनेमें क्रोधको पास न आने दे।

(५१) पर-स्त्रीके सङ्गसे कोई कुटुम्बी नहीं होता, अजा।

एक साथ मिल जायँ, तो प्राणोंके प्राण नाश कर देनेमें क्या शक है?

( ४५ ) जो एकान्त कार्य्यमें कुशल है, मीठे-मीठे वचन बोलती है और जिसके नेत्रोंके कोये लाल हैं,—ऐसी स्त्री किसका मन मोहित नहीं कर लेती? अर्थात् सबहीका मन अपने वशमें कर लेती है।

( ४६ ) जितेन्द्रिय ऋषि-मुनियों को भी स्त्री विषयी बना देती है, तब अजितेन्द्रिय लोग तो उसके सामने कोई चीज़ ही नहीं हैं।

ऊपरकी बात बिल्कुल ठीक है। विश्वामित्र जैसे महा मुनिका मन मेनका नामक स्वर्गीय अप्सराने अपने वशमें कर लिया। उनका तप छुड़ाकर उन्हें विषयी बना दिया, तब सांसारिक माया-मोहमें फँसे हुए अजितेन्द्रिय पुरुषोंकी क्या बात है? स्त्रीमें वह शक्ति है कि, प्रायः पुरुष-मात्रका मन हर लेती है। किन्तु वह पुरुष जो, स्त्रीकी रूप-छटा और माधुरीमें नहीं फँसते हैं, धन्य हैं। अर्जुनको उर्व्वशीने अपने अधीन करनेके अनेक यत्न किये, किन्तु वह वीर पुरुष उसके क़ाबूमें न आया। सूर्पणखा नामक राक्षसीने मायासे मोहिनी-रूप धारण करके लक्ष्मणको वश करना चाहा, किन्तु वह जितेन्द्रिय पुरुष भी उसके वश न हुए। जो स्त्रीके नयन-बाणसे घायल नहीं होते, वह वास्तवमें प्रशंसा-भाजन हैं।

( ४७ ) पर-स्त्रियों पर मन न डिगाना चाहिये, पर-स्त्रियों

की इच्छा करनेवाले राजा इन्द्र, दण्डक, नहुष और रावण आदिका अन्तमें नाश हो हुआ।

(४८) जो मनुष्य स्त्री के वश मे नही होता, उसीको स्त्री से सुख मिलता है। घरका काम-काज स्त्री विना नही चल सकता।

(४९) जो अत्यन्त मदिरा पान करते है, उनकी बुद्धि नाश हो जाती है, अधिक मदिरा नाश की निशानी है, क्योंकि इससे काम और क्रोधकी उत्पत्ति होती है। अत बुद्धिमान् मनुष्यको इस राक्षसीसे बचनाही उचित है।

शराब भूल कर भी न पीनी चाहिये। शराबखोरी बडी खराब है। बहुतेरे मुसल्मान बादशाह और नव्वाब शराब-कबाबमेंही खाक्ता हो गये। प्राचीन कालके क्षत्रिय मदिरा पान करते थे, किन्तु परिमित रूपसे, इसीये वह लाभ उठाते थे। किन्तु आजकल अनेकानेक ठाकुर बोतलवासिनीके नशेमें चूर रहकर अपनी रियासतोको मटियामेट कर रहे है। जिनको अपने भविष्य-जीवनकी उन्नत दशा पर पहुँचाना हो वे इसी राक्षसीको अवश्य छोड दे।

(५०) राजाको चाहिये कि पर-स्त्री-सङ्गम की इच्छा न करे दूसरे के धन पर मन न डिगावे और प्रजाको दण्ड देनेमें क्रोधको पास न आने दे।

(५१) पर-स्त्रीके सङ्गसे कोई कुटुम्बी नहीं होता, प्रजाको

एक साथ मिल जाये, तो प्राणोंको प्राण नाश कर देनेमें, क्या शक है।

(४५) जो एकान्त कार्य्यमें कुशल है, मीठे-मीठे वचन बोलती है और जिनके नेत्रोंके कोये लाल हैं,—ऐसी स्त्री किसका मन मोहित नहीं कर लेती? अर्थात् सबहीका मन अपने वशमें कर लेती है।

(४६) जितेन्द्रिय ऋषि-मुनियों को भी स्त्री विषयी बना देती है, तब अजितेन्द्रिय लोग तो उसके सामने कोई चीज ही नहीं हैं।

ऊपरकी बात बिल्कुल ठीक है। विश्वामित्र जैसे महामुनिका मन मेनका नामक स्वर्गीय अप्सराने अपने वशमें कर लिया। उनका तप छुड़ाकर उन्हें विषयी बना दिया, तब सांसारिक माया-मोहमें फँसे हुए अजितेन्द्रिय पुरुषोंकी क्या बात है? स्त्रीमें वह शक्ति है कि, प्राय पुरुष-मात्रका मन हर लेती है। किन्तु वह पुरुष जो, स्त्रीकी रूप-छटा और माधुरीमें नहीं फँसते हैं, धन्य हैं। अर्जुनको उर्व्वशीने अपने अधीन करनेके अनेक यत्न किये, किन्तु वह वीर पुरुष उसके काबूमें न आया। सूर्पणखा नामक राक्षसीने मायासे मोहिनी-रूप धारण करके लक्ष्मणको वश करना चाहा, किन्तु वह जितेन्द्रिय पुरुष भी उसके वश न हुए। जो स्त्रीके नयन-बाणसे घायल नहीं होते, वह वास्तवमें प्रशंसा-भाजन हैं।

(४७) पर-स्त्रियों पर मन न डिगाना चाहिये, पर-स्त्रियें

मालिकका काम चौगुना करे, अपनी नौकरीसे सन्तुष्ट रहे, कोमल वचन बोले, काममें होशियारी दिखावे। अगर अपना मालिक अन्याय करता हो, तो उसे समझाकर अन्याय-कर्मसे रोके और खुद अन्याय न करे और मालिकको कभी झूठी बातमें सन्देह न करे। अगर स्वामीमें कोई दोष हो, तो उसे दूसरोंको न बतावे। अपने मालिककी स्त्री, पुत्र और भाई-बन्धुओंको अपने मालिकके समान ही समझे। उनकी निन्दा न करे।

(४) नौकरको चाहिये कि, दूसरे नौकरके अधिकार पर मन न डिगावे, इच्छा रहित होकर सदा खुश रहे, मालिक जो कपड़े या जेवर आदि बख्शे, उन्हें मालिकके सामने सदा पहने रहे।

(५) नौकर को उचित है कि, अपनी तनख्वाह देखकर खर्च करे। अगर मालिक कोई बुरा काम करे, तो उसे एकान्तमें समझावे।

(६) जो नौकर दगाबाज़, डरपोक और लोभी होता है, जो सामने बहुत सी चिकनी-चुपड़ी बातें बनाता है, जो शराब और रण्डी वगैर में लिप्त रहता है, जो जुआ खेलता है और रिश्वत लेता है,—वह नौकर अच्छा नहीं होता।

(७) छोटेसे छोटा काम भी बिना मददगारके नहीं चलता ; तो बड़ा भारी राज्य बिना सहायकके कैसे सकता है ?

# दूसरा अध्याय।



जिस भाँति सोनेकी परीक्षा तपाने, कूटने आदिसे की जाती है, उसी तरह नौकरकी परीक्षा उसके काम, उसकी रहन-सहन, उसके गुण-शील और कुल आदिसे करनी चाहिये। परीक्षा करके विश्वासयोग्य नौकर का विश्वास करना चाहिये। नौकरके जातिकुलको देखकर ही विश्वास न कर लेना चाहिये। जितना कर्म, शील और गुणका आदर है, उतना जाति-कुलका नहीं। क्योंकि केवल जाति और कुलसे कोई श्रेष्ठ नहीं समझा जाता।

हमने देखा है कि, एक दफ़ा एक शख़्सने विदेशमें आये हुए और रोटियोंसे मुहताज अपने एक जाति-भाईको बिना जाँचे-समझे नौकर रख लिया। उसके गुण, कर्म और स्वभाव आदिकी ज़रा भी जाँच न की। बहुत लिखनेसे क्या, परिणाम यह हुआ कि, वह नौकर उसका बहुत सा धन चुरा ले गया और उसकी बेहद बदनामी कर गया। अतः नौकरके गुण-शील आदिकी जाँच अवश्य करनी चाहिये।

(२) नौकरको चाहिये कि, शान्त स्वभाव रक्खे और अपने कामसे मालिका काम अधिक करे।

(३) नौकरको उचित है कि, अपने कामकी अपेक्षा

खबर लो और अपनी सामर्थ्यके अनुसार उनके दुःख दूर करने का उद्योग करो।

(७) चींटी-समान छोटे-छोटे जीवोंको भी अपनी ही बराबर समझो। जिस दुश्मनको तुम बुराईके लायक समझते हो, उसके साथ भी भलाई ही करो।

(८) सम्पत्ति और विपत्ति दोनोंके समय, एक समान रहो। अर्थात् सुख-सम्पदामें फूल मत जाओ और दुःख पड़ने के समय एकदम घबरा मत जाओ।

(९) किसीसे ऐसी बात मत कहो कि, अमुक मनुष्य मेरा शत्रु है अथवा मैं अमुक मनुष्यका दुश्मन हूँ। अगर तुम्हारा मालिक कभी तुम्हारा अपमान—अनादर—करे या तुमसे प्रेम न रक्खे, तो दूसरों से यह मत कहते फिरो कि, हमारा मालिक हमको नहीं चाहता और इस तरह हमारी बेइज्जती करता है।

(१०) अगर तुम किसीकी नौकरी करो या किसीकी मातहती—अधीनता—में काम करो, तो अपने स्वामी या अफ़सरका दिल जिस तरह खुश रहे, वैसा ही उद्योग किया करो। मालिक या अफ़सरका दिल हाथमें रखनेमें ही भलाई है।

(११) सुन्दरी स्त्रियाँ मुनियोंका भी मन मोहित कर लेती और उन्हें विषयी बना देती हैं, इसलिये उचित रीतिसे विषयोंका सेवन करो।

(१२) अपनी माता, अपनी बहिन और

# तीसरा अध्याय ।





नुष्यके लिये धर्म बिना सुख नहीं मिलता। अत उसे हमेशा धर्म करना चाहिये। जिस कामनें धर्म, अर्थ और कामका लवलेश न हो, उस कामको कदापि न करना चाहिये।

(२) हमेशा धर्मानुसार काम करो। रोम, नाखून, और मूछें मत रक्खो एवं पैरोंको एकदम साफ़ रक्खो।

(३) सदा स्नान किया करो। खुशबूदार फूलोंकी माला पहिनो। मैले कुचैले मत रहो, साफ़ कपड़े पहिनो।

(४) जब कहीं बाहर जाओ तो बिना जूतों और छातेके मत जाओ। चलते समय अपने आगेकी चार हाथ जमीन पर नजर रक्खो। अगर कहीं रातके समय जानेका काम हो, तो हाथमें लकड़ी और साथमें नौकर लेकर जाओ।

(५) हिंसा, चोरी, बुरे कर्म, चुगली, सख्ती, झूँठ, भेद, द्रोह, चिन्ता और फिजूल बातें—इनको छोड़ दो। इन दसोंके छोड़नेमें ही भलाई है।

(६) जो लोग कङ्गाल हैं, जो किसी रोगसे पीड़ित हैं जो किसी मुसीबतकी वजहसे रञ्जीदा हैं,—उन सबकी

स्त्रियोंको बेकार रखनेसे उन्हें अनेक बुरी-बुरी इच्छाओंके पूर्ण करने या ऐसे खयालातोंमें मग्न रहनेका मौका मिलता है।

हमारी नई रोशनीके जैण्टिलमैन भारतको पश्चिमदेशीय आजादी देना चाहते हैं। अगर बाबू लोग इस कार्यमें सफल मनोरथ हुए, तो भारतका पटड़ा हो हुआ समझिये। चाहे जिसकी बीबीको चाहे जो कोई टमटमों और साइकिलों पर लिये लाबों और जिमखानोंमें दौड़ता फिरेगा। कोर्टशिप और व्यभिचारका बाज़ार और भी गर्म हो जायगा। भारतवासियोंको अपने पूर्व्वपुरुषोंकी रीति-नीति परही चलनेमें भलाई है।

(१४) जो पुरुष अत्यन्त कङ्गाल और रोगी होता है अथवा पर-स्त्री-गामी होता है, उसकी स्त्री उससे सम्बन्ध छोड़ कर दूसरे पुरुषके पास चली जाती है। अत पुरुष को उचित है, कि कपड़े-लत्ते, गहने, जेवर और खाने पीनेके सुन्दर पदार्थों एव मीठी-मीठी बातोंसे स्त्री को प्रसन्न रखे और पर-स्त्री-गमन आदि दुर्व्यसनों को बिल्कुल त्याग दे।

(१५) भुजाओंसे नदीको तैरकर पार न करे। ख़राब सवारी, टूटे-फूटे रथ गाड़ी या नाव पर न चढ़े। बिना भारी जरूरतके दरख्त पर न चढ़े। अपनी नाक न खुजावे और बिना मतलब धरती न खोदे।

(१६) बहुत दिनों तक खट्टी चीजें न खावे, बहुत देर ऊपर की ओर पैर करके न बैठे, रातके समय वृक्ष

के साथ भी एकान्त स्थानमें मत बैठो, क्योंकि इन्द्रियाँ बड़ी प्रबल है। जिस स्त्री के साथ जो रिश्ता हो, उसको उसी रिश्ते के अनुसार पुकारो।

(१२) अपने घरकी स्त्रियोंको गैर मर्दोंके साथ बातचीत मत करने दो। एक मिनिटके लिये भी उन्हें आजादी—स्वतन्त्रता—मत दो। इनको दूसरोंके घरमें हरगिज मत रहने दो और एक पल भी बेकार मत रहने दो, अर्थात् इनके आगे कुछ न कुछ काम अवश्य रख दो।

आचार्य्यने स्त्रियोंके विषयमें जो उपदेश दिया है, वह भारतवर्षीया नारियोंके लिये ही नहीं, किन्तु जगत्-भरकी स्त्रियोंके लिये समुचित है। जबतक भारतवासी इस उपदेश पर चलते थे, तबतक यहाँ व्यभिचारिणी स्त्रियाँ ढूँढनेपर भी बड़ी कठिनता से मिलती थी। हम यह नहीं कहते कि, आप स्त्रियोंको शिक्षा मत दो, उन्हें मूर्खा ही बनाये रखो। अपनी हिन्दू नीति-स्मृति और रामायण आदि भले-भले उपयोगी ग्रन्थ पढाओ, किन्तु नाविल और आशिक-माशूकोंके क़िस्से उनके हाथोंमें मत दो। उनके आगे चक्की-चूल्हा ही मत रख दो, किन्तु उनसे ऐसे काम कराओ, जिससे उनका समय खाली न जाय और लाभ भी हो। चक्की पीसनेमें सीना पिरोना आदि दस्तकारीके काम कराने अच्छे हैं। दिल्ली, मथुरा, लखनऊ आदि नगरोंमें स्त्रियाँ गद्दी-तकियोंपर ... बुटे दो-दो चार-चार रुपये रोज़ पैदा कर लेती हैं

(२४) बुद्धिमान्को स्त्री बालक, रोग, नौकर, जानवर धन, विद्या-अभ्यास और सज्जन-सेवाकी एक क्षण भी उपेक्षा न करनी चाहिये। अर्थात् इनकी तरफ़से लापरवाही न दिखानी चाहिये।

(२५) जिस स्थानका राजा अपने बरखिलाफ़ हो, जहाँ वेद-पाठी धनवान् और वैद्य आचारी हों—उस स्थानमें एक दिन भी न रहना चाहिये।

(२६) जिस राजाके राज्यका काम स्त्री, बालक, अत्यन्त क्रोधी, मूर्ख और साहसी राज कर्मचारी चलाते हों—उस राज्यमें एक दिन भी न ठहरना चाहिये।

(२७) जिस देशका राजा विचारवान् न हो, राज-सभाके सदस्य पक्षपात या तरफ़दारी करते हों, विद्वान् लोग सज्जनोंकी राह पर न चलते हों तथा गवाह झूँठी गवाही देते हों—वहाँ भी बुद्धिमान्को न बसना चाहिये।

(२८) जिस जगह दुष्टा स्त्रियाँ और नीच लोगोंका ज़ोर हो,—उस जगह धन-मान पाने, जीवित रहने और बसनेकी आकांक्षा न करनी चाहिये।

(२९) माता बाल्य-अवस्थामें बच्चेको न पाले, पिता अच्छी तरह विद्याभ्यास न करावे और राजा धन छीन ले, तो इसमें रञ्ज करनेकी कोई बात नहीं है।

(३०) अगर भली भाँति सेवा करने पर भी दोस्त, भाई-बन्धु या राजा नाराज हो, आग लगने या बिजली

(१७) श्मशान भूमिकी छतो, चबूतरे, सूने मकान, चौराहे, देव-मन्दिर, सूने वन और श्मशानमें, दिनके समय भी, न रहे ।

(१८) सूर्य्य को टकटकी लगाकर न देखे । सिर पर बोझ लेकर न चले । बारीक चीजोंको बहुत देर तक न देखे । चमकती हुई, अपवित्र और दिल बिगाड़नेवाली चीजोंको भी बारम्बार न देखे ।

(१९) शामके वक्त भोजन करना, स्त्री-प्रसङ्ग करना, सोना और पढ़ना अनुचित है । शराब तैयार करना, पीना और पिलाना भी उचित नहीं है ।

(२०) बुद्धिमान्‌को चाहिये कि लोक-विरुद्ध और शास्त्र-विरुद्ध काम न करे, हमेशा न्याय-सङ्गत कर्म करे, अन्यायका मनमें भी खयाल न करे ।

(२१) मैंने हजारों पाप किये हैं, इस एक पाप-कर्मसे मेरी क्या हानि होगी,—ऐसा सोचकर पाप न बढ़ावे ; क्योंकि एक-एक बूँदसे घड़ा भर जाता है ।

(२२) मनुष्यको उचित है कि, बड़े लोग जिस धर्मके रास्ते पर चले हैं उसका विचार करे और वेद तथा धर्मशास्त्रमें लिखे हुए कर्मों को करे ।

(२३) अगर राजाके मित्र, पुत्र और गुरु भी चोरी, खून या अन्य पाप-कर्म करें, तो राजा उनको न छिपावे, किन्तु उन्हें अपने राज्यसे निकाल दे ।

काहे और मुँहसे ऐसी बात निकाले, जिसमें अक्षर थोड़े हों किन्तु मतलब बहुत निकले।

(३९) अपने मनकी बात अनजान मनुष्यको न बतावे। दूसरेकी बात खूब सुन-समझकर जवाब दे।

(४०) अगर स्त्री पुरुषमें तकरार हो या बाप बेटेमें झगड़ा हो तो बुद्धिमान् उनकी गवाही न दे। अगर किसी विषय की सलाह करनी हो, तो गुप्त स्थानमें करे और शरणागतको न छोड़े।

(४१) अपने करने योग्य जरूरी कामको सामर्थ्यानुसार करे, आफत पड़ने पर न घबरावे और किसी की झूठी बदनामी न करे।

(४२) मुँहसे अश्लील बात न निकालनी चाहिये और न वृथा बकवाद करनी चाहिये।

(४३) अपनी युक्तियोंसे किसीकी बात न काटनी चाहिये, हरेक बात का जवाब विचार कर देना चाहिये, ऐसे मौक़े पर जल्दी करना ठीक नहीं है।

(४४) बुद्धिमान् को चाहिये, कि दुश्मनके भी गुण ग्रहण करे और गुरुके भी अवगुण त्याग दे।

(४५) मनुष्य पूर्व जन्मके कर्मों से धनवान् और निर्धन होता है, अत किसीसे वैर विरोध न करना चाहिये। सब से मित्र भाव रखनाही भला है।

(४६) मनुष्यको चाहिये कि सदा दूरदर्शी रहे और समय-

अपना घर नाश हो जावे, तो ऐसे मौके पर सोच करनेसे क्या हो सकता है?

(३१) अगर किसी भले आदमीका कहना न मानकर, घमण्डसे, अपनी मतिके अनुसार काम किया जाय और उसका परिणाम खोटा निकल जाय, तो वहां शोक करनेसे क्या फ़ायदा? क्योंकि वैसा तो होना ही था।

(३२) मा, बाप, गुरु, मालिक, भाई, पुत्र और मित्रका, एक पलके लिये भी, विरोध और अनादर न करना चाहिये।

(३३) अपने कुटुम्बियोंके साथ विरोध और स्त्री, बालक, बूढे और मूर्खके साथ झगडा या विवाद न करना चाहिये।

(३४) दूसरेका धर्म ग्रहण न करे। किसीके साथ वैर विरोध न करे, नीच-कर्मी मनुष्यों और स्त्रियोंके साथ एक आसन पर न बैठे।

(३५) जो शख्स अपनी भलाई चाहे, वह निद्रा, जँभाई, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता,—इन छ' दोषोंको छोड दे। क्योंकि ये छ कामको बिगाडनेवाले हैं।

(३६) मनुष्य को चाहिये कि, सदा अपने धर्ममें चित्त रक्खे, पराई स्त्रियोंका ध्यान न करे, तरह-तरहकी अजीब बातें करे और मुँहसे कडवी बात न निकाले।

(३७) किसी चीजके बेचने या खरीदनेमें अपनी कङ्गाली दिखावे और बिना मतलब किसीके घर न जावे।

(३८) किसीके बिना पूछे अपने घरकी बात किसीसे न

कहे और मुँहसे ऐसी बात निकाले, जिसमें अक्षर थोड़े हों किन्तु मतलब बहुत निकले।

(३८) अपने मनकी बात अनजान मनुष्यको न बतावे। दूसरेकी बात खूब सुन-समझकर जवाब दे।

(४०) अगर स्त्री पुरुषमें तकरार हो या बाप बेटेमें झगड़ा हो तो बुद्धिमान् उनकी गवाही न दे। अगर किसी विषय की सलाह करनी हो, तो गुप्त स्थानमें करे और शरणागतको न छोड़े।

(४१) अपने करने योग्य ज़रूरी कामको सामर्थ्यानुसार करे, आफ़त पड़ने पर न घबरावे और किसी की झूठी बदनामी न करे।

(४२) मुँहसे अश्लील बात न निकालनी चाहिये और न वृथा बकवाद करनी चाहिये।

(४३) अपनी युक्तियोंसे किसीकी बात न काटनी चाहिये, हरेक बात का जवाब विचार कर देना चाहिये, ऐसे मौके पर जल्दी करना ठीक नहीं है।

(४४) बुद्धिमान् को चाहिये, कि दुश्मनके भी गुण ग्रहण करे और गुरुके भी अवगुण त्याग दे।

(४५) मनुष्य पूर्व-जन्मके कर्मों से धनवान् और निर्धन होता है, अतः किसीसे वैर विरोध न करना चाहिये। सब से मित्र भाव रखनाही भला है।

(४६) मनुष्यको चाहिये कि सदा दूरदर्शी रहे और समय-

अपना घर नाश हो जावे, तो ऐसे मौके पर सोच करनेसे क्या हो सकता है?

(३१) अगर किसी भले आदमीका कहना न मानकर, घमण्डसे, अपनी मतिके अनुसार काम किया जाय और उसका परिणाम खोटा निकल जाय, तो वहाँ शोक करनेसे क्या फ़ायदा? क्योंकि वैसा तो होना ही था।

(३२) मा, बाप, गुरु, मालिक, भाई, पुत्र और मित्रका, एक पलके लिये भी, विरोध और अनादर न करना चाहिये।

(३३) अपने कुटुम्बियोंके साथ विरोध और स्त्री, बालक, बूढ़े और मूर्खके साथ झगड़ा या विवाद न करना चाहिये।

(३४) दूसरेका धर्म ग्रहण न करे। किसीके साथ वैर विरोध न करे, नीच कर्मी मनुष्यों और स्त्रियोंके साथ एक आसन पर न बैठे।

(३५) जो शख्स अपनी भलाई चाहे, वह निद्रा, जँभाई, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता,—इन छः दोषोंको छोड़ दे। क्योंकि ये छः कामको बिगाड़नेवाले हैं।

(३६) मनुष्य को चाहिये कि, सदा अपने धर्ममें चित्त रक्खे, पराई स्त्रियोंका ध्यान न करे, तरह-तरहकी अजीब बातें कहे और मुँहसे कड़वी बात न निकाले।

(३७) किसी चीजके बेचने या खरीदनेमें अपनी कङ्गाली न दिखावे और बिना मतलब किसीके घर न जावे।

(३८) किसीके बिना पूछे अपने घरकी बात किसीसे न

कहे और मुँहसे ऐसी बात निकाले, जिसमें अक्षर थोड़े हों किन्तु मतलब बहुत निकले।

(३८) अपने मनकी बात अनजान मनुष्यको न बतावे। दूसरेकी बात खूब सुन-समझकर जवाब दे।

(४०) अगर स्त्री पुरुषमें तकरार हो या बाप बेटेमें झगड़ा हो तो बुद्धिमान् उनकी गवाही न दे। अगर किसी विषय की सलाह करनी हो, तो गुप्त स्थानमें करे और शरणागतको न छोड़े।

(४१) अपने करने योग्य जरूरी कामको सामर्थ्यानुसार करे, आफत पड़ने पर न घबरावे और किसी की झूठी बदनामी न करे।

(४२) मुँहसे अश्लील बात न निकालनी चाहिये और न वृथा बकवाद करनी चाहिये।

(४३) अपनी युक्तियोंसे किसीकी बात न काटनी चाहिये। हरेक बात का जवाब विचार कर देना चाहिये, ऐसे मौक़े पर जल्दी करना ठीक नहीं है।

(४४) बुद्धिमान् को चाहिये, कि दुश्मनके भी गुण ग्रहण करे और गुरुके भी अवगुण त्याग दे।

(४५) मनुष्य पूर्व-जन्मके कर्मों से धनवान् और निर्धन होता है, अतः किसीसे वैर विरोध न करना चाहिये। सब से मित्र भाव रखनाही भला है।

(४६) मनुष्यको चाहिये कि सदा दूरदर्शी रहे और समय-

समय पर हाजिर-जवाबी भी किया करें। किसी कामर्मे जल्दी या देर न करे तथा आलस्य को त्यागे।

(४७) सुस्त आदमी, कामके समय भी, काम का उद्योग नहीं करता। ऐसे आदमीका कोई काम नहीं बनता और वह कुटुम्ब-सहित नाश हो जाता है।

(४८) जो मनुष्य किसी कामका परिणाम बिना समझे बूझेही काम का आरम्भ कर देता है, उस आदमी को साहसी कहते हैं। साहस और जल्दबाजीसे काम शुरू करनेवालेको अन्तमें, दुःखही भोगना पडता है।

(४९) जो मनुष्य छोटेसे काम को बडी देरमें करता है, वह पीछे थोडासा फल पानेसे दुःखी होता है, इसलिये मनुष्य को दीर्घदर्शी होना चाहिये।

(५०) बाज वक्त जल्दबाजीसे किये हुए काम का भी फल अधिक मिल जाता है और कभी-कभी अच्छी भाँति किये हुए काम का फल मिलता ही नही, तथापि बुद्धिमान्को किसी कामर्मे जल्दी न करनी चाहिये, क्योंकि जल्दबाजी का काम दुःखदायी होता है।

(५१) जिस कामको नौकर, स्त्री और भाई नही कर सकते,—उसको मित्र निस्सन्देह कर सकता है। इसवास्ते मित्र-प्राप्तिके लिये उद्योग करना चाहिये।

(५२) जिसका अपने मनमें पक्का विश्वास हो, उसका भी ... भरोसा न करना चाहिये। अपने पुत्र, स्त्री, भाई,

मन्त्री और अधिकारी का भी भरोसा न करना चाहिये क्योंकि धन, स्त्री और राज्य का लालच सबसे जियादा होता है।

(५३) बुद्धिमान को नीतिज्ञ, धर्मात्मा और बलवान पुरुष के साथ मित्रता करनी चाहिये, अर्थात् नीति के न जाननेवाले, अधर्मी और निर्बल के साथ कदापि दोस्ती न करनी चाहिये।

(५४) किसीको कडवी बात कहना और कड़ी सज़ा देना अनुचित है। क्योंकि कडवी बात और सख़्त सज़ासे स्त्री और पुत्र भी घृणा करने लगते हैं, किन्तु दान देने और मीठा बोलनेसे जानवर भी अधीन हो जाते हैं।

(५५) विद्या, बहादुरी, धन, कुल और बल पर कभी न फूलना चाहिये, अर्थात् इनका अत्यन्त घमण्ड न करना चाहिये।

(५६) जिसे विद्याका अभिमान होता है, वह अपने ...लबके लिये बड़ोंके उपदेश को भी नहीं मानता और ...नी हानिकारी बातों को लाभकारी समझता है।

(५७) जिसे शूरवीरता—बहादुरी—का घमण्ड होता है, ...चाहे जिससे लड़ बैठता है और शीघ्रही मारा जाता है।

(५८) जिसे धनका मद होता है, वह अपनी बदनामी की ह... । वह अपनी बुरी बात को

दबाता है, जिस तरह बकरा अपने पेशाब की बदबू को अपने ही पेशाबसे सींच-सींच कर दबाना चाहता है।

(५८) जिसे अपने बड़े कुल का अभिमान होता है, वह विद्या-अभिमानी एव धन-मत्त प्रभृति सब का अनादर करता है और बुरे काम करता है,

(६०) बलका मतवाला पुरुष चटपट लड़ बैठता है और अपने बलसे सब को दु ख देता है।

(६१) मानसे उन्मत्त पुरुष समस्त जगत्को तिनकेके समान समझता है और सबसे नीचा होने पर भी, सबसे ऊँची जगह बैठना चाहता है।

(६२) घमण्डी लोग बल और धन आदिसे इतरा जाते हैं, किन्तु सज्जन पुरुष इनको पाकर नव जाते हैं।

(६३) विद्वान्को ज्ञानी और नम्र होना उचित है। धनवानको यज्ञ और दान करना चाहिये। बलवान को भले आदमियों की रक्षा करनी चाहिये। शूरवीर को दुश्मनको लिये नीचा दिखाना और उससे कर लेना चाहिये। उत्तम कुलवाले को शान्त स्वभाव, नम्र और जितेन्द्रिय होना चाहिये। जो प्रतिष्ठित पुरुष हैं, उन्हें सबको अपने बराबर समझना चाहिये।

(६४) जिसे अपना काम बनाना हो, वह मान-प्रतिष्ठा को एक ओर रखकर, नीच कुलसे भी उत्तम विद्या, उत्तम स्त्री, मन्त्र और वैद्य-विद्या को ले लेवे।

(६५) बुद्धिमानको चाहिये कि जो चीज़ नाश हो गयी हो उसकी चिन्ता न करे और मिली हुई चीजको यतमें रखे।

(६६) बालक और स्त्री का न तो अत्यन्त लाड ही करना चाहिये और न उन्हें सख्त सजाही देनी चाहिये। बालक को विद्या-अभ्यास और स्त्री को घरके काम-काजमें लगाना चाहिये।

(६७) किसी का तुच्छ और थोड़ासा धन भी बिना दिये न लेना चाहिये, किसीके पाप-कर्म की बात अपने मुँहसे न कहनी चाहिये, स्त्री को दोष न लगाना चाहिये, झूठी गवाही न देनी चाहिये तथा जान बूझ और देखकर गवाही देनेसे इँकार न करना चाहिये।

( ६८ ) यदि प्राण नाश होता हो या कोई बड़ा भारी कार्य्य सिद्ध करना हो, तो झूठ बोलनेमें दोष नहीं है।

( ६९ ) कन्यादान करनेवाले को यह न कहना चाहिए कि, जिसके यहाँ तुम अपनी कन्या देते हो वह निर्धन है चोरी करनेवाले को यह न बताना चाहिये कि अमुक मनुष्य धनवान है, जीव-हिंसा करनेवाले को, जान बचा कर छिपा हुआ जीव न बताना चाहिये।

( ७० ) स्त्री पुरुष, दो भाई, दो बहिन, दो मित्र, गुरु और चेले तथा मालिक और नौकरमें फूट न करानी चाहिये। आपसमें बात-चीत करते हुए या एक जगह बैठे हुए दो पुरुषों के बीचमें न जाना चाहिये।

( ८३ ) धन हो या न हो, किन्तु माता-पिताके कुलका और मित्र तथा स्त्रीके कुलका एवं दास-दासियोंका पालन अवश्य करना चाहिये ।

( ८४ ) लँगड़े, लूले, अन्धे और संन्यासी तथा निर्धनों एवं अनाथों का पालन करना चाहिये ।

(८५) जो मनुष्य अपने कुटुम्ब का पालन नहीं कर सकता, उसके समस्त गुणोंसे क्या फ़ायदा ? वह मनुष्य तो जीता हुआ ही मरे हुए के समान है ।

( ८६ ) जिसने कुटुम्ब का पालन नहीं किया, दुश्मनों का सिर नीचा नहीं किया, मिली हुई चीज़ की रक्षा नहीं की,—ऐसे मनुष्योंके जीनेसे क्या लाभ है ?

( ८७ ) जो मनुष्य स्त्रियोंके अधीन है, हमेशा ऋणभारसे दबे रहते हैं, दरिद्र, भिखारी, और गुण-हीन हैं तथा दुश्मनों से दबे हुए हैं, उन जीवित मनुष्योंको मृतक—मुर्दा—समझना चाहिये ।

( ८८ ) बुद्धिमान को अपनी उम्र, दौलत, घरका दोष, सलाह, मैथुन, दवा, दान, मान, अपमान,—इन नौ बातों को अच्छी तरह गुप्त रखना चाहिये । अर्थात् ये बातें किसीसे न कहनी चाहियें ।

( ८९ ) बुद्धिमान को देश-देश की सफ़र करनी चाहिये, [illegible] या कचहरियोंमें जाना चाहिये, अनेक प्रकारकी

शास्त्र या ग्रन्थ देखने चाहिये, वेश्या ओंसे मुलाक़ात और विद्वानो से दोस्ती करनी चाहिये।

( ८० ) किस देशमें कौन मत है, कैसी चीज़े मिलती हैं, क्या पैदा होता है, कैसे जानवर हैं, कैसे मनुष्य हैं और वहाँ की रीति नीति कैसी है,—ऐसी-ऐसी बातें देश-देशकी यात्रा करनेसेही मालूम होती हैं।

( ८१ ) कौन झूठ बोलनेवाला और कौन सच बोलनेवाला है, लोग शास्त्र और लोक-रीति पर चलते हैं या नहीं, कैसा कानून और राज-नियम है,—इत्यादि बातें राज-सभा या कचहरियोंमें जानेसे मालूम होती हैं।

( ८२ ) शास्त्रोंके देखने, पढने और विचारनेसे मनुष्य अहङ्कारी और धर्मान्ध नहीं होता। किसी एक शास्त्रके ज्ञान लेनेसे मनुष्य सब विषयोंमें पण्डित नहीं हो जाता। किसी एक शास्त्रसेही किसी विषयका निर्णय भी नहीं हो जाता, अत मनुष्यको अनेक प्रकारके शास्त्र और ग्रन्थ देखने और मनन करने चाहियें।

( ८३ ) वेश्याके यहाँ जाकर यह बात सीखनी चाहिये कि, वह किस-किस ढँग और चतुराईसे पैसा घसीटती और आप पुरुषोंके अधीन न होकर, उनको अपने वशीभूत कर लेती है। वेश्यासे यह चतुराई सीखकर, पुरुष को किसीके वश न होना चाहिये, किन्तु जगत् को अपने अधीन करना चाहिये।

किसी ज़मानेमें यहाँके धनी-मानी लोग अपने बालकों को वेश्याओंके घर शिक्षा लाभ करनेको भेजा करते थे। वहाँसे लड़के रण्डियों की चालाकियाँ, मनुष्योंके वश करनेकी तरकीबें और तमीज़—तहज़ीबसे रुपया पैदा करनेका ढँग सीख आते थे। जिस समय इस देशमें ऐसी रीति थी, लड़के वहाँ जाकर गुण सीखते थे, अवगुण नहीं सीखते थे। आजकल न वैसी वेश्यायेंही हैं, जो भले आदमियोंके लड़कोंको खराब न करें और न वैसे धर्म-नीतिके जाननेवाले लड़केही हैं, जो काजल की कोठरीमें जाकर बेदाग चले आवें। अतः यह चाल उत्तम होने पर भी, समयको देखते हुए, आजकल, हमारी तुच्छ राय में, ठीक नहीं मालूम होती। अब तो लड़कों को इन दुष्टा काली नागिनोंसे दूरही रखना चाहिये। हमारे पास सैकड़ों बारह-बारह चौदह चौदह वर्षके बालक गर्मी या सोज़ाकमें सड़ते हुए आते हैं। सो भी यह हालत लुक-छिप कर होती है। अगर वह लोग माता-पिता की आज्ञासे खुले-खज़ाने वेश्याओंके घर जाने लगें, तब तो पटड़ा ही हो जावे।

(८४) पण्डितोंके साथ मित्रता करने और उनकी सुहबत करनेसे वेद, पुराण और धर्म-शास्त्रका अच्छा ज्ञान होता है एवं खूब अक़ल बढ़ती है।

देशाटन करना, राज-सभामें जाना, अनेक प्रकारके ग्रन्थ देखना, वेश्याओंसे परिचय करना और पण्डितोंसे मित्रता करना—ये पाँचों तरकीबें चतुराई की जड़ हैं, अतः चतुराई

सीखने के इच्छुकोंको इन पांचो बातों पर चलना चाहिये। किन्तु आजकलके जमानेमें वेश्याके संसर्गसे बिल्कुल बचना चाहिए, क्योंकि इस समयके लोग अल्प-वीर्य होनेसे चञ्चलमति होते हैं।

(९५) अगर अपने रास्तेमें, सामनेही, गुरु बलवान पुरुष, रोगी, मुर्दा, राजा, कठिन व्रत करनेवाला और सवारी पर चढा हुआ मनुष्य आजाय, तो आपको हट जाना और रास्ता छोड देना चाहिये।

(९६) गाडीसे पाँच हाथ, घोडेसे दस हाथ, हाथीसे सौ हाथ और बैल से भी दस हाथ दूर रहना चाहिये।

(९७) सींगवाले, नाखूनवाले, डाढवाले जानवरों और दुष्टों का विश्वास न करना चाहिये, इनके सिवा नदी तटके वास स्थान और स्त्री का भी भरोसा न करना चाहिये।

(९८) खाते हुए रस्तेमें न चलना चाहिये, हँस कर बात न करनी चाहिये, खोई हुई या नाश हुई चीज का रञ्ज न करना चाहिये और अपने किये हुए काम की तारीफ न करनी चाहिये।

(९९) जिसकी तरफ़से कुछ वहम हो उसके पास न रहना चाहिये, नीच मनुष्य को नौकरी छोड देनी चाहिये और किसी की बात छिप कर न सुननी चाहिये।

(१००) राजाको मित्र समझ कर मन चाहे काम न करने चाहिये, बेवक़ूफ़ आदमी को अपना मालिक न बनाना चाहिये, किन्तु महात्माओं की सेवा करनी चाहिये।

( १०१ ) जो मनुष्य कुछ थोडासा ज्ञान रखते हैं, उनसे न तो प्रीति करनी चाहिये और न वैर ही करना चाहिये।

( १०२ ) मुहव्वत रखने, पास वसने, तारीफ करने, प्रणाम राम राम आदि करने, खिदमत करने, चालाकी, होशियारी, आदर-सम्मान, नम्रता, बहादुरी, विद्या और दान से तथा सामने आते देख कर मान देने, आनेवालेके सामने जाने, हंस कर वातचीत करने और भलाई करनेसे संसारको, अपने वशमें करना चाहिये ।

सीखने के इच्छुकोंको इन पांचों बातों पर चलना चाहिये। किन्तु आजकलके जमानेमें वेश्याके संसर्गसे विचल बचना चाहिए, क्योंकि इस समयके लोग अल्प वीर्य वाले अल्पमति होते हैं।

(९५) अगर अपने रास्तेमें, सामनेसे, गुरु बलवान पुरुष, रोगी, मुर्दा, राजा, कठिन व्रत करनेवाला और सवारी पर चढा हुआ मनुष्य आजाय, तो आपको हट जाना और रास्ता छोड देना चाहिये।

(९६) गाडीसे पांच हाथ, घोडेसे दस हाथ, हाथीसे सौ हाथ और बैल से भी दस हाथ दूर रहना चाहिये।

(९७) सींगवाले, नाखूनवाले, डाढवाले जानवरों और दुष्टों का विश्वास न करना चाहिये, इनके सिवा नदी तटके वास स्थान और स्त्री का भी भरोसा न करना चाहिये।

(९८) खाते हुए रस्तेमें न चलना चाहिये, हँस कर बात न करनी चाहिये, खोई हुई या नाश हुई चीज का रञ्ज न करना चाहिये और अपने किये हुए काम की तारीफ न करनी चाहिये।

(९९) जिसकी तरफसे कुछ वहम हो उसके राजा ... से फटे ... रहना चाहिये, नीच मनुष्य को नौकरी छोड देनी चा... हों भारी, किसी की बात छिप कर न सुननी चाहिये।

(१००) राजाको मित्र समझ कर मन चा... चाहिये, बेवकूफ आदमी को अपना स... चाहिये, किन्तु महात्माओं की सेवा कर...

( ११५ ) जिसके साथ अपनी कन्या की शादी करनी हो, उसका धन, बल, रूप, शील, स्वभाव, विद्या और उम्र देखनी चाहिये। अगर वर गरीब या धनहीन हो तो चिन्ता नहीं, किन्तु विद्वान् और खूबसूरत अवश्य होना चाहिये।

( ११६ ) वर की उम्र, सुन्दरता और दौलत ही न देखनी चाहिये, किन्तु पहिले उसके कुल की जाँच करनी चाहिये, फिर क्रमश विद्या, अवस्था, स्वभाव, धन, उम्र और खूबसूरतीकी परीक्षा करनी चाहिये। जो वर इन परीक्षाओं में ठीक निकले, उसके साथ अपनी कन्याकी शादी कर देनी चाहिये। क्योंकि कन्या सुन्दरता चाहती है, माता धन चाहती है, बाप विद्या चाहता है, रिश्तेदार कुलको चाहते हैं और बराती मिठाई खाना चाहते हैं।

आजकलके अधिकांश लोग न रूप को देखते हैं, न विद्या, शील और अवस्था आदिको। वे देखते हैं, केवल धनको। वर कुरूप हो, काना हो, मूर्ख हो, जुआरी हो, रण्डीबाज़ हो, तो परवा नहीं, किन्तु होना चाहिये धनवान। ज्ञातियोंके लोग तो धनके लोभमें पड़कर, अपनी कन्

धन न होनेपर भी,धनवान हो जाते हैं और अपना स्त्रीको सुख देते हैं। रोगी और चढ़ी अवस्थाके मनुष्यको कन्या देना अपनी आत्मजा—कन्या—को जीते जी कुएं में डालना है। जो माता पिता या भाई इन सब बातोंका भली भाँति विचार किये बिना, जिस-तिस को कन्या दे देते हैं वे ईश्वर के दरबार में जवाबदिह होते हैं। हमने कितने ही पापियों को धन-लोभ से कन्या बिक्री करते और मनमाना धन लेते देखा है; किन्तु किसीको फलते-फूलते और सुख पाते नहीं देखा। ऐसा नीच कर्म करनेवाले कितने ही ऐसे आदमी देखे, जिन के कुलमें नाम लेनेवाला और पानी देनेवाला न रहा।

(११७) विवाह करनेवालेको ऐसी कन्यासे विवाह करना चाहिये, जो अपने गोत्र या परिवार की न हो, उसके भाई हो, कुल अच्छा हो तथा योनि-दोष न हो।

(११८) क्षण-क्षणमें विद्या और थोड़ा-थोड़ा धन भी इकट्ठा करना चाहिये। विद्या चाहनेवालेको तो एक एक पल भी न खोना चाहिये और धनार्थीको एक-एक कण न गँवाना चाहिये।

(११९) स्त्री, पुत्र और दानके लिये धन संग्रह करना उचित है। धन समयपड़े पर रक्षा करता है, अत धनको खूब अच्छी तरह बचाकर रखना चाहिये।

(१२०) बुद्धिमानको यह सोचकर, कि मैं सौ बरस तक जीऊँगा और धन दौलतसे सुख-भोग करूँगा, धन और विद्या का सदा सयत्न करना चाहिये।

(१२१) पचीस वरस तक, साढे बारह वरस तक तथा लगा ५ वरस तक बुद्धि-अनुसार विद्या पढ़नी चाहिये; विद्या-रूपी धन सब धनोंकी जड है।

(१२२) विद्या-रूपी धन, दान करनेसे सदा बढता रहता है अर्थात् और धनोंकी तरह यह धन देनेसे घटता नहीं, किन्तु उलटा बढता है। विद्यामें बोझ नहीं होता, न कोई इसे चुरा सकता है और न छीन सकता है।

(१२३) धनवान मनुष्यके पास जब तक धन रहता है, तब तक सब उसकी सेवा-टहल करते हैं, अगर गुणी पुरुष भी धनवान न हो, तो स्त्री पुत्र आदि उसे छोड देते हैं। तात्पर्य्य यह है कि, सांसारिक व्यवहार चलानेके लिये धन ही मुख्य चीज है।

(१२४) क्योंकि संसारमें धनही सार है, इसलिये मनुष्यको अच्छी-अच्छी तरकीबों और साहससे धनपैदा करना चाहिये।

(१२५) उत्तम विद्या द्वारा, अच्छी नौकरी करके, बड़ाई दुरीके काम करके, खेती करके, लेनदेन, वाणिज्य-व्यापार और ब्याज पर रुपया देकर या जो उपाय अपनेसे हो सके उससे धन पैदा करने और बढानेका उद्योग करना चाहिये।

(१२६) धनवानके दरवाजे पर गुणवान् चाकरके समान रहते हैं। धनवानके दोषोंको भी लोग गुण समझते हैं, धनहीनके गुणोंको भी दोष समझते हैं। निर्धन कोई निन्दा करते हैं।

(१२७) धनको ऐसी तरकीबसे रखना चाहिये कि, कोई यह न जान सके कि, इसके पास इतना धन है और वह अमुक स्थानमें रक्खा है।

(१२८) सूदके लालचसे धन ऐसी जगह न देना चाहिये, जहाँ ब्याज तो ब्याज मूल-धन भी नाश हो जावे। खाने-पीने और लेन देन तथा व्यवहारमें जो शर्म छोड़कर काम करता है, वही सुख पाता है।

(१२९) जिस समय किसी को धन दिया जाता है, तब तो गाढ़ी मित्रता होती है, किन्तु जब उससे लौटानेको बात कही जाती है अथवा दिया हुआ धन वापिस माँगा जाता है, तब दुश्मनी होती है।

(१३०) मनुष्यको चाहिये कि, दिलके अन्दर उदारता और बाहर कञ्जूसी रखकर मौक़े पर मुनासिब खर्च करे और अपनी सामर्थ्य-अनुसार अच्छे स्त्री, पुत्र और मित्रोंकी धनसे रक्षा करे।

(१३१) अपना शरीर फिर नहीं होता, किन्तु स्त्री पुत्र और मित्र आदि फिर भी हो जाते हैं, इसलिये इन सबसे अपनी रक्षा करे, क्योंकि अगर मनुष्य ज़िन्दा रहेगा, तो सैकड़ों तमाशे देखेगा।

(१३२) जिसके साथ गाढ़ी मित्रता करनी हो उससे धन मत माँगो। उसकी नामौजूदगीमें उसके ज़नानखाने में न जाओ। उसकी स्त्री से बातचीत मत करो। उसके दोषोंको मत देखो और उसके विरुद्ध वादविवाद मत करो।

( १३३ ) जो मनुष्य अपने और माँ-बापके गुणोंसे प्रसिद्ध है, वह उत्तम से भी उत्तम है। जो अपने गुणोंसे मशहूर है, वह उत्तम है। जो बापके गुणोंसे प्रसिद्ध है वह मध्यम है और जो मा के गुणोंसे प्रसिद्ध है वह नीच है। जो शख्स अपनी कन्या, अपनी स्त्री या बहिनके भाग्य-भरोसे जीता है, वह नीचसे भी नीच है।

( १३४ ) खूब धनवान होने पर-पुत्र वगैरह को, परवरिश अच्छी तरह करनी चाहिये और एक दिन भी बिना दान दिये खाली न जाने देना चाहिये, अर्थात् हर रोज कुछ न कुछ दान अवश्य ही करना चाहिये।

( १३५ ) मैं मौतके मुँहमें हूँ और मेरी उम्र एक क्षणकी है,—ऐसा समझ कर मनुष्यको दान और धर्म करना चाहिये, परलोकमें दान और धर्म के सिवा कोई सहायक नहीं है।

( १३६ ) किसीकी बुराई या भलाई बिना विचारे न करनी चाहिये। बिना विचारे किये हुए अपकार और उपकार दोनोंसे अनिष्ट होता है।

( १३७ ) अत्यन्त निर्दयता, अत्यन्त बुराई और अत्यन्त नम्रता कभी न करनी चाहिये। इसी तरह अत्यन्त वादविवाद, अत्यन्त आसक्ति और अत्यन्त हठ भी न करना चाहिये, क्योंकि "अति" सब जगह नाशका कारण है, अत "अति" से बचना ही चाहिये।

( १३८ ) निर्दयता करनेसे मनुष्य पछताता और दु खित

होता है, कञ्जूसोसे निन्दाभाजन होता है, बहुत नम्रीसे उसे कोई मानता नहीं, अति वाद करनेसे निरादर होता है, अति दानसे कङ्गाली आती है, अति लालच करनेसे अपमान होता है और अत्यन्त हठ करने से मनुष्य मूर्ख समझा जाता है।

(१३८) जवान स्त्री, धन और पोथी इन तीनोंको दूसरे के अधिकारमें न रखना चाहिये। अव्वल तो यह दूसरेके हाथमें जाकर मिलते ही नहीं और यदि दैव-योगसे मिल भी जाँय तो स्त्री भ्रष्ट हुई, धन नष्ट हुआ और पुस्तक चिथडी हुई मिलती है।

(१४०) बुद्धिमान्को उचित है कि हँसीमें भी किसी ऐसी बात न कहे जिससे दूसरेका दिल नाराज हो। जिसको जन्मभर दान-मानसे खुश रक्खा है, उसको कडवी बात न कहनी चाहिये।

(१४१ कडवी बात कहनेसे दोस्त भी दुश्मन हो जाता है, क्योंकि कठोर वचन रूपी बाण जब मनमें घुस जाता है, तब फिर किसी तरह नहीं निकल सकता।

(१४२) अपना शत्रु जब अपनेसे अधिक ज़ोरावर हो, तब उसको अपने कन्धे पर ले जाना चाहिये, किन्तु जब उसका ज़ोर घट जाय, तब उसे इस तरह नाश कर देना चाहिये, जिस तरह घडे को पत्थर पर पटक कर फोड डालते हैं।

( १४३ ) गहने, राज्य, पुरुषार्थ और विद्यासे मनुष्य को उतनी शोभा नहीं होती, जितनी शोभा सज्जनतासे होती है ।

( १४४ ) घोड़ेमें तेज़ चाल, बैलमें धीरज, मणिमें चमक दमक, राजामें क्षमा, वेश्यामें हाव-भाव और गवैयेमें मीठी आवाज़ भूषण है ।

( १४५ ) धनवानमें दातारी, सिपाहीमें बहादुरी, गाय में दूधकी अधिकता, तपस्वीमें इन्द्रियोंका वश करना, और विद्वान्में वाचालता भूषण है ।

( १४६ ) सभाके लोगोंमें पक्षपात-हीनता, गवाहोंमें सच बात बोलना, नौकरोंमें मालिकसे प्रेम, और मन्त्रियोंमें राजा की भलाईकी बातें भूषण हैं ।

( १४७ ) मूर्खों में चुप रहना और स्त्रियों में पातिव्रत भूषण है । अर्थात् ये सब इन लक्षणों से शोभा पाते हैं । इनके विपरीत लक्षणों से ये सब बुरे मालूम होते हैं ।

( १४८ ) किसी काम में एक आदमी का मालिक या मुखिया होना अच्छा है । मालिक या मुखिया का न होना या एक से अधिक मालिक होना बुरा है ।

जिस कारखाने, दूकान या कोठीमें एक आदमीकी मति पर काम चलता है, वह कारखाना या कोठी अवश्य उन्नति करती है । जिस सेनामें एक अफसर मुख्य होता है, वह सेना लाभ करती है, किन्तु जहाँ जना-जना मालिक बनता

है, वह कारखाना, वह दूकान और वह मौजनष्ट हो जाती है। सलाह सबकी ली जा सकती है, किन्तु काम एक मनुष्य की मति पर होना चाहिये। यही बात आजकलके पश्चिमी राजाओंमें देखी जाती है। समस्त सभासदों की सलाह और वादविवाद के बाद वही बात तय होती है, जिसे सभापति स्वीकार करता है। पृथ्वीराज चौहानके पीछे हमारे देशके राजाओं में कोई मुखिया न रहा। नाई की बरात में सभी ठाकुर बन गये। सभी अपनी डेढ़-डेढ़ चाँवलकी खिचड़ी अलग-अलग पकाने लगे। इसी कारण से मुसलमानों द्वारा पद-दलित और परास्त होकर पराधीनता की बेड़ियोंमें जकड़े गये। चाहे एक बड़ा राज्य हो, चाहें छोटीसी गृहस्थी हो अथवा कोई कार्य्यालय हो, उसमें सबसे पहले एक आदमी को, जो सबमें चतुर, बुद्धिमान और अनुभवी हो, मुखियत्व के लिये चुन लेना चाहिये। पीछे सबको उसे अपने राजा की तरह मानना चाहिये। क़दम-क़दम पर उसकी सलाह के अनुसार चलना चाहिये। हम अपने अनुभव से इस तरीके की उमदगी देख चुके हैं। जिन्हें किसी काममें सिद्धि लाभ करना हो, जिन्हें अपने काममें विघ्न-बाधाओंका होना नापसन्द हो, उन्हें अवश्य इस नीति-वाक्य पर चलना चाहिये।

(१८८) कोई कैसा ही गुणवान क्यों न हो, जिस में चुगलखोरी, क्रोध, जल्दबाज़ी, चोरी, दूसरे के अच्छे कामों में भी दोष ढूँढनेकी प्रकृति, बहुत लालच, काम बिगाड़ना,

और अत्यन्त सुस्ती,—ये अवगुण होते हैं, उसके गुण भी दोषों से दब जाते हैं। अत. मनुष्यों को ऊपर कहे हुए दोषों से बचना चाहिये।

(१५०) बचपन में मां का मरना, जवानी में स्त्री का मरना और बुढापे में धन तथा पुत्र का नाश हो जाना—घोर पाप का फल है। धनवान के औलाद न होना और कङ्गाल का अपढ—मूर्ख—रह जाना भी महापापका फल है।

(१५१) मूर्ख पुत्र, विधवा कन्या, कर्कशा स्त्री, कङ्गाली, नीच की चाकरी, और रोज़ रास्ता चलना,—ये छः दु.खदायी हैं अर्थात् इनसे सुख और चैन नहीं मिलता।

(११५) जिसका दिल पढने,पढाने, गाने, बजाने, काव्यों के देखने, तथा स्त्री, तपस्या, और बहादुरी में नहीं लगता,—यह बन्धन से खुला हुआ नर-रूप में पशु है।

(१५२) जो पराई बढ़ती अथवा उन्नति नहीं देख सकता, जो दूसरे में दोष निकालता और निन्दा करता है, जो औरों को देखकर कुढता है, जिसका अन्तःकरण मैला होता है, किन्तु मुखपर प्रसन्नता होती है,—वह दुष्ट होता है।

(१५४) जिसके पीछे आशा लग रही है उसे ब्रह्मा के सारे ख़ज़ाने से भी सन्तोष और सुख नहीं हो सकता। जिसे आशा नहीं है, उसका मन थोडे से धन से भी भर जाता है।

) दुष्ट आदमी दूसरों को शिक्षा देने के लिये भले

आदमी के समान बने रहते हैं, किन्तु आप अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिये सैकड़ों तरह के बुरे काम करते हैं।

(१५६) जो पुत्र मा-बाप की आज्ञानुसार चलता है, उनकी सेवा-टहल में सुस्ती नहीं करता, छाया के समान साथ रहता है, धन कमाने का उद्योग करता है और सब तरह की विद्या कलाओं में निपुण है,—वही पुत्र पिता को खुश रखनेवाला है। किन्तु जो आज्ञा नहीं मानता, सेवा करने से जी चुराता है तथा धन नाश करता है, वह दु'खदायी है।

(१५७) जो स्त्री सदा पति से प्रेम रखती है, घर के धन्धे में प्रवीण होती है, पुत्रवती, सुन्दर स्वभाववाली और जवान होती है वह पति की प्यारी होती है।

(१५८) जो माँ अपने बच्चे के क़ुसूरों को बरदाश्त करके भी उसकी पालना करती है वह सुखदायिनी होती है, किन्तु जो माँ पर-पुरुष-रता होती है, वह पुत्र के हक़ में दु खदायिनी होती है।

(१५९) जो बाप अपने बेटे के पढ़ाने और उसके रोज़गारकी कोशिश करता है और हमेशा उसे हितकारी उपदेश देता है, वह पिता पुत्र के हक़ में सुखदायी होता है।

(१६०) जो सदा सहायता देता है, कभी मित्र के विरुद्ध बात मुँह से नहीं निकालता, सच्ची और हितकारी बात कहता और मानता है, वही मित्र होता है।

(१६७) ज्ञानवान लोग तत्त्व को चाहते है, पाखण्डी तपस्या चाहते हैं, अग्नि पूजक अग्नि चाहते है, योगिजन एकान्त स्थान चाहते हैं, पर पुरुष-रता स्त्री यार चाहती है, रोगी वैद्यको चाहता है, भिखारी दानीको चाहता है डरा हुआ मनुष्य बचानेवालेको चाहता है, दुष्ट लोग दूसरे मे दोष चाहते हैं और जिसके घरमें किसी प्रकार का माल रहने के लिये तैयार रहता है, वह उसका मरंगा होना चाहता है।

(१६८) जो मनुष्य मूर्ख होता है, वह गुस्से से लाल हो जाता है झगडा या वाद विवाद करता है, बहुत सोता है, नशा खाता है, व्यर्थके काम करता है और अपना अच्छा काम बिगाड कर बुरा काम करता है।

(१६९) ब्राह्मण मे सत्वगुण, क्षत्रिय मे तमोगुण रहता है, किन्तु वैश्य और शूद्र आदिकों मे रजोगुण की अधिकता होती है। जिसमें सतोगुणकी अधिकता हो, वही उत्तम है।

(१७०) जीविका वही उत्तम होती है, जिससे अपने धर्म को नुकसान नहीं पहुँचता, देश वही अच्छा होता है, जहाँ अपने कुटुम्बियोंका गुजारा होता है, खेती वही अच्छी होती है, जो नदीके किनारे पर की जाती है।

(१७१) वैश्य का रोज़गार मध्यम है, शूद्र का धन्धा अधम है और माँगना बहुत ही नीच काम है, किन्तु तपस्वियोंके

(१६१) नीच मनुष्यों से मेल-जोल, पराये घर में सदा जाना, बिरादरीवालोंसे विरोध, अपमान, और दरिद्र—ये सब दुःखदाई हैं। विद्वानों में दरिद्रता और दरिद्रता में औलाद का होना भी दुःखदाई है।

(१६२) जिस जगह राजा, वैद्य, साहूकार, गुणवान, और जल न हो वहाँ का बसना, एक भी पुत्री का पैदा होना और माँ बाप के आगे हाथ पसारना,—ये सब ही सन्ताप देने वाले हैं।

(१६३) जो पुरुष रूपवान, धनवान, बलवान और विद्वान् होकर भी स्त्री की इच्छा पूर्ण न करे,—वह सुख नहीं पाता।

(१६४) जो स्त्री को हर तरह प्रसन्न और सन्तुष्ट रखता है अथवा उसकी मन-चाही करता है, स्त्री उसके वश में हो जाती है। जैसे बालकका लाड प्यार करने से बालक वश में हो जाता है।

(१६५) मनुष्य जिस काम का खर्च वगैरः जानता हो, उस काम को काम के जाननेवाले अनुभवी पुरुषों से करावे। चतुर पुरुष हरेक काम को खूब सोच-समझकर करते है। वे लोग फ़िज़ूल छोटासा काम भी नहीं करते।

(१६६) बुद्धिमान को चाहिये कि, ऐसा काम न करे जिसमें अधिक खर्च पड़ता हो। व्योपारी उस कामको करते हैं, जिसमें नफ़ा अधिक होता है।

(१६७) भाग्यवान लोग तत्त्व को चाहते हैं, पाखण्डी पस्या चाहते हैं, अग्नि पूजक अग्नि चाहते हैं, योगिजन कान्त स्थान चाहते हैं, पर पुरुष स्त्री को यार चाहती है, गी वैद्यको चाहता है, भिखारी दानीको चाहता है डरा मा मनुष्य बचानेवालेको चाहता है, दुष्ट लोग दूसरे में दोष हते हैं और जिसके घरमें किसी प्रकार का माल बेचन लिये तैयार रहता है, वह उसका महँगा होना हता है।

(१६८) जो मनुष्य मूर्ख होता है, वह गुस्से से लाल हो ता है झगड़ा या वाद-विवाद करता है, बहुत सोता है, ा खाता है, व्यर्थके काम करता है और अपना अच्छा काम ाड़ कर बुरा काम करता है।

(१६९) ब्राह्मण में सत्वगुण, क्षत्रिय में तमोगुण रहता किन्तु वैश्य और शूद्र आदिकों में रजोगुण की अधिकता ी है। जिसमें सतोगुणकी अधिकता हो, वही उत्तम

(१७०) जीविका वही उत्तम होती है, जिससे अपने धर्म नुकसान नहीं पहुँचता, देश वही अच्छा होता है, जहाँ ने कुटुम्बियोंका गुज़ारा होता है, खेती वही अच्छी होती ती नदीके किनारे पर की जाती है।

(१७१) वैश्य का रोजगार मध्यम है, शूद्र का धन्धा अधम ार माँगना बहुत ही नीच काम है, किन्तु तपस्वियोंके

लिये माँगना अच्छा है। धर्मात्मा राजाकी नौकरी कभी-कभी अच्छी समझी जाती है।

( १७२ ) राजाकी नौकरी किये बिना बहुतसा धन नहीं मिलता, किन्तु राज-सेवा करना बड़ा कठिन काम है। बुद्धिमानके सिवा अन्य मनुष्य राज-सेवा नहीं कर सकता। राजा की नौकरी खाँड़े की धार के समान है।

( १७३ ) जिस भाँति साँपको पकड़नेवाला साँपको अपने वशमें कर लेता है, उसी तरह बुद्धिमान मन्त्री अपने मन्त्रों—सलाहों—से राजाको अपने वशमें कर लेता है।

( १७४ ) पहले गरीब होना और पीछे अमीर होना अच्छा है, पहिले धनवान होना और पीछे कङ्गाल होना, बुरा है, और पहले सवारी पर चढ़कर चलना और पीछे पैदल चलना भी बुरा है।

( १७५ ) औलाद होकर मर जावे, उससे बिना औलाद रहना अच्छा है, खराब सवारी पर चढ़कर चलनेसे पैदल चलना अच्छा है। किसीसे विवाद या विरोध करने से चुप रहना अच्छा है।

( १७६ ) पराये घरमें रहने से वन में बसना भला है। दुष्टा स्त्री के साथ रहने से भिक्षा माँगना या मरना अच्छा है।

( १७७ ) कर्ज़ लेने के समय सुख होता है, लेकिन देते दुःख होता है। दुष्ट के साथ मित्रता करनेमें पहिले

लिये माँगना अच्छा है। धर्मात्मा राजाकी नौकरी कभी-कभी अच्छी समझी जाती है।

( १७२ ) राजाकी नौकरी किये बिना बहुतसा धन नहीं मिलता, किन्तु राज-सेवा करना बड़ा कठिन काम है! बुद्धिमानके सिवा अन्य मनुष्य राज-सेवा नहीं कर सकता। राजा की नौकरी खांडे की धार के समान है।

( १७३ ) जिस भाँति साँपको पकड़नेवाला साँपको अपने वशमें कर लेता है, उसी तरह बुद्धिमान मन्त्री अपने मन्त्रों—सलाहों—से राजाको अपने वशमें कर लेता है।

( १७४ ) पहले गरीब होना और पीछे अमीर होना अच्छा है, पहिले धनवान होना और पीछे कङ्गाल होना बुरा है, और पहले सवारी पर चढ़कर चलना और पीछे पैदल चलना भी बुरा है।

( १७५ ) औलाद होकर मर जावे, उससे बिना औलाद रहना अच्छा है, खराब सवारी पर चढकर चलनेसे पैदल चलना अच्छा है। किसीसे विवाद या विरोध करने से चुप रहना अच्छा है।

( १७६ ) पराये घरमें रहने से वन में बसना भला है। दुष्टा स्त्री के साथ रहने से भिक्षा माँगना या मरना अच्छा है।

( १७७ ) कर्ज़ लेने के समय सुख होता है, लेकिन देते समय दुःख होता है। दुष्ट के साथ मित्रता करनेमें पहिले

( ६ ) अपने भाई, चाचा, उनकी स्त्रियां, उनके पुत्र, सास ननद, सौत तथा देवरानी और जिठानी ये सब आपसमें दुश्मन होते हैं ।

( ७ ) मूर्ख बेटा, चिकित्सा न जाननेवाला वैद्य और क्रोधी राजा ये भी शत्रु होते हैं ।

( ८ ) जिस भांति उपाय करनेवाले सांप, हाथी और शेर को भी अपने वशमें कर लेते हैं और मृत्युलोकसे स्वर्गलोकमें चले जाते हैं तथा हीरेमें भी छेद कर देते हैं, उसी तरह साम, दाम, दण्ड, भेद इन चार उपायोंसे मित्र, रिश्तेदार, स्त्री, पुत्र और दुश्मनोंको वश करना चाहिये ।

( ६ ) अगर एकसा मिजाज हो, बराबर की उम्र हो, एक ही विद्या, एक ही जाति, एक ही व्यसन, एक ही रोजगार हो और एक जगह ही रहना हो तो दोस्ती हो जाती है, किन्तु इन सब के अलाव नम्रता का होना जरूरी है ।

( १० ) जिस उपाय से प्रजा शान्त रहती है, उस उपायको दण्ड कहते हैं । दण्डके भय से प्रजा धर्ममें तत्पर रहती है । दण्ड-भयसे कोई चोरी-जोरी नहीं करता, झूठ नहीं बोलता, दुष्ट मनुष्य सज्जन हो जाते हैं और क्रूर मनुष्य अपनी क्रूरताको त्याग देते हैं ।

( ११ ) अगर गुरु भी घमण्डी हो, बुरे भले कामको न जाननेवाला हो और खोटे रास्ते पर चलनेवाला हो, तो राजा को उचित है कि वैसे गुरु को भी सीधा करे ।

( १२ ) राजाको उचित है कि माता पिता और स्त्री के पालन-पोषण न करनेवाले पुरुषसे मज़, दे कर नास्ते पर लावे और उसकी आधी कमाई स्त्री और माता-पिताको, उनके गुज़ारेके लिये दिलावे।

( १३ ) धन जमा करनेमें बड़ा भारी कष्ट होता है। जमा करनेसे रखनेमें और भी अधिक कष्ट होता है। अगर ज़रा भी लापरवाही की जाती है, तो जमा किया हुआ धन ज़रासी देर में नष्ट हो जाता है।

( १४ ) धन कमानेवाले मनुष्यको धन नाश होनेसे जितना दु ख होता है, उतना दु ख स्त्री, पुत्र और दूसरे लोगोंको किस तरह हो सकता है?

( १५ ) जो मनुष्य अपने काम में खुद ढीला होता है, उसके सहायक भी ढिलाई करते हैं। जो अपने काममें खुद चुस्त और फुर्तीला होता है, उसके मददगार भी वैसेही होते हैं।

( १६ ) जो मनुष्य धन सञ्चय करना जानता है, किन्तु सञ्चित—जमा किये हुए—धनको रखना नहीं जानता, उससे बढकर कोई मूर्ख नहीं है। ऐसे मनुष्य का धन जमा करना फिज़ूल है।

( १७ ) जो मनुष्य एक काम में दो मनुष्यों को अधिकार देता है, एक स्त्री के जीते जी दूसरी स्त्री लाता है, और सत्

किसीका अत्यन्त विश्वास कर लेता है, उससे बढकर दूसरा मूर्ख नहीं है।

(१८) जो मनुष्य बहुत ही लोभी हो, जो स्त्रियोंके अधीन हो, जो चोर, व्यभिचारी और जीव-हिंसा करनेवालेकी गवाही माने, वह भी मूर्ख है।

(१९) मनुष्य को चाहिये कि सूम—कञ्जूस—की तरह धनकी रक्षा करे; किन्तु मौका पडने पर त्यागीकी भाँति दान या खर्च करे और हरेक चीजको यथार्थ रूप से जानने की कोशिश करे।

(२०) यज्ञ करना और कराना, पढना और पढाना, दान देना और लेना,—ये सब ब्राह्मण के कर्म हैं।

(२१) यज्ञ करना, पढना, दान देना, भले आदमियोंकी रक्षा करना, दुष्टोंको दण्ड देना और अपना भाग लेना,—ये सब क्षत्रियके कर्म हैं।

(२२) यज्ञ करना, पढना, दान देना, खेती करना, लेन-देना या वाणिज्य व्योपार-करना तथा गायोंकी रक्षा करना—ये सब वैश्यके कर्म हैं।

( २५ ) विद्या और कलाओं की गिन्ती नहीं है, तथापि ३२ विद्या और ६४ कला मुख्य हैं।

( २६ ) विद्या वाणी द्वारा सिद्ध होती है, किन्तु कलाको गूँगा भी कर सकता है।

( २७ ) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्वणवेद,—ये चार वेद हैं। आयुर्वेद धनुर्वेद, गांधर्व वेद, और तन्त्र—ये चारो उपवेद हैं।

( २८ ) व्याकरण, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द—ये वेदोंके अङ्ग है।

( २९ ) मीमांसा तर्क, सांख्य, वेदान्त, योग, इतिहास, पुराण, स्मृति, नास्तिक मत, अर्थ-शास्त्र, काम-शास्त्र, शिल्प शास्त्र, अलङ्कार, काव्य, देशकी भाषा, मौके की युक्ति, मुसल्मानों का मत इत्यादि विद्याएँ है।

( ३० ) ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास—ये चार आश्रम है। ब्राह्मण चारों आश्रम पालन कर सकता है किन्तु क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रके लिये सन्यास मना है। वे लोग शेष तीन आश्रम पालन कर सकते हैं।

( ३१ ) विद्या के लिये ब्रह्मचर्य आश्रम है। सब जीवों की पालना के लिये गृहस्थाश्रम है। इन्द्रियों के दमन करनेके लिये वाणप्रस्थ और मोक्ष लाभ के लिये सन्यास है।

( ३२ ) स्त्री को उचित है कि पति से पहले सुती उठकर

शौच आदि से निपट कर, पलँग के बिस्तरोंको उठावे और घर में झाड़ू वगैर: लगाकर घरको साफ करे ।

( ३३ ) अग्निशाला और आँगन को लीप-पोत कर शुद्ध करे और यज्ञके चिकने बर्तनोंको गरम जलसे धोकर साफ करे । पीछे उनको जहाँ के तहाँ रख दे और दूसरे बर्तनोंको माँज कर उनमें जल भर कर रख दे ।

( ३४ ) रसोईके बर्तनो को माँज-धोकर चूल्हेको लीपे और उसमें आग और ईंधन रख दे ।

( ३५ ) सवेरे का सब काम करके, सास और ससुर को प्रणाम करे । सास, ससुर, मा, बाप भाई आदि रिश्तेदारोंने जो कपड़े और जेवर पहननेको दिये हों, उन्हें पहने ।

( ३६ ) स्त्री का धर्म है कि, वह मन, वाणी और कर्म से पवित्र रहे, पतिकी आज्ञा पर चले, छायाके समान साथ रहे और मित्रके समान उसकी भलाई में लगी रहे ।

( ३७ ) स्त्री अपने पति की दासी के समान रहे । रसोई तय्यार करके पति को निवेदन करे । पीछे कुटुम्ब के सब लोगों को भोजन करा कर, पति को भोजन करावे । पतिसे आज्ञा लेकर बाक़ी बचे हुए अन्न को आप खावे । इन सब कामों से छुट्टी पाकर, दिन-भर की आमदनी और खर्च का हिसाब देखे ।

( ३८ ) फिर सन्ध्या-समय घरकी सफाई करके, भोजन .े और पति तथा नौकर-चाकरों को खिलावे ।

(३८) आप अधिक न खाय। घर की रीति-अनुसार
ंग बिछा कर पति की सेवा करे।
(४०) जब पतिको नींद आजावे, तब आप भी उसके पास
।, उसीमें ध्यान लगा कर सो जावे। स्त्रीको उचित है कि
भी नशी न सोवे नशेसे मतवाली न रहे, कामेच्छाको छोड़े,
न्द्रियोंको वशमें करे।

(४१) पतिसे चिल्ला कर कठोर वचन न बोले, किसीके
ाथ लड़ाई-झगड़ा न करे और वृथा बकवाद न करे।

(४२) पतिके धन को फिजूल खर्च न करे, धन और धर्म
नाश न करे, रूसना-मटकाना, ईर्षा-द्वेष और निन्दा
दि बुरी आदतोंसे बचे।

(४३) जो स्त्री ऊपर लिखी हुई तरकीबोंसे पति की सेवा
है, उसका इस दुनियामें नाम होता है और मरनेपर वह
ोकमें जाती है।

(४४) जब स्त्री का रजोदर्शन हो, तब वह सबको छोड़
ी अन्दरूनी घरमें जा बैठे, जिससे उसे कोई देख न
न करे, गहने न पहिने, जमीन पर सोवे और चौथे
निकलने पर स्नान करे। जब स्त्री इस भांति शुद्ध
पहले लिखी हुई रीति-अनुसार फिर घरके काम-
यह धर्म ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य की
तथा दूसरी जाति की स्त्रियों का भी यही

# विदुर नीति।

विदुरजी नीति-शास्त्रके बड़े भारी पण्डित थे। उन्होंने कौरवों को बहुत कुछ समझाया-बुझाया, मगर वे किसी तरह न माने। धृतराष्ट्र भी अपने बेटों के मोह-जालमें फँस गया। उसने भी विदुर जी की बात इस कान सुनी उस कान निकाल दी।

एक दिन राजा धृतराष्ट्र पाण्डवोंके भेजे हुए सञ्जयकी आने-पर उससे टेढ़ी-सीधी बातें सुन कर बहुत दुःखी हुए। तब उन्होंने विदुर महाराज को बुलवाया और उनसे कहने लगे—"हे विदुर। सञ्जय मेरी बुराई कर गया है। कल वह सभा में आवेगा और पाण्डवोंका समाचार सुनावेगा। न जाने वह क्या कहेगा? मुझे उसी चिन्तासे रात-भर नींद नहीं आती। मेरा शरीर जला जाता है। आप मेरे जैसे घोर चिन्ता-रूपी अग्निमें जलते हुएकी शान्तिके लिये कुछ तदबीर बताइये।

विदुर बोले—"महाराज! युधिष्ठिर सदा तारीफ़के लायक़ काम करते हैं। बुरे काम उनसे नहीं होते। वे ईश्वर और वेदको मानते हैं और श्रद्धा रखते है। उनमें सब राज-चिह्न मौजूद है और वे तीनों लोकके स्वामी होने योग्य हैं। अफ़सोस की बात है, कि आपने उन्हींको राज्यसे निकाल दिया। आप विद्वान् और धर्मात्मा हैं, किन्तु अन्धे हैं; इसी वजहसे आपको राज्य नहीं मिला। आपने अब पाण्डवोंका राज्य छीन लिया है, इससे कहना पड़ता है कि आप सचमुच ही अन्धे हैं। पाण्डव सत्यवादी, धर्मात्मा, दयालु, और महाबलवान हैं और आपको अपने पिताके समान जानते हैं, इसीसे वह आपको क्षमा कर रहे हैं। जब आपने दुर्योधन, शकुनि, कर्ण और दुःशासनको सब तरहके अख्त्यार—अधिकार—दे दिये हैं, तब आपका सुखकी इच्छा करना वृथा है।

जो विद्वत्ता, वैराग्य, धर्म और शक्तिके होते हुए भी धर्म को छोड़ दे, वह मूर्ख होता है।

जो शख्स अच्छे काम करता है, बुरे कामोंको नहीं करता, ईश्वर को मानता है और सबमें श्रद्धा रखता है,—वह पण्डित कहलाता है।

जो गुस्सा, घमण्ड, सुख और शर्मके मारे धर्म को नहीं छोड़ता तथा आदर योग्य मनुष्य का आदर करता है, वह पण्डित कहलाता है।

जिसकी सलाह और तदबीरें किसीको मालूम नहीं होतीं,

किन्तु किया हुआ काम ही सबको नज़र आता है, वह पण्डित कहलाता है।

जिसके काममें सर्दी, गर्मी, भय, काम, धनवानता और निर्धनतासे विघ्न नहीं होता,—वही पण्डित है।

जो लोग अपनी शक्ति-अनुसार काम करनेकी इच्छा करते हैं और जैसी इच्छा करते हैं वैसाही काम कर भी दिखाते हैं तथा किसी का अपमान नही करते, वह पण्डित कह-लाते हैं।

जो असल बात को शीघ्रही समझ जाता है, सुनने-योग्य बात को देर तक सुनता है, खूब सोच विचार कर कामर्में हाथ डालता है, काम और क्रोधके अधीन होकर कोई काम नहीं करता और बिना पूछे नहीं बोलता, वह पण्डित कह-लाता है।

जो शख्स न मिलने-लायक़ चीज़ की इच्छा नही करता, नष्ट हुई चीज़की चिन्ता नही करता, भयानक विपत्ति पड़ने पर भी जी नही छोड़ता, वह पण्डित कहलाता है।

जो मनुष्य खूब सोच-विचार कर काम को शुरू करता है, काम को खतम किये बिना नहीं छोड़ता, किसी समय भी काम करनेसे मुँह नही मोड़ता और इन्द्रियों को अधीन रखता है यानी खय इन्द्रियोंके वशीभूत नहीं होता, वह पण्डित कहलाता है।

जो मनुष्य अच्छे-अच्छे कर्म करता है, सदा धन कमाने

का उद्योग करता है, अपनी भलाई की बात पर ध्यान रखता है, आदरसे प्रसन्न और अनादरसे अप्रसन्न नहीं होता और जो गङ्गाके समान गम्भीर होता है,—वही पण्डित कहलाता है।

जिसकी बुद्धि शास्त्रानुसार है, जिसकी विद्या बुद्धि-अनुसार है और जो श्रेष्ठ पुरुषोंकी मर्य्यादा को नहीं तोड़ता—वह पण्डित है।

जो शख़्स बात कहनेमें नहीं हिचकता, जो अच्छी-अच्छी अद्भुत बातें जानता है, जो किसी विषय पर तर्क या दलील कर सकता है, जो इशारेसे ही बातको समझ जाता है,—वह पण्डित कहलाता है।

जो शख़्स पढ़ा-लिखा न होकर घमण्डी हो, दरिद्री होकर भी ऊँची-ऊँची वासनाओंके भोगने की इच्छा करता हो तथा खोटे कामोंसे धन पैदा करना चाहता हो, वह मूर्ख कहलाता है।

जो अपने कामको छोड़ देता है, किन्तु दूसरेके कामको सिद्ध करना चाहता है, सहायता करने लायक़ होने पर भी मित्रकी सहायता नहीं करता और सहायता करने लायक न होने पर सहायता करना चाहता है,—वह मूर्ख कहलाता है।

जो उचित चीज़ोंको छोड़ता और अनुचित चीज़ों को चाहता है तथा बलवानसे दुश्मनी करता है,—वह मूर्ख कहलाता है।

जो दुश्मन को दोस्त समझता है और दोस्त को दुश्मन समझता है तथा दोस्तको नुकसान पहुँचाना चाहता है एवं नीच कर्म करता है, वह मूर्ख कहलाता है।

जो सारा काम नौकरोंसे ही कराया चाहता है, आप खुद काम करनेसे जी चुराता है और जल्दी करने लायक काममें वृथा टालमटोल करके विलम्ब करता है, वह मूर्ख होता है।

जो पितरोंका श्राद्ध नहीं करता, देवताओं की पूजा नहीं करता और भले मित्रोंसे प्रीति नहीं रखता, वह मूर्ख होता है।

जो किसीके यहाँ बिना बुलाये जाता है, बिना कुछ पूछे ही अपने-आप बकने लगता है और अविश्वास-योग्य मनुष्य का विश्वास कर लेता है, वह मूर्ख कहलाता है।

जो शख्स दूसरेके काममें दोष निकालता है और स्वयं वैसाही दोष-युक्त काम करता है—वह मूर्ख होता है।

जो शख्स अपने तईं सामर्थ्यवान समझ कर, धर्म-अर्थ-हीन कर्मों से, न मिलने-योग्य चीज़के प्राप्त करनेकी इच्छा करता है, वह मूर्ख कहाता है।

जो शख्स हुकूमत न करने लायक मनुष्य पर हुकूमत करता है, जो राजाके बिना अकेला रनवासमें जाता है और जो कञ्जूस आदमी की नौकरी करता है, वह महामूर्ख कहलाता है।

जो अत्यन्त विद्वान् और धनवान् होने पर भी घमण्डको पास नहीं आने देता, वह पण्डित कहलाता है।

जो मनुष्य अकेला ही धनका सुख भोगता है और अकेला ही अच्छे-अच्छे महलोंमें रहता है तथा अकेलाही नाना प्रकार के षटरस भोजन करता है, किन्तु कुटुम्बियों और नौकरों को इस सुखमें शरीक नहीं करता, वह निर्दयी है।

मनुष्य अकेलाही पाप करता है और अकेलाही अपने किये हुए पापका फल भोगता है। पापकर्त्ताके साथियोंको पाप नहीं लगता, पाप अपने करनेवालेके ही पीछे पड़ता है।

धनुर्धारी का तीर निशाने पर लगनेसे एकही जीवका नाश करता है और कभी निशाना चूक जानेसे निष्फल भी चला जाता है, किन्तु चतुर मनुष्य अपनी बुद्धिके बलसे राजा सहित राज्यका भी नाश कर सकता है।

मनुष्य को चाहिये, कि अकेला ही अच्छे-अच्छे भोजन न करे, अकेला किसी विषय पर विचार न करे, अकेला रास्ता न चले और सब सो जावें, तब आप अकेलाही जागता न रहे।

ईश्वर एक है। महाराज! आप उसे नहीं जानते। वह मनुष्यों को दुःखसे इस भांति पार लगा देता है, जैसे नाव समुद्रके पार लगा देती है।

क्षमाशील मनुष्य को सब कोई असमर्थ समझ लेते हैं, परन्तु, वास्तवमें, क्षमावान् असमर्थ नहीं है। क्षमावान् को

जो दुश्मन को दोस्त समझता है और दोस्त को दुश्मन समझता है तथा दोस्तको नुकसान पहुँचाना चाहता है एवं नीच कर्म करता है, वह मूर्ख कहलाता है।

जो सारा काम नौकरोंसे ही कराया चाहता है, आप खुद काम करनेसे जी चुराता है और जल्दी करने लायक काममें वृथा टालमटोल करके विलम्ब करता है, वह मूर्ख होता है।

जो पितरोंका श्राद्ध नहीं करता, देवताओं की पूजा नहीं करता और भले मित्रोंसे प्रीति नहीं रखता, वह मूर्ख होता है।

जो किसीके यहाँ विना बुलाये जाता है, विना कुछ पूछे ही अपने-आप बकने लगता है और अविश्वास-योग्य मनुष्य का विश्वास कर लेता है, वह मूर्ख कहलाता है।

जो शख्स दूसरेके काममें दोष निकालता है और स्वयं वैसाही दोष-युक्त काम करता है—वह मूर्ख होता है।

जो शख्स अपने तईं सामर्थ्यवान समझ कर, धर्म-अर्थ-हीन कर्मों से, न मिलने-योग्य चीज़के प्राप्त करनेकी इच्छा करता है, वह मूर्ख कहाता है।

जो शख्स हुकूमत न करने लायक मनुष्य पर हुकूमत करता है, जो राजाके बिना अकेला रनवासमें जाता है और जो कञ्जूस आदमी की नौकरी करता है, वह महामूर्ख कहलाता है।

जो अत्यन्त विद्वान् और धनवान् होने पर भी घमण्डको पास नहीं आने देता, वह पण्डित कहलाता है।

जो मनुष्य अकेला ही धनका सुख भोगता है और अकेला ही अच्छे-अच्छे महलोंमें रहता है तथा अकेलाही नाना प्रकार के षटरस भोजन करता है, किन्तु कुटुम्बियों और नौकरों को इस सुखमें शरीक नहीं करता, वह निर्दयी है।

मनुष्य अकेलाही पाप करता है और अकेलाही अपने किये हुए पापका फल भोगता है। पापकर्त्ताके साथियोंको पाप नहीं लगता, पाप अपने करनेवालेके ही पीछे पड़ता है।

धनुर्धारी का तीर निशाने पर लगनेसे एकही जीवका नाश करता है और कभी निशाना चूक जानेसे निष्फल भी चला जाता है, किन्तु चतुर मनुष्य अपनी बुद्धिके बलसे राजा सहित राज्यका भी नाश कर सकता है।

मनुष्य को चाहिये, कि अकेला ही अच्छे-अच्छे भोजन न करे, अकेला किसी विषय पर विचार न करे, अकेला रास्ता न चले और सब सो जावें, तब आप अकेलाही जागता न रहे।

ईश्वर एक है। महाराज! आप उसे नहीं जानते। वह मनुष्यों को दुःखसे इस भाँति पार लगा देता है, जैसे नाव समुद्रके पार लगा देती है।

क्षमाशील मनुष्य को सब कोई असमर्थ समझ लेते हैं। परन्तु, वास्तवमें, क्षमावान् असमर्थ नहीं है। क्षमावान् को

असमर्थ समझ कर उसका अनादर और अपमान न करना चाहिये। क्षमा ही परम बल है। क्षमा सामर्थ्यवानोंमें गुण और असमर्थोंमें भूषण है।

मनुष्य क्षमासे सब किसी को अपने वशीभूत कर सकता है। संसारमें ऐसा कोई काम नहीं है, जो क्षमा द्वारा सिद्ध न हो सके। जिसके पास क्षमा-रूपी तलवार है, उसका दुष्ट मनुष्य क्या बिगाड सकता है? जहाँ घास-फूस नहीं है, वहाँ अग्नि पडकर आप ही बुझ जाती है। क्रोधी मनुष्य अपने दोषोंसे आप ही आफ़त में पडता है।

केवल धर्म ही से कल्याण होता है, अकेली क्षमा से ही शान्ति होती है, अकेली विद्यासे ही सन्तोष होता है, और किसी जीवके प्राण नाश न करने से ही सुख मिलता है।

मनुष्य मीठा बोलने और महात्माओं के साथ प्रेम रखनेसे ही इस जगत् में प्रतिष्ठा पाता है।

जो मनुष्य न मिल सकने योग्य चीज़ को चाहता है और जो शक्ति-रहित होकर गुस्सा करता है,—ये दोनो मनुष्य अपने ही शरीरको नाश करते हैं।

गृहस्थ होकर काम-धन्धा न करनेवाले की और संन्यासी होकर काम करनेवाले की अप्रतिष्ठा होती है।

जो समर्थ होने पर भी क्षमा करता है, और निर्धन होने, भी दान करता है, वह स्वर्गके भी सिर पर रहता है।

अन्यायसे कमाये हुए धनके नाश होनेके दो ही कारण हैं,—कुपात्र को देना और सुपात्र को न देना।

जो मनुष्य धनवान होकर दान न करे और धनहीन होकर तपस्या न करे, उसके गलेमें पत्थर बँधवाकर उसे पानी में डुबो देना चाहिये।

जो सन्यासी होकर योग-साधन करता है और जो क्षत्रिय होकर रणभूमिमें प्राण त्यागता है, वह सीधा स्वर्गको जाता है।

मनुष्य तीन भांतिके होते हैं (१) उत्तम, (२) मध्यम, (३) अधम। उत्तम पुरुष को उत्तम, मध्यम को मध्यम, और अधमको अधम काम देना चाहिये। मतलब यह है कि, तीन तरहके आदमी और तीनही तरहके काम होते हैं। जो जिस योग्य हो, उसे वैसा ही काम देना चाहिये।

स्त्री, नौकर और बेटा,—ये तीन निर्धन कहलाते हैं। इन तीनोंके पास जो चीज होती है,उसका मालिक उनका मालिक ही होता है।

पराया धन छीनने, पर-स्त्रियोंसे व्यभिचार करने और अपने मित्रोंके त्याग देने,—इन तीन दोषोंसे मनुष्यका नाश होता है।

काम, क्रोध और लोभ,—ये तीनों ही नरकके दरवाज़े हैं। इन तीनोंसे मनुष्यका नाश होता है, अतएव इन तीनोंको बिल्कुल ही छोड़ देना चाहिये।

हे राजेन्द्र! वर पाना, पुत्र-जन्म होना, राज्य पाना और शत्रुको सङ्कटसे बचाना,—ये चारों सुख बराबर हैं।

कामको सिद्ध कर लेता है और अपने दुश्मनों को भी जीत लेता है।

जो मनुष्य विना मतलबके काम नहीं करता, आदमियों को घरसे नहीं निकालता, पापियोंसे सुलह नहीं करता, पर-स्त्रियोंसे बुरा काम नहीं करता, छल चोरी और चुगलखोरी नहीं करता तथा शराब वगैर नशीली चीजोंसे परहेज करता है,—वह हमेशा सुखी रहता है।

जो क्रोधके वश होकर धर्म, अर्थ और कामका सेवन नहीं करता, जो अनादर होने से दुःखी नहीं होता और जो मित्रों के साथ वाद-विवाद नहीं करता,—वह पण्डित कहलाता है।

जो शख्स किसीकी वृद्धि—उन्नति—देखकर नहीं जलता, जो कम बोलता है, जो वाद-विवादमें गम खाता है और क्रोध नहीं करता,—वह प्रशंसापात्र है।

जो मनुष्य सब किसी का प्यारा होना चाहे, उसे दुष्टोंकी चाल न चलनी चाहिये, अपने बल-भरोसे दुश्मनोंसे लड़ना न चाहिये और क्रोध में किसी को अप्रिय बात न बोलनी चाहिये।

जो मनुष्य शान्तस्वभाव आदमियों से शत्रुता नहीं करता, जो कभी घमण्ड नहीं करता और जो सदा अपने तईं तुच्छ समझ कर खोटा काम नहीं करता,—उसे 'आर्य्य पुरुष' कहते हैं।

राजा को नीचे लिखे हुए दोष छोड देने चाहियें, क्योंकि इन दोषोंसे राजाको कष्ट होता है और वह कुटुम्ब-सहित नाश भी हो जाता है —(१) अतिशय स्त्री सेवन, (२) जूआ खेलना (३) शराब पीना, (४) कडवी बातें मुंहसे निकालना (५) सख्त सजा देना, (६) काम बिगाडना, और (७) शिकार खेलना ।

मनुष्योंमें निम्नलिखित आठ गुण भूषण हैं :—(१) बुद्धि (२) अच्छे कुलमें जन्म, (३) इन्द्रियोंको वश करना, (४) पराक्रम, (५), विद्या, (६) थोडा बोलना,(७) श्रद्धा और शक्ति-अनुसार दान करना और (८) अपने उपकार—एहसान—करनेवाले के उपकार को मानना ।

शराब आदि पीनेवाला, मतवाला, बहुत से काम करने से घबराया हुआ, पागल, क्रोधी, जल्दबाज, लोभी, डरपोक और कामी,—ये दस प्रकाके मनुष्य सङ्गति करने लायक नहीं हैं। चतुर मनुष्यको इनसे दूर रहना चाहिये ।

जो मनुष्य किसीको निर्बल नहीं समझता, जो चतुराई से दुश्मनकी भी सेवा करता है, जो जोरावर से दुश्मनी नहीं करता और जो मौका पडने पर अपना बल दिखाता है,—वही बहादुर गिना जाता है ।

जो मनुष्य होशियार और चौकन्ना होकर अपने कार्य्य-साधनका उद्योग करता है,जो समय पडजानेपर दुःख सहता है और बुरे स्थान पर जाकर भयभीत नहीं होता, वह महात्मा कठिन

पशुओंका मित्र वैद्य है, मनुष्योंका मित्र राजा है, स्त्री का मित्र पति है और ब्राह्मणका मित्र वेद है।

सत्यसे धर्म की, योगसे विद्याकी, उबटनसे सुन्दरता की और अच्छे चाल चलनसे कुलकी रक्षा होती है।

जो मनुष्य पराये रूप, धन, बल कुल और सम्मानको देख कर कुढ़ता है, उसके रोगका इलाज नहीं है।

जो अपने कामको डर कर पहले ही छोड़ देता है, वह महाअज्ञानी समझा जाता है। जिस कार्य्यके करनेसे हानि होनेकी सम्भावना हो, वह काम मनुष्यको भूल कर भी न करना चाहिये और साथही अपनी राय भी जल्दी प्रकाशित न करनी चाहिये।

मूर्ख लोगोंमें विद्या, धन और महत्व,—ये तीन मद के कारण होते हैं, किन्तु ये ही तीनों सज्जनोंके लिए सुख-कारी होते हैं।

सुन्दर और साफ़-सुथरे कपड़े पहननेवाला सभाको जीत लेता है, सवारीवाला रास्ते को कुछ नहीं समझता और अच्छे स्वभाववाला मनुष्य सब को अपने वश में कर लेता है।

मनुष्य में शील ही बड़ा गुण है। शील के न रहने से मनुष्यके जीवन, धन और भाई बन्धु तथा मित्र आदिका भी नाश हो जाता है।

हे महाराज। निर्धन सदा मीठा भोजन करता है, क्योंकि

खाडा खाडा रस भी नही मिलता और साथ ही बीज भी नाश हो जाता है। जो चतुर पुरुष पके हुए फल तोडता है, उसे रस मिलता है और समय पर बीज की भी प्राप्ति होती है। उस बीज से फिर वृक्ष तय्यार हो जाता है और उसमें पुनः फल लगते हैं।

मनुष्य को भौंरे की चाल चलना पर उचित है। भौंरा पहले फूल की रक्षा करता है और पीछे उसका रस पीता है। भौंरा फूलोंका रस पीता है, किन्तु वृक्ष की जड नहीं काटता, उसी भांति मनुष्योंको करना चाहिये।

जिस भांति बाग का माली दरख्तोंसे फूल चुन लेता है, किन्तु उन्हें काटता नहीं, उसी भांति मनुष्यों को चलना चाहिये।

जिस तरह पत्थरों से आग निकाली जाती है, उसी तरह बुद्धिमान पुरुष मूर्खों से अच्छी बात, अच्छा काम और अच्छा धन्धा सीखले।

जिस तरह पत्थरोंके बीचसे सोना निकाल लिया जाता है, वैसे ही चतुर पुरुषको बालक और मूर्ख की बातों से भी सारांश निकाल लेना चाहिये।

जो धातु या लकडी आपसे आप मुड जाती है, उसे तपाने की ज़रूरत नहीं होती। धातु और लकडीकी भांति चतुर पुरुषको अपनेसे अधिक बलवान के सामने स्वयं नीचा हो जाना चाहिये।

पशुओंका मित्र मेघ है, संन्यासीका मित्र ग्राम है, स्त्री-का मित्र पति है और राजाका मित्र वेद है।

सत्यसे धर्म की, योगसे विद्याकी, उबटनसे सुन्दरता की और अच्छे चाल चलनसे कुलकी रक्षा होती है।

जो शख्स पराये रूप, धन, बल, कुल और सम्मानको देख कर कुढता है, उसके रोगका इलाज नहीं है।

जो अपने कामको डर कर पहले ही छोड़ देता है, वह महाअज्ञानी समझा जाता है। जिस कार्य्यके करनेसे हानि होनेकी सम्भावना हो, वह काम मनुष्यको भूल कर भी न करना चाहिये और साथही अपनी राय भी जल्दी प्रकाशित न करनी चाहिये।

मूर्ख लोगोंमें विद्या, धन और माहात्म्य,—ये तीन मद के कारण होते हैं, किन्तु ये ही तीनों सज्जनोंके लिए सुख-कारी होते हैं।

सुन्दर और साफ़-सुथरे कपडे पहननेवाला सभाको जीत लेता है; सवारीवाला रास्ते को कुछ नहीं समझता और अच्छे स्वभाववाला मनुष्य सब को अपने वश में कर लेता है।

मनुष्य में शील ही बड़ा गुण है। शील के न रहने से मनुष्यके जीवन धन और भाई बन्धु तथा मित्र आदिका भी नाश हो जाता है।

हे महाराज! निर्धन सदा मीठा भोजन करता है,

भूख लगने पर सब तरह की चीजें ही मीठी लगती हैं, धनवान को भूख नहीं लगती, इससे उसे मिष्टान्न भी मीठा नहीं लगता। दरिद्री लोग जठराग्नि प्रबल होने से काठ या पत्थर को भी पचा जाते हैं, किन्तु धनवान सुन्दर हल्का भोजन भी नहीं पचा सकते।

हे राजन्! धनका नाश शराबके नशेसे भी तेज होता है, क्योंकि धन के मद से उन्मत्त पुरुष मालिक और नौकर को तुच्छ समझता है।

जो अज्ञानी अपना मन वश में किये बिनाही अपने कुटुम्ब को वश में करना चाहे और जो पहले कुटुम्बको वश में किये बिना ही दुश्मनको जीतना चाहे, वह महामूर्ख है, उसका कोई कोई काम सिद्ध नहीं हो सकता। जो पहले अपने मनको अपने वशमें करता है,पीछे अपने कुटुम्बको अपने वशमें करता है, वह निस्सन्देह अपने शत्रुओं को परास्त कर सकता है।

इन्द्रियों को जीतनेवाले, दुर्जनों को दण्ड देनेवाले, जाँच-तोल कर काम करनेवाले और धैर्यशील पुरुषके पास लक्ष्मी जाती है।

हे राजन्! यह काया रथ है। आँख कान प्रभृति दशों इन्द्रियाँ घोड़े हैं और मन सारथी है। चतुर मनुष्य को इस कायारूपी रथमें होशियारीसे चलना चाहिये।

दुर्जनों की सङ्गति न करनी चाहिये, क्योंकि बुरों की

संगतिसे अच्छा सज्जन भी मारे जाते हैं। सभी जानते हैं कि, सूखी लकड़ीके साथ गीली लकड़ी भी जल जाती है।

हे राजन्! दुष्ट लोगोंमें शान्ति मधुरता, पवित्रता, सन्तोष, मीठे वचन, सच और स्थिरता (एक बात पर कायम रहना,) आत्मज्ञान, दान, पुण्य, धर्म और अपनी कही हुई बातकी पकाई, ये उत्तमोत्तम गुण नहीं होते।

हे राजेन्द्र! मीठी बात बोलनेसे सुख, बढ़ता है, कड़वी बातसे दुःख बढ़ता है, कुल्हाड़ी द्वारा काटा हुआ वृक्ष फिर बढ़ जाता है, तीर का घाव भी फिर भर जाता है, किन्तु वचनरूपी तीर द्वारा हुआ घाव फिर नहीं भरता। तीर को भले ही वैद्य निकाल सकता है, किन्तु बात की चुभी हुई नोक को वैद्य भी नहीं निकाल सकता, क्योंकि वह दिलके भीतर चुभ कर खटका करती है।

मुँहसे निकली हुई कड़वी बात मनुष्यके मर्मस्थानोंमें छिद जाती है। इसलिये कड़वी बात सुननेवालेके दिलमें खटकती रहती है और वह रात-दिन उसी उधेड़ बुनमें लगा रहता है। चतुर पुरुष को किसीसे कड़वी अथवा बुरी लगनेवाली बात न कहनी चाहिये।

तकदीर जिसे तकलीफ देना चाहती है, उसकी अक्लको पहलेसेही नाश कर देती है। अक्लके मारे जानेसे मनुष्य बुरे काम करने लगता है। जब नाश होने का वक्त नज़-

दांव आता है, तब अक्ल औरभी मारी जाती है, फिर मनुष्य ... इससे अधर्म और अन्याय घर कर लेते हैं।

मदिरा पीने, झगड़ा करने, शत्रुता करने, स्त्री-पुत्र और जात-बिरादरीवालोंसे मन-मुटाव रखने तथा वाद-विवाद करने को बड़े लोग बुरा कहते हैं और सबको ऐसे कर्मों से बचने की सलाह देते हैं।

चतुर मनुष्य निम्नलिखित आदमियों को कभी गवाह न बनाये —हस्त-रेखायें देखकर फल बतानेवाला, कम तौलने वाला बनिया, पाखण्डी ज्योतिषी, दोस्त, दुश्मन तथा रण्डी का भड़ुआ।

जो मनुष्य जगत्में सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त करनेके लिये अग्निहोत्र, विद्याभ्यास तथा यज्ञ करता है, उसका भला नहीं होता ; किन्तु जो शख्स उपरोक्त कर्मों को बिना किसी प्रकार की इच्छाके करता है, उसका कल्याण होता है।

घरमें आग लगानेवाला, विष देनेवाला, हथियार बनानेवाला, अधूरा ज्योतिषी, मित्रसे द्रोह रखनेवाला, पर-स्त्रियों से बुरा कर्म करनेवाला, गर्भ गिरानेवाला, गुरुके पलँग पर पैर रखनेवाला, ब्राह्मण होकर शराब पीनेवाला, वेदकी निन्दा करनेवाला, ईश्वर को न माननेवाला, डाकू, पराई चीज जबरदस्ती छीननेवाला,—ये सब लोग ब्रह्महत्यारेके समान पापी होते हैं।

सुन्दरता को परीक्षा उजियालेमें होती है, धर्मकी परीक्षा

चालचलनसे होती है, सज्जनता की परीक्षा काम पड़नेसे होती है, बहादुरी की परीक्षा लड़ाईके समय होता है, बुद्धिमानोंकी परीक्षा कठिन कामके समय और मित्रों की परीक्षा आपत्तिकालमें होती है।

बुढ़ापा सुन्दरता को नाश कर देता है, आशा धीरज को नाश कर देती है, मौत प्राण नाश कर देता है, दुर्जनता धर्म का नाश कर देती है, क्रोध धनका नाश कर देता है, दुष्ट आदमी की चाकरी शीलता को नाश कर देती है, स्त्री-इच्छा लज्जा को नाश कर देती है और घमण्ड सबही गुणोंको नाश कर देता है।

अच्छे-अच्छे काम करनेसे धन मिलता है, और गम्भीरतासे बढ़ता है तथा इन्द्रियोंके जीतनेसे वह मनुष्यके पास चिरस्थायी हो जाता है।

बुद्धिमान होनेसे, अच्छे कुलमें जन्म लेनेसे, इन्द्रियों को जीतनेसे, विद्याभ्यास करनेसे, पराक्रम दिखानेसे, दान देने, शक्ति-अनुसार बोलने तथा अपने उपकारीके उपकारको माननेसे मनुष्य प्रसिद्ध होता है।

यज्ञ करना, विद्याभ्यास करना, दान देना, तप करना, सच बोलना, क्षमा करना, दया रखना और लालच न करना— ये आठ धर्मके रास्ते हैं। इन आठोंमेंसे पहले चार पाखण्डी लोग भी कर सकते हैं, परन्तु शेषके चार धर्मों को महात्म-पुरुषोंके सिवा और लोग नहीं कर सकते।

जिस सभामें बूढे पुरुष न हों, वह सभा नहीं है। जो धर्मकी बात न कहें, वह बूढे नही हैं। जिसमें सत्य न हो वह धर्म नहीं है और जिसमें छल कपट हो, वह सत्य नहीं है।

पापी को पापका बुरा फल मिलता है और धर्मात्मा को धर्मका अच्छा फल मिलता है। धर्मात्मा मनुष्यको पाप-कर्म से बचना चाहिये। बारम्बार पाप करनेसे बुद्धि घटती है और ज्यों ज्यो बुद्धिका नाश होता है त्यों त्यो मनुष्य अधिक पाप करता है। धर्म करनेसे बुद्धि बढती है। बुद्धि बढनेसे मनुष्य धर्महो धर्मसे लगा रहता है। धर्मके प्रभावसे मनुष्य की कीर्त्ति बढती है और जिसकी कीर्त्ति होती है, वह स्वर्गमें जाता है।

दूसरेको देखकर जलनेवाला, पराया काम बिगाड़नेवाला, कठोर बात कहनेवाला, सब किसीसे शत्रुता रखनेवाला और दुष्ट मनुष्य की चाल पर चलनेवाला मनुष्य नाश हो जाता है।

जो परायी उन्नति देखकर नहीं कुढता और अपनी बुद्धि को ठिकाने रखता है, वह सदा सुख पाता है।

मनुष्य को चाहिये कि दिनमें ऐसा काम करे, जिससे रात को सुखसे सोवे और आठ महीने ऐसा काम करे,जिससे बारह महीनें सुख पावे। पहली उम्रमें ऐसा काम करे, जिससे बुढापेमें सुख पावे और ज़िन्दगी भर ऐसा काम करे, जिससे मरने पर सुख मिले।

भोजन की प्रशंसा उस समय करना चाहिये, जब कि वह भली-भाँति पच जावे। स्त्री की तारीफ तब करनी चाहिये, जब वह भलमनसईसे जवानी बिता दे। और पुरुषकी तारीफ उस समय करनी चाहिये, जब कि वह लड़ाईमें विजय प्राप्त करे और तपस्वी की प्रशंसा उस समय करनी चाहिये, जब वह तपस्या पूरी कर ले।

शूरवीर, विद्वान् और सेवा करने का ढंग जाननेवाला मनुष्य सोनेसे फूली हुई पृथ्वी का सुख भोगते हैं।

महामुनि आत्रेयने शिष्योंसे कहा था, कि दिलमें कपट न रखना, सच बोलना और सब जीवोंके सुख-दुःखको अपने दुःख सुखके बराबर समझनाही धर्म है।

तुमसे जो शख्स तुम्हारा दिल बिगाड़नेवाली कठोर बात कहे, उसका जवाब मत दो और अपने क्रोधको रोको। तुम्हारा रुका हुआ क्रोध बुरी बात कहनेवाले को नाश कर देगा और क्षमाके प्रतापसे तुम्हारा भला होगा।

चतुर मनुष्य को चाहिये कि किसीसे दिल बिगाड़नेवाली बात न कहे, किसीका अपमान न करे, घमण्ड न करे, नीचकी चाकरी न करे, मित्रोंसे शत्रुता न करे, नीच कर्म न करे और किसीसे रूखी बात न बोले।

मनुष्य को चाहिये कि रूखी बात किसीसे न कहे, क्योंकि रूखी और कड़वी बात मनुष्यके मर्मस्थान, हृदय, हड्डी और प्राणको जलाकर खाकर देती है। रूखी वाणीसे धर्म नाश

छोड़ देते हैं जिस भांति हंस जलहीन तालाब को छोड़ देते हैं।

जिसका चित्त नदी की नावकी भांति चञ्चल हो, जो बिना किसी कारणके क्रोध करे और बिना किसी वजहके राजी हो जाय, वह मूर्ख है।

मनुष्य बारम्बार पैदा होता और बारम्बार मरता है, बारम्बार धनवान और बारम्बार निर्धन होता है, बारम्बार भीख माँगता है और बारम्बार दानी बनाता है। कभी वह खुद शोकके वशीभूत होता है और कभी शत्रुओंको शोक कराता है। सुख, दुःख, मरण और जीवन प्रायः सदा हुआ ही करते हैं, अतः मनुष्यको चाहिये कि सुख और दुःखको सुख दुःख न माने।

हे राजेन्द्र! विद्या, तपस्या, इन्द्रिय-दमन और निर्लोभता इनके सिवा मुझे और कोई शान्तिका उपाय नजर नहीं आता।

बुद्धिसे भयका नाश होता है, तपस्या करनेसे मोक्ष मिलती है, गुरुओं की सेवा करनेसे ज्ञान की प्राप्ति होती है और योग-साधन करनेसे शान्ति मिलती है।

अच्छा विद्याभ्यास करने, अच्छा युद्ध करने, अच्छे कर्म और उत्तम तपस्या करने का फल अन्त में मिलता है।

जिसके मनमें किसी प्रकार का दुःख होता है वह न तो चारण-भाटों की स्तुति गान से, न मनमोहिनी स्त्रियों के हाव-भाव से प्रसन्न होता है।

जिस भाँति अनेक डालों पत्तों और फलोंसे लदा हुआ अकेला वृक्ष हवाके झकोरोंसे गिर पड़ता है, उसी भाँति अकेला आदमी दुश्मनोंसे मारा जाता है।

जिस जगह बहुतसे वृक्ष एक दूसरे से सटकर पास-पास लगे रहते हैं, वहां तेज हवाके झकोरे कुछ नहीं कर सकते; क्योंकि वह आपस में मिले हुए रहते हैं। जो आपसमें मिले रहते हैं उन पर शत्रुका बस नहीं चलता।

अन्याय-कर्मों से पैदा किया हुआ धन वंशका नाश कर देता है, किन्तु न्यायसे कमाया हुआ धन बेटों पोतों तक स्थिर रहता है। अतः मनुष्यको सुमार्ग से ही धन संग्रह करना चाहिये।

जो घूँसोंसे आकाश को पीटना चाहता है, जो आकाशके इन्द्र-धनुष को नवाना चाहता है, जो सूरज और चन्द्रमा की किरणों को पकड़ना चाहता है, जो दुष्टको उपदेश देता है, जो थोड़े नफेसे राज़ी हो जाता है, जो बहुत दिन तक दुश्मन की चाकरी करना चाहता है, जो स्त्री की रक्षा करके अपनी भलाई चाहता है, जो न कहने लायक़ बात कहता है, जो कोई अच्छा काम करके अपनी प्रशंसा आप करता है, जो अच्छे कुलमें जन्म लेकर नीच कर्म करता है, जो कमजोर होकर ज़बरदस्त से बैर करता है, जो अविश्वासी से अपनी बात कहता है, जो न करने लायक़ कामके करने की इच्छा रखता है, जो पुत्र-वधू से हँसी-ठट्ठा करता है, पुत्रको वह से

...ह नही मरता, जो दूसरे के खेतमें अपना वीज वोता है, जो स्त्रियोंसे वाद करता है, जो किसीका धन लेकर कहता है कि हमे याद नही हमने तुम्हारा धन कब लिया, जो भिखारीके आगे अपनी तारीफ करता है और दुर्ज्जन को सज्जन बनाना चाहता है, वह मूर्ख है। इन सत्तरह प्रकारके मनुष्योंको बाँधने के लिये, मृत्युके समय, यमदूत हाथोंमे फांसी लेकर आते हैं।

जो शख्स जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिये। दुर्ज्जनके साथ दुष्टता और सज्जनके साथ साधुताका बर्ताव करना चाहिये।

वृद्धावस्थासे सुन्दरता, आशासे धैर्य्य, मृत्युसे प्राण, द्वेषसे धर्म, स्त्री-इच्छासे लाज, दुष्टकी चाकरी से सुचरित्रता और क्रोधसे लक्ष्मी नाश हो जाती है, किन्तु घमण्ड से तो सब कुछ ही नाश हो जाता है।

बहुत घमण्ड करने, बहुत झगडा-फिसाद करने, किसीको चीज न देने, क्रोध करने, अपना ही पेट पालने और मित्रोंसे शत्रुता रखने से मनुष्य की उम्र घट जाती है। उपरोक्त छ दोष मनुष्य की उम्र काटने में तेज तलवारका काम करते हैं। मौत से कोई नहीं मरता। जो मरता है, उपरोक्त दोषों से मरता है।

जो अपने ऊपर विश्वास रखनेवाले की स्त्री से सम्भोग करता है, जो ब्राह्मण-वंश मे जन्म लेकर वेश्यागमन करता है

अथवा शराब पीता है, जो ब्राह्मणों की आजीविका नाश करता है और उन्हें नौकर रखता है,—वह ब्रह्महत्यारे के समान पापी समझा जाता है।

जो विद्वानों की बात मानता है, नीति-शास्त्रको जानता है, सब कुटुम्ब से बचा हुआ अन्न आप खाता है, किसी को देखकर नहीं जलता, बिना बुरा काम किये नहीं घबराता, दूसरे के किये उपकार को मानता है, सच बोलता है और सब के साथ नम्रता से वर्त्ताव करता है,—वह विद्वान् है। ऐसा मनुष्य स्वर्ग को जाता है।

हे राजेन्द्र! हमेशा मीठी मीठी बातें कहनेवाले मनुष्य बहुत हैं, किन्तु कड़वी और हितकारी बात के कहने और सुननेवाले बहुत कम हैं। जो मनुष्य राजा के प्रेम और क्रोध का ध्यान भुलाकर, कड़वी और हितकारी बात कहता है, वही राजाका सच्चा मददगार है।

बुद्धिमानको चाहिये कि कुटुम्ब की भलाई के लिये एक आदमी को त्याग दे, गाँव की भलाई के लिये कुटुम्ब को छोड़ दे, नगर की भलाई के लिये गाँव को छोड़ दे और अपनी भलाई के लिये कुटुम्ब, गाँव और नगर आदि सब को छोड़ दे।

विपत्तिकालके लिये धन बचाकर रखना चाहिये, धन से कुटुम्ब की रक्षा करनी चाहिये, किन्तु अपनी रक्षा धन और स्त्री दोनो से ही करनी चाहिये।

...आ वैर की जड है, अत बुद्धिमानो को हँसी में भी ...आ न खेलना चाहिये। पहले समय में जिन्होंने जूआ खेला, उन्होंने घोर कष्ट पाया।

जो नौकर अपने मालिक की बातों पर ध्यान न दे, उसकी बातों का अनादर करे, कडवी वाणी बोले, कहे हुए कामको न करे और अपनी अक्ल का घमण्ड करे,—उस नौकर को फौरन से पहले निकाल देना चाहिये।

८ अल्प-भोजी मनुष्य को रोग नहीं होता। थोडा खानेवाले के आयु, बल और सुख बढते हैं तथा उसका पुत्र बलवान होता है। महात्मा लोग बहुभोजी मनुष्यको बुरा कहते हैं।

जो मनुष्य दान न दे, गाली दे, विद्या न पढे, सदा वनमें रहे, आदर-योग्य मनुष्य का आदर न करे, दयाहीन हो, हर किसी से दुश्मनी करे और किसी का उपकार न माने,—वह खराब आदमी है। ऐसे आदमी से घोर दुःख पडने पर भी भीख न माँगनी चाहिये।

जो हमेशा बुरे काम करे, जो सदा गलतियाँ करे, जो हमेशा झूठ बोले, जिसकी प्रीति का टिकाव न हो, जिसके मन में प्रेम-भाव न हो, जो अपने तई बहुतही होशियार माने, उससे भूल कर भी प्रेम न करना चाहिये।

धनसे सहायता करनेवाले मिलते हैं और सहायको से धन की आमद होती है। धन और सहायकों का आपस में

ऐसा सम्बन्ध है कि, बिना एक के दूसरे का काम ही नहीं निकल सकता।

मनुष्य को चाहिये कि पुत्र को विद्या पढ़ावे, उसको सब तरह के ऋण से उऋण करदे और शेष में उसे धन्धे से लगादे। कन्या हो तो उस को शादी, अच्छा वर और घर देख कर, कर दे। अन्त में आप वन में जाकर तप करे।

जो मनुष्य अपनी उन्नति करना चाहता है, जो उद्योग और कामका निश्चय रखता है तथा जिसमें तेज, साहस, शक्ति और धर्म होता है,—उससे दरिद्रता कोसों दूर भागती है।

मनुष्यको चाहिये कि, सुखकी इच्छा करने के पहले धर्म-कार्य करे, जिस भांति स्वर्ग में अमृतका, नाश नहीं होता, उसी भांति धर्मात्मा का अर्थ नाश नहीं होता।

जो मनुष्य समयानुसार धर्म, अर्थ और काम का सेवन करता है, वह इन तीनों के अभाव से मुक्त हो जाता है।

हे राजन्। जो आफ़त आजाने पर भी नहीं डरता तथा जो क्रोध और हर्ष के वशीभूत नहीं होता, वही सुख भोग करता है।

चतुर पुरुष, स्त्री, राजा, सर्प, मालिक, दुश्मन, भाग्य और उम्रका विश्वास नहीं करते।

गृहस्थ के घर में जब कोई शख् स आवे, तब उसे बैठने को आसन और पीनेको जल देना चाहिये, पीछे उसका क्षेम-कुशल पूछकर, उसे भोजन आदि कराना चाहिये।

वेद पढ़ा हुआ ब्राह्मण जिस मनुष्य से मधुपर्क, गौ औ
ौ जल न पावे, उसका जन्म वृथा ही समझना चाहिये।

जिसके स्वभाव में क्रोध न हो, जो समस्त पदार्थों
लोहे के समान समझे, जिस के दिल में शोक घर न कर स
जो निन्दा और प्रशंसा को समान समझे, जो बिना मत
भ्रमण करता हो, उसे भिक्षुक कहते हैं। उसका सब त
से सम्मान करना चाहिये।

चतुर मनुष्य से शत्रुता करके ऐसा न समझना चाहि
कि मैं दूर हूँ, क्योंकि चतुर मनुष्य के हाथ बड़े ल
होते हैं। वह दूर बैठा हुआ ही अपने शत्रु का नाश
सकता है।

विश्वास-योग्य मनुष्य का विश्वास करना चाहिये।
विश्वास-योग्य नहीं है उसका विश्वास नहीं करना चाहि
अविश्वास-योग्य का विश्वास करने से सर्व्वनाश हो जाता

मनुष्यको किसी की मसखरी न करनी चाहिये, अ
घरकी स्त्रियों को अपने वशमें रखना चाहिये, किसीका वि
न छीनना चाहिये। सदा मीठी वाणी बोलना और नम
रखना उचित है। स्त्रियों से सदा मीठा बोलना जरूरी
किन्तु उनके अधीन होजाना अच्छा नहीं है।

महाभाग्यवती और पुण्यवती स्त्री आदर-योग्य है, क्यों

जान सके, वह राजा सब जगह की खबर रख सकता है और उसका राज्य बहुत दिन तक रहता है।

मनुष्य को चाहिये कि जब तक काम सिद्ध न हो जाय, तब तक उस कामका भेद किसी को न दे। जब काम बन जाय, तब बेखटके उसे कामको प्रकाशित कर दे।

राजा को जब धर्म्म या राज्य सम्बन्धी कामोंका विचार करना हो, तब ऐसे एकान्त स्थानमें बैठे जहाँ कोई न जासके। सलाह-सूत करनेके लिये पर्वत की चोटी, एकान्त अटारी और बिना घास का जङ्गल अच्छा समझा जाता है।

अपनी मन की बात मूर्ख मित्र, रोगी और दुश्मन से हरगिज न कहनी चाहिये और जाँच किये बिना किसीको अपना सलाहकार अथवा मन्त्री न बनाना चाहिये।

जो शख्स बुरे काम करता है, वह उन कामोंके हो चुकते ही आप भी हो चुकता है अर्थात् नाश हो जाता है। अच्छे कर्म्म करने से सुख मिलता है और अच्छे कर्म्म न करनेसे पीछे पश्चात्ताप करना पड़ता है।

जो बिना कारणके क्रोध नहीं करता और बिना कारण के खुश नहीं होता, जो खुद अपने हाथों से काम करके देखता है, जो अपने धन की सम्हाल आप रखता है, वह राजा बहुत दिन तक राज्य करता है।

दुश्मन को पकड़ कर कभी नहीं छोड़ना चाहिये। यदि ताक़त हो तो अवश्य नाश कर देना चाहिये। जीते हुए शत्रु को छोड़ देने से भारी हानि होनेका खटका रहता है।

..., ब्राह्मण, बूढ़े, बालक, राजा और रोगी पर कभी नाराज न होना चाहिये। बुद्धिमान् को उचित है कि मूर्खों की भांति लड़ाई-झगड़ा न करे, क्योंकि वैर-विरोध करने से बदनामी होती और आफ़त आती है।

जिसके खुश होने से कुछ फायदा न हो और जिस के नाराज होने से कुछ नुकसान न हो, ऐसे मालिक को नौकर लोग इस भांति त्याग देते हैं जिस भांति स्त्रियाँ नपुँसक पतियों को त्याग देती हैं।

जो विद्या, बुद्धि, शील, जाति और उम्र में बड़े हैं, उनका अनादर मूर्खों के सिवा और कौन करता है? अर्थात् उनका निरादर मूर्ख ही करते हैं और सब लोग तो आदर ही करते हैं।

दुश्चरित्रवालों, मूर्खों, परायी निन्दा करनेवालों, क्रोध करनेवालों तथा अधर्म्म करनेवालों पर ही विपत्ति पड़ती है।

छल न करने, दान देने, मर्य्यादा रखने और सबके भलेकी बात कहने से दुश्मन भी दोस्त हो जाते हैं।

किसी से छल न करनेवाला, सब काम करने की शक्ति रखनेवाला, पराया एहसान—उपकार—माननेवाला और सरल स्वभाव का मनुष्य, निर्धन होनेपर भी, सबका मित्र बना रहता है।

जिसका चित्त हर समय स्त्रियों में लगा रहता है, जो बावले और नीच लोगों की सगति करता है, जो दुष्ट लोगोंसे

मसर्ग रखता है,—वह अच्छा आदमी नहीं है। ऐसे मनुष्यसे दूर ही रहना चाहिये।

जिस घर में स्त्री, कपटी या बालक का अधिकार हो अथवा जिस घर में इनकी बात चलती हो वह घर इस भाँति डूब जाता है जिस भाँति नदी में पत्थर डूब जाता है।

जो मनुष्य अपनी प्रयोजन-सिद्धि से ही मतलब रखता है और बहुत तृष्णा में नहीं पड़ता, हम उसे पण्डित कहते हैं।

हे राजेन्द्र! कोई मनुष्य तो दान करने से, कोई मीठो-मीठी बातें करने से और कोई अच्छी-अच्छी सलाहें देने से जगत् का प्यारा होता है।

विद्वान् और चतुर लोगों को वैर-विरोध करना उचित नहीं है। उन्हें मित्र के साथ मित्रता का और शत्रु के साथ शत्रुताका बर्ताव करना चाहिये।

दुष्ट आदमी पराई निन्दा किया करते हैं, दूसरों को सङ्कट में फँसा देखकर प्रसन्न होते हैं और नित्य सवेरे सोकर उठते ही लड़ाई-झगड़े करने की तदबीरें सोचते हैं।

जिनके देखनेसे ही पाप लगता है,उनके साथ बैठने से बड़े भारी भय की सम्भावना रहती है, ऐसे लोगों को धन देने और उनसे धन लेने, दोनों बातोंमें ही भय है।

अपना मतलब गाँठनेवाले,आपस में वैर-विरोध करनेवाले, दुष्ट और वेश्या लोगों की संगति कदापि न करनी चाहिये; क्योंकि जब ऐसे लोगों से प्रेम नहीं रहता, तब सब सुख ना

ना न ते हैं। मित्रता का सुख दुष्ट मनुष्यों के साथ प्रेम करने से नहीं मिलता अत ऐसे स्वार्थी और नीच लोगोंसे पहले ही प्रेम न करना चाहिये।

दुष्ट मित्र अपने मित्र की बदनामी और हानिकी तदबीरें करता है और जरासा अपराध हो जाने पर भी जामे से बाहर हो जाता है। पीछे बडी-बडी कठिनाइयों से भी शान्त नहीं होता। इसलिये बुद्धिमान को उचित है कि दुष्ट, कपटी और अयोग्य मित्र को पहचान कर दूर से ही हाथ जोड दे।

अपने जाति-भाइयो के साथ बैठकर भोजन करना चाहिये, उन लोगो से प्रेमपूर्वक अच्छी-अच्छी बाते करनी चाहियें, क्योंकि जाति ही मनुष्य को डुबो देती है और वही पार लगा देती है।

मनुष्य को बिना विद्या अभ्यास किये और बिना वृद्ध पुरुषों की सेवा किये कुछ भी काम न करना चाहिये।

चाहे अच्छे कुल में जन्म हो, चाहे बुरे कुल मे, जो शख्स धर्म की मर्य्यादा को नहीं तोडता और इन्द्रियों के अधीन नहीं होता तथा जो विद्वान् और ज्ञानवान है, वह मनुष्य अच्छे कुल में जन्मे हुए मनुष्यो से अच्छा समझा जाता है।

जिन मित्रो के दिल मिले हुए है, जो आपस के सुख को सुख और दु.ख को दु ख समझते है, जिनकी बुद्धि समान है, उनका प्रेम-भङ्ग कदापि नहीं होता।

मूर्ख, घमण्डी, क्रोधी, साहसी और पापी से प्रेम न करना चाहिये, किन्तु ज्ञानवान धर्मात्मा, सत्यवादी, गम्भीर, प्रेमी, जितेन्द्रिय और धर्मकी मर्य्यादा न तोड़नेवाले सज्जनों से प्रेम करना चाहिये।

उद्योग करनेसे ही लाभ होता है, उद्योग से ही धन और सुख मिलता है। उद्योगी मनुष्य सदा सुख भोग करता और धन-सञ्चय करता है। उद्योग के समान अच्छा कर्म और नहीं है।

जिस काम के करने से मनुष्य धर्म और यश का नाशक न हो, वही काम मनुष्य को करना चाहिये। बुद्धिमान को भूल कर भी अधर्म और अपकीर्त्ति का काम न करना चाहिये।

हे भारत! मूर्ख, रोगी, शराबी, और आलसियों को धन-लाभ नहीं होता तथा जो मनुष्य अजितेन्द्रिय और निरुत्साही हैं, उनके पास लक्ष्मी भूलकर भी नहीं आती।

जो नम्रता से रहता है, सच बोलता है और लज्जा रखता है, उसे मूर्ख लोग भले ही असमर्थ समझें किन्तु उन्नति के शिखर पर वही चढ़ता है।

जो मनुष्य खूब उद्योग करता है, युद्धसे मुँह नहीं मोड़ता, अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहता है और हरेक काम को खूब सोच-समझ कर करता है, वह सदा सुखी बना रहता है।

वेदों का फल यज्ञ है, विद्या का फल शील है, स्त्रीका फल रति है और धन का फल धर्म है।

अपनी उन्नति का ख्याल रखना, एवं ऐसा उद्योग करना जिससे उन्नति हो, इन्द्रियो को अपने अधीन करना, सब तरह के काम करना, गलती न करना, सब बातों को याद रखना और हरेक काममें विचार कर हाथ डालना,—ये सब उन्नति की जड है।

स्त्री, धूर्त्त, आलसी, अभिमानी, डरपोक, दुष्ट, चोर, वेद या ईश्वर की निन्दा करनेवाले तथा उपकार न माननेवाले का विश्वास भूलकर भी न करना चाहिये।

जो धन बहुत से कष्ट उठाने, अधर्म-कार्य्य करने और दुश्मन के सामने गिडगिडाने से हाथ आवे, उस धनकी इच्छा कदापि न करनी चाहिये। वैसे धन से धन-हीन रहना ही अच्छा है।

जो दान से मित्रों को, युद्ध से शत्रुओ को और खानपान एवं वस्त्रादि से कुटुम्बको जीतता है,—उसीका जीना सफल है।

जो प्रतिष्ठा लाभ करने पर घमण्ड छोड देता है और अपनी शक्ति-अनुसार उत्तम कर्म करता है, वह बहुत जल्दी सुखी होता है।

झूठसे धन कमाना, राजा से चुगलखोरी करना और गुरु की निन्दा करना—ये तीनों पाप ब्रह्महत्या के बरा बर हैं।

विद्यार्थियोंको सुख नहीं है और सुखार्थियों को विद्या नहीं है, अतः जो विद्याके चाहनेवाले हैं उन्हें सुख से मुँह मोड़ लेना चाहिये और जो सुख के अभिलाषी हैं उन्हें विद्या को तिलाञ्जलि दे देनी चाहिये।

अग्नि काठसे नहीं अघाती, स्त्री पुरुष से नहीं धापती, समन्दर नदियों से तृप्त नहीं होता और काल प्राणियों को चटनी करने से सन्तुष्ट नहीं होता।

मनुष्य को उचित है कि अपने जीवन और धनके लोभ से अथवा स्त्री और भय के कारण से धर्म को न छोड़े, क्योंकि धर्म का नाश कभी नहीं होता, किन्तु सुख दुःख का नाश जल्दी ही हो जाता है।

हे राजेन्द्र! आप विचार कर देखिये तो सही, कि इस भूतल पर कैसे-कैसे प्रतापी राजा हो गये हैं, जिन्होंने पृथ्वीके एक छोर से दूसरे छोर तक राज्य किया और सांसारिक सुख-ऐश्वर्य भोगे, लेकिन मरने के समय,सब राज पाट, महल मकान और सुख के समस्त सामान छोड़कर खाली हाथ चले गये।

मनुष्य अपने प्यारे, आँखों के तारे पुत्र को, मर जाने पर जङ्गल में ही छोड़ कर चल देता है अथवा उसे चिता में रखकर जला देता और बाल बखेर कर रोता है परन्तु उस मरनेवालेके साथ कोई जाता नहीं।

मृत मनुष्यके धन-जायदाद को दूसरे ही भोगते हैं। उस के हाड मांस और खून को अग्नि जला-बला कर भस्म कर देता है। उसकी आत्मा के साथ कोई नहीं जाता। साथ जाते हैं, केवल पाप और पुण्य।

मरे हुए मनुष्य को जाति-बिरादरीवाले और कुटुम्बी लोग इस भांति त्याग देते हैं, जिस भांति फल-फूल-रहित वृक्ष को पखेरू त्याग देते हैं। उसका साथ कोई नहीं देता। जलते हुए मनुष्यके साथ उसके कर्म ही जाते हैं, अत: मनुष्य को यत्न करके धर्म ही करना चाहिये।

हे भारत! आत्मा नदी है। उसमें पुण्य-रूपी जल भरा है। सत्य और धारणा उस नदी के किनारे हैं, परन्तु उस नदीमें क्रोध और काम ये दो बड़े-बड़े मगर घूम रहे हैं। जो मनुष्य इन दोनों से बचकर उस नदी में स्नान करता है, वह बहुत सुख पाता है। हे महाराज! आप धारणा-रूपी नाव पर चढ़कर इस नदी के पार हो सकते हैं।

जो ब्राह्मण नित्य स्नान करता है, नित्य जनेऊ बदलता है, नित्य वेद-पाठ करता और सच बोलता है एवं गुरु की सेवा करता और नीच मनुष्यका भोजन नहीं करता, वह अपने धर्म से च्युत नहीं होता।

जो क्षत्रिय के घर में जन्म लेकर वेदों का पाठ करता है, यज्ञ करता है, प्रजा की रक्षा और पालना करता है और गौ

तथा ब्राह्मण के लिये संग्राम भूमि में प्राण देदेता है वह सीधा स्वर्ग को जाता है।

जो वैश्य होकर वेदोंको पढ़ता है और मौका पड़नेपर ब्राह्मण, क्षत्रियों तथा नौकरों को धन देता और यज्ञ के धूएं को सूँघ कर पवित्र होता है, उसका कल्याण होता है।

जो शूद्र होकर ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य की सेवा करता है और उनको हर तरह राजी रखता है, वह मरने पर स्वर्ग को जाता है।

विदुर बोले—महाराज! इस समय पाण्डव लोग क्षत्रियोचित धर्म से नीचे गिरे जाते हैं, अतएव आप उनकी रक्षा कीजिये।

धृतराष्ट्र बोले—हे विदुर! जो तुम कहते हो, सभी हमारी बुद्धि में आता है, परन्तु न जाने दुर्योधन के सामने आते ही हमारी मति क्यों पलट जाती है? इस से यह प्रतीत होता है कि, पुरुषार्थ की अपेक्षा प्रारब्ध ही बलवान है, प्रारब्ध का उल्लङ्घन करना असम्भव है, अत पुरुषार्थ को हम व्यर्थ समझते हैं।



# भर्तृहरि-नीति ।

मूर्ख मनुष्य समझा-बुझाकर सरलता से वश में किया जासकता है, बुद्धिमान मनुष्य और भी सरलता से वश में किया जासकता है, किन्तु जिसको थोडासा ज्ञान है उसको ब्रह्मा भी रास्ते पर नहीं लासकता।

मूर्ख मनुष्य यदि कोई बुरा काम करने लगता है, तो बुद्धिमान-विद्वान् मनुष्य उसे युक्ति और तर्क-वितर्कसे समझा-बुझा कर अच्छे रास्ते पर ला सकता है। यदि कोई बुद्धिमान मनुष्य प्रमाद या भ्रम-वश खोटे रस्तेपर चलने लगता है, तो उसे ज्ञानवान मनुष्य बहुतही आसानी से कुमार्गसे हटाकर सुमार्ग पर लासकता है, किन्तु जो न तो बिल्कुल

मूर्ख हो है और न बिल्कुल पण्डित ही है वह थोड़ा जाननेवाला, मूर्ख और पण्डित की बीच की अवस्था का मनुष्य, ब्रह्मा के समझाने-बुझाने से भी असत् मार्ग को छोड़कर सत्-मार्ग पर नहीं आ सकता। जब ब्रह्मा ही थथपन मनुष्य को समझाकर सुमार्ग पर लानेमें असमर्थ है, तब मनुष्यों से क्या हो सकता है?

मनुष्य अपने बल से मगर की डाढ़ों में से मणि को निकाल सकता है, चञ्चल लहरों से भरे हुए समुद्र को अपनी भुजाओं के बल से तैरकर पार कर सकता है, क्रोध से भरे हुए भुजङ्ग—साँप—को फूल की भाँति सिर पर धारण कर सकता है, किन्तु हठ पर चढ़े हुए मूर्ख को उस को हठ से नहीं हटा सकता।

यह बात असम्भव है, कि कोई मनुष्य मगरके दाँतोंसे मणिको निकाल सके, यह भी असम्भव है कि कोई लहरों से उथल-पुथल समुद्र को अपनी भुजाओं के बल से तैर कर पार कर सके। यह भी अनहोनी बात है, कि कोई काले भुजङ्ग को फूल की भाँति सिरपर धारण कर सके। सम्भव है कि उपरोक्त तीनों असम्भव काम सम्भव हो जायँ अर्थात् कोई मनुष्य उन तीनों कामों को किसी भाँति कर भी सके, लेकिन यह बिल्कुल अनहोनी बात है कि, उक्त तीनों कामों की शक्ति रखनेवाला मनुष्य भी मूर्ख को उसके असत् मार्ग की ज़िद से हटाकर सत् मार्ग पर ला सके।

यत्नपूर्व्वक कोल्हू में पेरने से शायद कोई बालू में से तेल निकाल सके, कदाचित् कोई मृगतृष्णा से अपनी प्यास बुझा सके, शायद कोई बहुत घूम-फिर कर कहीं से खरगोश का सींग भी ले आसके, परन्तु कोई भी मनुष्य हठ पर चढे हुए मूर्खको उसकी हठसे अलग नहीं कर सकता।

बालूमें तेल नहीं होता। हजार उपाय करने से भी उसमें से तेल नहीं निकल सकता। शायद कोई मनुष्य इस असम्भव को सम्भव कर सके। मृगतृष्णा से किसी की प्यास नहीं बुझती, लेकिन कदाचित् कोई मनुष्य ऐसा कर सके। खरगोश के सींग होते ही नहीं, फिर तलाश करने से कहाँसे हाथ आसकते हैं? किन्तु शायद कोई आदमी घूम-फिरकर और ढूँढ-ढाँढ कर खरगोश का सींग भी ले आवे। ये तीनों काम असम्भव हैं। इन असम्भवों को सम्भव करनेवाले मनुष्य तो पृथ्वी पर मिल भी जायँ, किन्तु हठ पर चढे हुए मूर्ख को हठ से हटानेवाला मनुष्य मिलना बिल्कुल ही असम्भव है।

जो मनुष्य अपने अमृत-समान उपदेशों से दुष्ट को, कुमार्ग से हटाकर, सुमार्ग पर लाना चाहता है, वह उसके समान है जो कोमल कमलकी डण्डीके सूतसे हाथीको बाँधना चाहता है, सिरस के फूल की पँखरी से हीरे को छेदना चाहता है और खारी समन्दर को एक बूँद शहद डाल कर मीठा करना चाहता है।

कमल की डण्डी के सूत से हाथी नहीं बांधा जासकता, सिरस के फूल की पँखुरीसे हीरे में छेद नहीं किया जासकता और एक बूँद मधुसे समुद्र जल मीठा नहीं हो सकता। ये तीनों असम्भव बातें हैं। इन तीनों की भाँति ही मूर्ख को सदुपदेश द्वारा कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर लाना भी असम्भव ही है।

चुप रहना मनुष्य के अपने अधीन है। मूर्खों की मूर्खता ढकनेके लिये ही ब्रह्मा ने इसे बनाया है। विद्वानों की सभा-समाजों में मूर्खों का चुप रहना ही भूषण है।

विद्वानोंकी मण्डलीमें यदि मूर्ख आदमी कुछ न बोले, चुप्पी साधे रहे, तो उसकी मूर्खता किसी को मालूम नहीं हो सकती। बोलने से तो लोग उसकी मूर्खता का पता पा जाते हैं, अतः मूर्खता छिपानेके लिये "मौन" ही परमास्त्र है।

जब मैं अल्पज्ञ था, तब मैं हाथीके समान मदमें अन्धा था। उस समय, मैं अपनेको सर्वज्ञ समझकर घमण्ड करता था। लेकिन पीछे जब मुझे विद्वान् और बुद्धिमानोंकी सगतिसे कुछ ज्ञान हुआ, तब मैंने समझा कि मैं तो मूर्ख हूँ, इस बात के जानते ही मेरा मद इस भाँति उतर गया, जिस भाँति ज्वर उतर जाता है।

मनुष्य जब इधर-उधरसे कुछ जान लेता है, लेकिन पूर्णतया किसी विषयको नहीं जानता, तब उसे अल्पज्ञ कहते हैं। अल्पज्ञ ( अधकचरा ) मनुष्य मनमें यही समझता है कि मैं

सब कुछ जानता हूँ, मुझसे अधिक जाननेवाला और नहीं है। उस अवस्थामें उसे घमण्ड होजाता है। यदि दैवात् वह किसी विद्वान्की सुहबत में जा पड़ता है और वह उसकी विद्वत्ता बुद्धिमत्ता आदिको देखता है तब समझने लगता है कि, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। ऊँट जबतक पहाड़के नीचे नहीं जाता, तब तक वह अपने तईं पहाड़से भी ऊँचा समझता है, किन्तु जब उसके नीचे जाता है,तब उसका अभिमान किरकिरा हो जाता है।

कुत्ता मनुष्यके कीड़ोंसे भरे हुए, लारसे भीगे हुए, बदबूदार, निन्दित, नीरस और बिना मांसके हाड़को प्रेमसे चबाता है। अगर उस समय उसके पास इन्द्र भी खड़ा हो, तोभी उसे शर्म नहीं आती। इससे यह साबित होता है कि, नीच जीव जिस चीजको ग्रहण कर लेता है, उसकी निस्सारता और सफ़ाई आदि पर ध्यान नहीं देता।

गङ्गा पहले स्वर्गसे शिवजीके मस्तक पर गिरी, शिवजी के सिरसे पर्वत पर गिरी, पर्वतसे पृथ्वी पर गिरी, पृथ्वीसे सैकड़ों धाराओंमें बँटकर और कम होकर समुद्रमें जा मिली। तात्पर्य्य यह है कि,गङ्गा नीचे गिरतीही चली गई। इसी भांति अविचारी—अविवेकी—लोग हमेशा सैकड़ों तरह से नीचेही नीचे गिरते चले जाते हैं।

जलसे आग बुझाई जा सकती है। छातेसे धूपका बचाव किया जा सकता है। तीक्ष्ण अङ्कुशसे हाथी रोका जा सकता

है। डण्डे से दुष्ट बैल और गधा सीधा किया जा सकता है। तरह-तरह की औषधियोंसे रोग निर्मूल किया जा सकता है। नाना प्रकार के यन्त्रोंसे जहर उतारा जा सकता है। मतलब यह है कि, शास्त्रमें सबका इलाज है, परन्तु मूर्खका इलाज कहीं नहीं है।

जो मनुष्य पढना-लिखना और गाना-बजाना कुछ भी नहीं जानता, वह बिना पूँछ और सींगका जानवर है। वह घास नहीं खाता किन्तु जीता है, यही उसका सौभाग्य है।

जिनमें न विद्या है, न तप है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण है और न धर्म है,वे मनुष्य पृथ्वी पर भार-रूप साक्षात् पशु हैं। बात इतनी ही है कि, वे मनुष्य-रूपमें मृगोंकी भांति पृथ्वी पर घूमते हैं।

पहाड़ और जङ्गलोंमें सिंह व्याघ्र आदि बनचर जीवोंके साथ फिरना अच्छा, किन्तु मूर्ख आदमीका सङ्ग इन्द्र-भवनमें भी अच्छा नहीं।

शास्त्रोक्त शब्दोंसे सुन्दर संस्कृत वाणीवाले, शिष्योंको विद्या पढाने योग्य एवं सुप्रसिद्ध कवि लोग जिस राजाके राज्यमें धनहीन रहते हैं, उस राजाकी मूर्खता समझनी चाहिये। कवि लोग तो निर्धनतामें भी श्रेष्ठ ही होते हैं। रत्नकी परीक्षा करनेवाला जौहरी यदि रत्नकी कीमत घटा दे,तो रत्नपारखी ही बुरा समझा जायगा, न कि रत्न।

हे राजाओ! जिसको चोर देख नहीं सकते, जो हमेशा

नाश करती है और दशों दिशाओंमें कीर्त्ति—नामवरी—फैलाती है, सज्जनोंकी सङ्गति पुरुष के लिये क्या नहीं करती ?

वह धर्मात्मा प्रसिद्ध कवीश्वर सबसे उत्तम हैं, जिनकी यशरूपी काया में जरा-मरणका भय नहीं है।

अच्छी चाल चलनेवाला पुत्र, पतिव्रता स्त्री, कृपा करनेवाला स्वामी, प्रेमी मित्र, चाल न चलनेवाले कुटुम्बी; दुःख-रहित मन, सुन्दर स्वरूप, ठहरनेवाली सम्पत्ति, विद्यासे खिला हुआ चेहरा,—यह सब सुखके सामान उस पुरुषको मिलते हैं, जिस पर स्वर्ग-पति नारायण प्रसन्न होते हैं।

जीव-हिंसा न करना, पराया धन हरने की इच्छा न रखना, सच बोलना, समय पर अपनी शक्ति-अनुसार दान देना, पर-स्त्रियोंकी चर्चामें चुप रहना, तृष्णा न रखना, बड़े आदमियों से नम्र रहना, जीवमात्र पर दया रखना, सब शास्त्रोंमें प्रवृत्ति रखना और नित्य नैमित्तिक कर्म न छोड़ना—ये सब पुरुषोंके कल्याण करनेवाले रास्ते हैं।

नीच लोग विघ्न होनेके भयसे किसी कामको आरम्भही नहीं करते। मध्यम लोग कामको आरम्भ तो करते देते हैं, किन्तु विघ्न होते देखकर कामको छोड़ बैठते हैं। उत्तम पुरुष जब कामको आरम्भ कर देते हैं, तब विघ्न होने पर भी उसका पीछा नहीं छोड़ते, किन्तु जैसे तैसे उसे पूरा करकेही छोड़ते हैं।

हमारे आजकलके अधिकांश भारतवर्षीय भाइयोंमें नीच

और मध्यम लोगोंको सी प्रकृति पाई जाती है। ये लोग अव्वल तो विघ्न-भयसे किसी काममें हाथ ही नहीं डालते। डालते भी हैं, तो विघ्न देखते ही उसे छोड़ बैठते हैं, किन्तु अँगरेज़ोंमें ठीक उत्तम लोगों की सी प्रकृति देखी जाती है। वे जिस कामको आरम्भ करते हैं, उसे विघ्न पर विघ्न, हानिपर हानि होने तथा अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पर भी बिना पूरा किये नहीं छोड़ते। यदि यूरप निवासी भर्तृहरिकी इस नीति-अनुसार न चलते तो आज वे रेल, तार, ट्राम आदि न चला सकते, बिजलीसे पङ्खा झलवाने और रोशनी करानेका काम न ले सकते। हमारे भारतीय भाइयोंको भी इस नीति पर चलना बहुतही आवश्यक है।

मानियोंमें अग्रगण्य सिंह, जो सदा मदसे मतवाले हाथी के मस्तकको चीरकर माँस खानेकी इच्छा रखता है, भूखके मारे आँखो में टर्स आने पर, बुढ़ापे से दु:खी निर्बल तेज हीन होने पर और भोजन बिना मरणप्राय होनेपर भी, क्या सूखी घास खाना पसन्द करेगा?

सिंह कैसा ही भूखा क्यों न हो, भूखके मारे दम क्यों न निकलता हो, किन्तु वह अहङ्कारी और पुरुषार्थी होनेसे मास छोड़ कर घास नहीं खाता। इसी तरह पुरुषार्थी और मानी पुरुष, सङ्कटावस्था आजाने पर भी, छोटा काम नहीं करते।

कुत्तेकी भूख पित्त और चर्बी लगे हुए मैले और मांस-रहित हाडके टुकडे से नहीं बुझती, तथापि वह उसे पानेसे

प्रसन्न हो जाता है, दूसरी ओर सिंह गोदमें आये हुए स्यार को छोड़ कर हाथीको जाकर मारता है, इस बात से यह मालूम होता है कि,सारे जीव दुःखी होने पर भी अपने-अपने पुरुषार्थ के अनुसार फलकी इच्छा करते हैं।

कुत्ता टुकड़ा देनेवाले के सामने पूँछ हिलाता, पैरों में गिर कर सिर देता और जमीन पर लेटकर पेट और मुँह दिखलाता है, किन्तु गजराज अपने खिलानेवाले की तरफ़ एक बार गम्भीरतासे देखता है और अनेक भाँतिकी लल्लोचप्पो और खुशामदें करने से खाता है।

जगत् में उसी पुरुष को जन्म हुआ समझना चाहिये, जिसके जन्म लेनेसे वंश की उन्नति हो, नहीं तो पहिये की भाँति घूमनेवाले इस संसार में मरकर जन्म कौन नहीं लेता?

फूलों के गुच्छे या तो लोगों के मस्तक पर विराजते हैं या वनमें सूख-सूख कर गिर जाते हैं। बड़े आदमियों की दशा भी ठीक फूलोंके माफ़िक़ ही होती है।

दानवों के राजा राहु का मस्तकमात्र ही रह गया है, तथापि वह विशेष पराक्रमकी इच्छा रखनेके कारण से, आकाश के बृहस्पति आदि ग्रहोंको छोड़कर, पूर्ण तेजवान सूर्य्य और चन्द्रमाको ही ग्रसता है।

इसका मतलब यह है कि, पराक्रमी और बड़े लोग छोटे ~ ~ तंग नहीं करते। छोटों पर हाथ साफ करने में

वे अपनी निन्दा समझते हैं। राहु वृहस्पति आदि छोटे-छोटे ग्रहोंको हिकारत की नज़र से देखकर और उन्हें अपने मुकाबिले का न समझकर छोड़ देता है, किन्तु सूर्य्य और चन्द्रमा पर, जो सब से अधिक तेजवान है, अपना ज़ोर जमाता यानी ग्रसता है।

चौदह भवन की श्रेणी को शेष भगवान् ने अपने फन पर धारण कर रक्खा है, शेष जी को कच्छप भगवान्ने अपनी पीठपर सम्हाल रक्खा है, समुद्र ने कच्छप को अनादरसे शूकर के अधीन कर दिया है, इससे यह सिद्ध होता है कि बड़ो के चरित्र की विभूति की सीमा नहीं है।

प्रश्न होता है कि, पृथ्वी किसके आधार पर है? -हमारे पुराणोंमें लिखा है कि, पृथ्वी शेष नागके फणों पर स्थित है। शेष नाग कछुए पर ठहरे हुए हैं। कछुआ सूअर अथवा बाराह पर ठहरा हुआ है। लेकिन आजकल के विद्वानोंके विचार से पृथ्वीको सूर्य्य अपनी आकर्षण-शक्तिसे अपनी ओर खींचता है। इसीसे पृथ्वी जहांकी तहां ठहरी हुई है। यही बात ठीक भी मालूम होती है।

राजा इन्द्रने मदमें भरकर अग्नि के समान जलते हुए तीर पर्वतों पर चलाये। उनसे पर्वतों के पङ्ख कट गये। उस समय मैनाक नामक पर्वतने, अपने पिता हिमाचलको सङ्कट में छोड़कर, जलों के राजा समुद्रमें कूदकर अपने पङ्ख

लिये। मैनाक का भागकर अपने पङ्ख बचाने और पिताको सङ्कटमें छोड़जानेसे मर जाना अच्छा था।

सूर्यकान्त मणिमें चेतन-शक्ति नहीं है, तथापि वह सूर्य के किरण-रूपी पैरोंके छूजानेसे जल उठती है। इसी भांति तेजस्वी पुरुष दूसरोंके द्वारा किया हुआ अनादर किस तरह सह सकते है ?

जाति पातालमें चली जाय, सब गुण उससे भी नीचे चले जायँ, शील पहाड़से गिर कर चूर हो जाय, शूरता पर वज्र गिर पड़े, तोभी हमें चिन्ता नहीं। हमें तो केवल "धन"से काम है, जिसके बिना जाति, शील, शूरता आदि गुण तिनके के समान हैं।

सब इन्द्रियां वही है, वैसे ही कर्म है, वही बातें है, परन्तु खाली धनकी गरमी बिना, वही पुरुष पल-भरमें और का और हो जाता है, यह एक अजीब बात है।

जब मनुष्यके पास धन रहता है तब लोग उसे सर्व्वगुण-सम्पन्न, बुद्धिमान कहते है, किन्तु जब उसके पास धन नहीं रहता, तब उसका शरीर, इन्द्रियां और बुद्धि आदि तो वैसेही बने रहते हैं, लेकिन लोग उसे मूर्ख कहने लगते हैं। जाता तो केवल धन है, इन्द्रियां और बुद्धि वगैर तो कहीं नहीं जाती, लेकिन लोग उसी आदमी को निकम्मा और निर्बुद्धि कहने लगते हैं। क्या यह कम आश्चर्य्य की बात है ?

जिसके पास धन है वही पुरुष कुलीन है, वही गुणवान है, वही वक्ता है, वही दर्शन करने योग्य है। इससे यह साबित होता है, कि, सब गुण धनके अधीन हैं।

कोई मनुष्य चाहे वह नीच कुलमें जन्मा हो, चाहे वह मूर्ख हो, चाहे वह गुणहीन हो, चाहे उसे साधारण बात-चीत करना भी न आता हो, चाहे इतना कुरूप हो कि देखने से भी घृणा होती हो, किन्तु यदि उसके पास धन हो तो लोग उसे कुलीन, पण्डित, गुणवान, वक्ता और देखने-योग्य कहने लगते हैं। यदि कोई कुलीन, विद्वान, गुणवान, सुवक्ता हो, लेकिन निर्धन हो तो लोग उसे नीच, मूर्ख, गुणहीन आदि कहने लगते हैं। तात्पर्य्य यह है कि, सारी महिमा धनकी है। गुण, कुल और विद्या आदि सब धनके नीचे हैं।

खराब मन्त्रियों की सलाहसे राजा का राज डूब जाता है। राजा की सुहबतसे तपस्वी का तप भङ्ग हो जाता है। लाड करनेसे पुत्र बिगड जाता है। विद्याभ्यास न करनेसे ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व नहीं रहता। कपूतके जन्म लेनेसे कुलका नाम डूब जाता है। दुष्ट मनुष्य की चाकरीसे शीलता नष्ट हो जाती है। शराब पीनेसे शर्म और दया हवा होजाती हैं। बिना देख भाल किये खेती नाश होजाती है। परदेशमें रहनेसे प्रेम नहीं रहता। कडाईसे मित्रता नहीं रहती। अन्याय-अनीति करनेसे उन्नतिमें बाधा पहुँचती है

बिना समझे-बूझे अन्धे के माफ़िक लुटानेसे धन नाश हो जाता है।

महाराज भर्तृहरि का यह वचन अक्षर-अक्षर सही और दुरुस्त है। इसकी सभी बातें क़रीब-क़रीब हमारी आज़माई हुई हैं। पाठकों को ये सब बातें हृदय-रूपी पट्टी पर अच्छी तरह जमा लेनी चाहियें। समय-समय पर इन सब बातोंके याद रखने से मनुष्य दुःख-सागर में पड़ने से बच जाता है।

धन की तीन गति है—दान, भोग और नाश। जिसने अपना धन दान नहीं किया और भोगा भी नहीं, उसके धन की तीसरी गति होती है अर्थात् वह नाश हो जाता है।

सान पर साफ़ की हुई मणि बहुत अच्छी लगती है, संग्राम-विजयी पुरुष तलवारसे कटा हुआ खूब सुन्दर मालूम होता है, मद-क्षीण हाथी देखनेमें भला जान पड़ता है, शरद् ऋतुकी थोड़े जलवाली नदी बहुत अच्छी लगती है, दूज का चाँद बहुत प्यारा मालूम होता है, रति-केलि द्वारा मर्दन की हुई बाला—सोलह वर्षकी स्त्री—बहुत सुन्दर मालूम होती है और वह राजा जो दान पर दान करनेसे दरिद्री होजाता है बहुत ही शोभायमान लगता है। मतलब यह है कि, उपरोक्त सब दुर्बल होने ही भले मालूम होते हैं।

जब मनुष्य निर्धन अवस्थामें होता है, तब केवल एक पसे चाहता है और जब वही मनुष्य धनवान होजाता है तब

दुनिया को घास-फूसके समान समझने लगता है। मतलब यह निकलता है कि, अवस्था ही मनुष्य को छोटा और बड़ा बना देती है।

हे राजन्! यदि तुम पृथ्वीरूपी गायको दुहना चाहते हो, तो बछड़े रूपी प्रजा का पालन करो। जब प्रजारूपी बछड़ा खूब पाला-पोसा जायगा, तब यह पृथ्वी कल्पलताके समान भाँति-भाँतिके फल देगी।

- राजा को कही सच बोलना होता है और कहीं झूँठ, कहीं कठोर बचन बोलने होते हैं और कहीं मीठे बचन, कहीं जीव का नाश करना होता है और कहीं दया भाव दिखाना होता है, कही लोभी बनना होता है और कही उदार, कभी बहुतसा धन लुटाना होता है और कभी जमा करना होता है। 'राजनीति' वेश्या की भाँति अनेक प्रकारके रूप-रंग बदलती है।

जो राजा विद्वान् और कीर्त्तिमान नहीं हैं, जो ब्राह्मणों का पालन नहीं करते, जो दान, भोग और मित्र-रक्षा नहीं करते, उन राजाओंकी सेवासे क्या लाभ हो सकता है?

ब्रह्माने जो थोड़ा या बहुत धन हमारे मस्तकरूपी पट्टीमें लिख दिया है, वह मारवाड़ की निर्जल भूमिमें जा बैठनेसे भी मिल सकता है उससे अधिक धन सोनेके सुमेरु पर्वत पर जानेसे भी नहीं मिल सकता, इसलिये धीरज धारण करो— घबराओ मत—और धनवानोंके पास जाकर वृथा याचना —

करो। घड़े को कूएँ या समुद्रमें डालकर देखलो, उसमें दोनो जगह समानही जल आवेगा।

पपीहा पक्षी मेघसे कहता है—"हे मेघ। तुम्हीं मेरे जीवन-आधार हो, इस बातको सभी जानते हैं। अब तुम मेरी दीनता की बाट क्यों देखते हो?"

अरे पपीहा! सावधान होकर और चित्त लगाकर हमारी बात सुन! आकाशमें बहुतेरे मेघ हैं किन्तु वह सब समान नहीं हैं। कितने तो बरस-बरस कर धरती को तृप्त कर देते है और कितनेही फिजूल गरज-गरज कर चले जाते हैं। मित्र! इसलिये तू जिसे देखे, उसीके सामने दीनता मत करे।

दया न करना, बिना कारण लड़ाई-झगड़ा करना, पराये धन और पर-स्त्री को हमेशा चाह रखना, अपने कुटुम्बियों तथा मित्रों को बरदाश्त न करना,—ये सब बातें दुष्ट मनुष्यों में स्वभावसेही होती हैं।

दुष्ट मनुष्य यदि विद्वान् भी हो, तोभी उससे दूरही रहना उचित है, क्योंकि जिस सर्पके सिरपर मणि होती है, क्या वह भयङ्कर नहीं होता?

दुष्ट लोग लज्जावान आदमी को मूर्ख, व्रत करनेवालेको पाखण्डी, शूरवीर को निर्दयी, पवित्र को कपटी, चुप रहने वालेको निर्बुद्धि, मीठा बोलनेवाले को गरीब, तेजस्वी को घम ण्डी, बहुत बोलनेवाले को बकी और स्थिर चित्तवाले को

अशक्त कहते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि, गुणवानोंमें ऐसा कोई गुण नहीं है, जिसमें दुर्जनोंने दोष न लगाया हो।

जो लोभी है उसे और अवगुणों की क्या जरूरत है? जो चुगलखोर है उसे और पाप कमाने को क्या आवश्यकता है? जो सत्यवादी है उसे तपस्यासे क्या प्रयोजन है? जिस का मन साफ़ है उसे तीर्थ करनेसे क्या फ़ायदा? यदि सज्जनता है तो और गुणोंसे क्या मतलब? यदि नामवरी है, तो ज़ेवरोंकी क्या जरूरत? यदि सत् विद्या है, तो कुटुम्बी और मित्रों की क्या कमी है? यदि अपयश अथवा बदनामी है, तो मरणसे और क्या होगा?

दिनका ज्योतिहीन चन्द्रमा, यौवनहीना नारी, कमल-रहित सरोवर खूबसूरत आदमी निरचर, धनवान कञ्जूस, सज्जन पुरुष निर्धन और राज सभामें दुष्ट आदमी—ये सातों मेरे दिलमें काँटे की भाँति चुभते हैं।

प्रचण्ड क्रोधी राजाओं का कोई मित्र नहीं होता, क्योंकि अग्नि होम करनेवालेका भी हाथ छूजानेसे जला देती है।

अगर नौकर चुप रहता है तो कहने लगते हैं कि वह गूँगा है यदि बहुत बातचीत करता है तो बकवादी कहलाता है, यदि नजदीक रहता है तो ढीठ कहलाता है, यदि दूर रहता है तो मूर्ख कहलाता है, यदि चमा करता है यानी टेढी-सूधी सब सुनता और चूँ भी नहीं करता, तो डरपोक कहा जाता है, यदि कड़वी और कठोर बातों को सहन नहीं

करता तो कुलहीन कहलाता है। मतलब यह है कि, नौकरी या चाकरी बड़ा कठिन काम है, यह इतनी कठिन है कि योगी लोग भी इसे नहीं कर सकते।

जो अनेक प्रकार की दुष्टता करता है, जो निरङ्कुश है, जिसके पहले जन्मके बुरे कर्म उदय हो रहे हैं, जिसके पास दैव-योगसे धन आ गया है और जो गुणोंसे द्वेष करता है, ऐसे अधम पुरुषके पास रहकर कौन सुख पा सकता है?

जिस भाँति दोपहर पहले की छाया पहले तो बहुत लम्बी-चौड़ी होती है, किन्तु पीछे पल-पल घटने लगती है, उसी भाँति दुष्ट लोगोंकी मित्रता पहले तो खूब बढ़ती है, किन्तु पीछे क्षण-क्षण घटने लगती है, किन्तु भले आदमियों की मित्रता दोपहर पीछे की छायाके समान पहिले तो बहुत थोड़ी होती है, परन्तु पीछे आहिस्ते-आहिस्ते बढ़तीही चली जाती है।

हिरन घास खाकर गुजारा करते हैं, मछलियाँ जलसे जीविका निर्व्वाह करती हैं और सज्जन लोग सन्तोषवृत्तिसे जीवन चलाते हैं, परन्तु न जाने क्या बात है जो शिकारी हिरनोंसे, मछली-मार मछलियोंसे और दुष्ट लोग सज्जनोंसे व्यर्थ शत्रुता करते हैं।

भले आदमियों की सङ्गति की इच्छा, पर-गुणोंसे प्रसन्न होना, माता पिता आदि गुरुजनोंसे नम्रता, विद्यामें रुचि,

अपनी स्त्रीसे सम्भोग, लोक निन्दासे डरना, महादेवमें भक्ति, अपनी आत्मा को वशमें रखने की शक्ति और दुष्ट आदमी की सङ्गति का त्याग—ये निर्मल गुण जिन पुरुषोंमें हैं, उन्हें हम नमस्कार करते हैं।

महात्मा लोग विपत्तिमें धीरज रखते हैं, ऐश्वर्य्यमें क्षमाशील रहते हैं, सभा-समाजमें चतुराईसे बात चीत करते हैं, अपनी कीर्त्ति चाहते हैं और शास्त्रोंके देखनेमें लगे रहते हैं।

भले आदमी दान देकर प्रकट नहीं करते, अपने घर पर आये हुए का सत्कार करते हैं, दूसरे की भलाई करके चुप रहते हैं, अगर कोई दूसरा उनके साथ भलाई करता है तो लोगोंसे कहते रहते हैं, धन-दौलत पानेसे घमण्ड नहीं करते जिस किसी का जिक्र चलता हो उसकी निन्दा की बात बचाकर बात कहते हैं। सत्पुरुषोंमें ये सब गुण पाये जाते हैं। कह नहीं सकते यह कठिन व्रत उन लोगोंको किसने सिखाया है?

जो लोग दान देकर डङ्का पीटते फिरते हैं या समाचार-पत्रोंमें अपने दानकी खबरें छपाते हैं, घर पर आये हुए पुरुष का अनादर करते हैं, किसी का उपकार करके कहते फिरते हैं कि फलाँ शख्स पर हमने यह ऐहसान किया है, सभा समाजमें गँवारपनेसे बात-चीत करते हैं, धन पाकर धन नशेमें चूर हो जाते हैं, जिस किसी की चर्चा होती है

मान करो, दुश्मनों को भी खुश रक्खो, अपने गुणों को प्रसिद्ध करो, अपनी नामवरी बनाये रक्खो और दुःखी लोगों पर दया करो, क्योंकि ये ही सत्पुरुषोंके लक्षण है ।

मन, वाणी और शरीरसे त्रिलोकीके जीवों पर उपकार करनेवाले और पराये जरासे भी गुण को पहाड़के समान बड़ा समझ कर चित्तमें प्रसन्न होनेवाले सज्जन विरलेही होते है ।

हमें उस सोनेके सुमेरु पर्वत और चांदीके कैलाश पर्वत से क्या फ़ायदा, जिनके आश्रित वृक्ष हमेशा जैसे-के-तैसेही बने रहते है ? हम तो मलयाचल को सबसे अच्छा समझते है, जिसके आश्रित कङ्कोल, नीम और कुटज आदि वृक्ष चन्दन हो जाते है ।

देवताओंने समुद्र मथा और रत्न पाये, इससे वे सन्तुष्ट हुए, मगर उन्होंने समुद्र का मथना जारी हो रक्खा । पीछे हलाहल विष निकला, इससे वे भयभीत तो हुए, किन्तु मथन-कार्य्य फिर भी न छोड़ा । जब अमृत निकल आया, तब ही काम छोड़ा और आराम किया । इससे यह मालूम होता है कि, धैर्य्यवान पुरुष जिस कामको आरम्भ करते हैं, उसे अपना इच्छित पदार्थ प्राप्त किये बिना नहीं छोड़ते ।

कभी जमीन पर ही सो रहते हैं, कभी सुन्दर पलँग पर सोते हैं, कभी साग पात खाकर पेट भर लेते है, कभी शाली चांवल खाते हैं, कभी चिथड़े पहनते है और कभी अच्छे-

इसके भड़कदार कपड़े पहनना है। मतलब यह है, कि मनस्वी और कार्य्यार्थी पुरुष दुःख और सुख को नहीं गिनते।

सज्जनता ऐश्वर्य्य का भूषण है घमण्ड न करना शूरताका भूषण है, शान्ति ज्ञानका भूषण है नम्रता शास्त्र पढ़ने का भूषण है, सुपात्रको दान देना धन का भूषण है, क्रोध न करना तपस्या का भूषण है, निष्कपट रहना धर्म्म का भूषण है। इनके सिवा और सब गुणों का कारण और भूषण "शील" है।

नीतिनिपुण लोग बुरा कहें चाहे भला कहें, लक्ष्मी आवे चाहे चली जाय, अभी मरण हो जाय चाहे कल्पान्त में हो, परन्तु धीर लोग न्याय के रास्तेसे एक क़दम भी इधर-उधर नहीं होते।

एक साँप सँपेरेके पिटारेमें बन्द था, उसे अपने जीने की भी आशा न थी—शरीर दुखी था, भूकके मारे इन्द्रियाँ शिथिल हो रही थीं। रातके समय एक चूहा पिटारेमें, छेद कर घुस गया। साँप उसे खाकर तृप्त हो गया और उसी चूहे के किये हुए छेदसे बाहर निकल गया। इससे साफ़ मालूम होता है, कि मनुष्योंकी वृद्धि और क्षय का कारण केवल "दैव" है।

हाथोंके जोरसे गिराई हुई गेंद ऊपर को ही

है, इससे यह मालूम होता है कि अच्छी चालसे चलनेवालों को विपत्ति प्राय नही ठहरती।

मनुष्यके शरीरमें आलस्यही महाशत्रु है। उद्योगके समान मनुष्य का दूसरा मित्र नही है, क्योंकि उद्योग करने से दु ख पास नही फटकता।

छाँटा काटा हुआ वृक्ष फिर बढ आता है, इस बातको विचार कर सज्जन लोग विपत्तिसे नहीं घबराते।

राजा इन्द्रके सलाहकार—मन्त्री—बृहस्पति थे, वज्र उनका हथियार था, देव-सेना उनकी सेना थी, स्वर्ग उनका किला था, ऐरावत हाथी उनकी चढने की सवारी थी, इतनी सब आश्चर्यमयी सामग्री तो थी ही, साथ ही विष्णु भगवान् की उन पर पूर्ण कृपा भी थी, तथापि इन्द्र युद्धमें शत्रुओंसे हार ही खाते रहे। इससे यह मालूम होता है कि, केवल दैव की शरण ही मुख्य है, पुरुषार्थ वृथा है और उसे धिक्कार है।

यद्यपि मनुष्यों को कर्मानुसार ही फल मिलता है और बुद्धि भी कर्मानुसार ही हो जाती है, तथापि बुद्धिमानोंको खूब सोच-विचार कर ही काम करना चाहिये।

किसी गञ्जे आदमी का सिर धूपके मारे जलने लगा। दैवयोगसे वह छाया की तलाशमें, एक ताडके वृक्षके नीचे जा खडा हुआ। खडे होते ही उसके सिर पर एक ताडफल गिरा; जिससे बडी भारी आवाज हुई और उसका सिर

फट गया। इससे यह साबित होता है, कि भाग्यहीन मनुष्य जहाँ जाता है वहाँ विपत्ति भी उसके साथ साथ जाती है।

हाथी और साँप को बन्धनमें देखकर, सूरज और चन्द्रमा में राहु द्वारा ग्रहण लगते देखकर और बुद्धिमानों को धनहीन देखकर, हमें विधाता ही बलवान मालूम होता है।

ब्रह्माने पुरुष-रत्न को समस्त गुणों की खान और पृथ्वीका भूषण बनाया, परन्तु उसकी काया क्षणमें नाश होनेवाली बनायी, यह बड़े दु:ख की बात है। इससे ब्रह्मा की मूर्खता ही मालूम होती है।

करीलके पेड़ोंमें पत्ते नहीं लगते, इसमें बसन्त का क्या दोष है? उल्लू को दिनमें नहीं दीखता, इसमें सूर्यका क्या दोष है? मेह की धारा पपहिये के मुँहमें नहीं गिरती, इसमें बादल का क्या दोष है? इस सब का मतलब यह है, कि विधाताने जो कुछ पहलेसे ही ललाटमें लिख दिया है, उसे मिटाने की सामर्थ्य किसीमें नहीं है।

हम देवताओं को नमस्कार करते हैं, किन्तु सारे देवता विधाताके अधीन हैं, अब हम विधाता को ही नमस्कार करते हैं; किन्तु विधाता भी हमारे पहले किये हुए कर्मों के अनुसार ही फल देता है, इससे यह मालूम हुआ कि विधाता और फल दोनों ही कर्मके अधीन हैं। जब ऐसा है, तब हमें विधाता और देवताओंसे क्या मतलब? हम तो उस

कर्म को नमस्कार करते हैं, जिस पर विधाता का भी ज़ोर नहीं चलता।

कर्मने ब्रह्मा को कुम्हार की तरह ब्रह्माण्ड-रचना पर नियत किया, विष्णु को दश अवतार लेनेके सङ्कटमें डाला, महादेवके हाथमें खोपड़ी देकर भीख मँगाई और सूर्य को सदाके लिये घूमनेके काम पर मुक़र्रर कर दिया, इस-वास्ते हम कर्म ही को नमस्कार करते हैं।

पुरुष की सुन्दर सूरत उसे कुछ फल नहीं देती, न उत्तम कुल, न शील, न विद्या और न खूब अच्छी तरह की हुई टहल-चाकरी ही फल देती है। पहले जन्मकी की हुई तपस्यासे जो भाग्य बना है, वही समय-समय पर वृक्ष की भाँति फल देता है।

सोते हुए, बेख़बर और विषम अवस्थामें स्थित पुरुष की,—वनमें, युद्ध-भूमिमें, शत्रुओंके बीचमें, जलमें, अग्निमें, एवं पर्वत की चोटी पर,—केवल पहले जन्मके पुण्य ही रक्षा करते हैं।

जो सत्क्रिया दुष्टोंको साधु बना देती है, मूर्खों को विद्वान् बना देती है, वैरियोंको मित्र बना देती है, गुप्त विषयों को प्रकट कर देती है, हलाहल विष को अमृत बना देती है, उस सत्क्रिया रूपी भगवती की आराधना-उपासना करो। हे सज्जनो! यदि मनोवाञ्छित फल पाना चाहो, तो और गुणोंके सीखनेमें वृथा परिश्रम मत करो।

जब कोई काम करना हो तो पहले विचार करना चाहिये, कि यह काम करने योग्य है या नहीं, यदि करने-योग्य है तो इसका नतीजा क्या होगा ; क्योंकि जो काम बिना विचारे जल्दबाजीसे किया जाता है, उसका फल मरने के समय तक हृदय में काँटेकी भाँति खटका करता है।

जो पुरुष, इस कर्मभूमि में आकर, तप नहीं करता वह अभागा उस पुरुष के समान है जो वैडूर्यमणि के बासन में चन्दन की लकड़ियों से लहसन पकाता है, खेत में सोने का हल चलाकर आक (मदार) के वृक्ष बोता है, और कपूर-वृक्ष के टुकड़े काट कर कोदो के चारों तरफ मेंड बनाता है।

चाहे समुद्र में डूब जाओ, चाहे मेरु पर्वत की चोटी पर चढ़ जाओ, चाहे घोर युद्धमें शत्रुओं को जीतो ; चाहे व्योपार, खेती, नौकरी आदि सारी विद्या और कलाएँ सीखलो, चाहे आकाश में पक्षियों की भांति उड़ते फिरो, परन्तु जो नहीं होनेवाला है वह कभी नहीं होगा और जो पूर्व्व-कर्मानुसार होनेवाला है, वह कभी बिना हुए न टलेगा।

जिस पुरुष का, पहले जन्मका, बहुतसा पुण्य होता है, उस पुरुष के लिये भयानक जङ्गल सुन्दर नगर हो जाता है ; सब कोई उसके मित्र और बन्धु हो जाते हैं, सारी धरती उस के लिये रत्नों से भर जाती है।

लाभ क्या है ? गुणी लोगोंकी सङ्गति। दुःख क्या है ? अविद्वानों यानी मूर्खों की संगति। हानि क्या है ?

डूबना। चातुरी क्या है? धर्म-कार्यमें लगे रहना। वीर कौन है? जिसने अपनी इन्द्रियों को वश किया। स्त्री कौनसी अच्छी होती है? स्त्री वही अच्छी होती है, जो पतिके अनुकूल चलती है। धन क्या है? विद्या धन है। सुख क्या है? प्रवास में न रहना। राज्य क्या है? अपना हुक्म चलना।

मालती के फूलों की वृत्ति दो भाँति की होती है या तो वे मनुष्य के मस्तक पर ही विराजते हैं या वनमें ही नाश हो जाते हैं। धीर पुरुषों की वृत्ति भी मालती के पुष्पों की भाँति ही होती है।

जो अप्रिय—कडवे—वचनों के दरिद्री हैं, जो प्रिय—मीठे—वचनों के धनी हैं, जो अपनी ही स्त्रीसे सन्तुष्ट रहते हैं, जो पराई निन्दाको अपने पास नहीं रहने देते,—ऐसे पुरुष-रत्नों से कहीं-कहीं की पृथ्वी ही शोभायमान है।

जिसके चित्तमें स्त्रियों के कटाक्षरूपी वाण कुछ असर नहीं करते, जिसके दिलको क्रोधरूपी अग्नि नहीं जलाती, जिस के मन को इन्द्रियों के विषय अपनी ओर नहीं खींच सकते,—वह धीर पुरुष त्रिलोकी को विजय कर सकता है।

जिस भाँति अकेला सूर्य सारे जगत् में प्रकाश फैला देता है, उसी भाँति अकेला वीर पुरुष सारी पृथ्वी को पाँवके नीचे दबाकर अपने अधीन कर लेता है।

जिसके शरीर में समस्त जगत् का प्यारा "शील" मौजूद

है, उसके लिये अग्नि जलकी समान जान पड़ती है, समुद्र छोटी नदीसा मालूम होता है, सुमेरु पर्वत छोटोसी पत्थर की शिला मालूम होता है, सिंह उसके आगे हिरन बन जाता है और विष उसके लिये अमृत होजाता है।



# गुलिस्ताँ

माल ज़िन्दगीके आरामके वास्ते है, किन्तु ज़िन्दगी माल जमा करने के वास्ते नहीं है। मैंने एक बुद्धिमान मनुष्यसे पूछा,—"कौन भाग्यवान और कौन भाग्यहीन है?" उसने उत्तर दिया :—"जिसने खाया और भोगा वही भाग्यवान है, किन्तु जिसने भोगा नहीं, लेकिन छोड़कर मरगया, वह भाग्यहीन है।" उस शख़्स के लिये ईश्वर से दुआ मत माँगो, जिसने ईश्वर-भक्ति या परोपकार का काम न किया, तमाम उम्र रुपया जमा करने में बिता दी और उसको काम में भी न लाया।

दो शख़्सों ने वृथा कष्ट उठाया और व्यर्थ कोशिशें कीं, एक तो वह जिसने धन जमा किया, किन्तु उसे भोगा नहीं, दूसरा वह जिसने इल्म सीखी, मगर उसका अभ्यास न किया। चाहे जितनी विद्या क्यों न पढ़ लो, अगर तुम उस पर अमल नहीं करते तो तुम नादान हो। वह जानवर जिसपर किताबें लदी हुई हैं, न तो विद्वान् है न बुद्धिमान। ७ मूर्खको ख़बर कि, उस के ऊपर ... हैं।

विद्या धर्म-रक्षा के लिये है न कि धन जमा करने के लिये। जिसने धन कमाने के लिये अपनी नामवरी और विद्या खर्च कर दी, वह उस के समान है जिसने खलियान बनाया और उसे बिल्कुल जला डाला।

विद्वान् जो संयमी—परहेजगार—नहीं है, अन्धा मशालची है। वह दूसरों को राह दिखाता है, किन्तु उसे खुदको राह नहीं मिलती। जिसने अपनी उम्र बेखबरी में गँवादी, वह उसके माफ़िक है जिसने रुपया खो डाला, मगर कुछ चीज न खरीदी।

बादशाहत की नामवरी अक़्लमन्दों से होती है और धर्म धर्मात्माओंसे पूर्णता प्राप्त करता है। अक़्लमन्दोंको राज दरबार में नौकरी पाने की जितनी जरूरत है, उससे बादशाहों को अक़्लमन्दों की अधिक जरूरत है। ए बादशाह! ध्यान देकर मेरी नसीहत सुन; तेरे दफ्तर में इस से अधिक क़ीमती नसीहत नहीं है —"अपना काम अक़्लमन्दों के सिपुर्द कर, यद्यपि सरकारी काम करना अक़्लमन्दों का काम नहीं है।"

तीन चीज़ें, तीन चीजोंके बिना, कायम नहीं रहतीं, दौलत बिना सौदागरीके, इल्म बिना बहस के और बादशाहत बिना दहशतके।

दुष्टों पर दया करना, सज्जनों के ऊपर जुल्म करना है। ज़ालिमों को माफ़ करना, सताये हुओं पर जुल्म करना है। अगर तुम कमीनों के साथ मेल जोल रक्खोगे और

सिखलाना करोगे, तो वे तुम्हारी हिमायत से अपराध करेंगे और तुमको उनके अपराधों का हिस्सेदार बनना पड़ेगा।

बादशाहों की दोस्ती और लड़कों की मीठी-मीठी बातों पर भरोसा न करना चाहिये, क्योंकि बादशाहों की दोस्ती ज़रा से शक पर टूट जाती है और लड़कों की प्यारी-प्यारी बातें रात-भर में बदल जाती हैं। जिसके हजार चाहनेवाले हैं, उसे अपना दिल मत दो, अगर दो, तो जुदाई की तकलीफें सहने को तय्यार रहो।

मित्र के सामने अपना सारा गुप्त भेद मत खोलदो; कौन जाने वह कब तुम्हारा शत्रु होजावे? इसी भांति शत्रु को भी हर तरह की तकलीफें मत दो, कौन जाने वह कभी तुम्हारा मित्र ही होजावे? वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो, किसी को भी मत दो, जिसे तुम भेद दो, चाहे वह विश्वास-योग्य ही क्यों न हो। अपनी गुप्त बात को जितनी अच्छी तरह तुम खुद छिपा सकते हो, दूसरा हरगिज न छिपा सकेगा।

किसी की गुप्त बातों को एक शख्स से कहना और उसे दूसरे से कहने की मनाही करने से एकदम चुप रहना भला है। ए भले आदमी! पानी को निकास पर ही रोक। जब वह नदी के रूप में बहने लगेगा, तब तू उसे रोक न सकेगा। जो बात सब लोगों के सामने कहने लायक नहीं है, उसे पोशीदगी में भी मत कह।

अगर कोई निर्बल शत्रु तुम्हारे साथ मित्रता करे और तुम्हारी आज्ञानुसार चले, तो तुम को समझना चाहिये कि वह अपना बल बढ़ाना चाहता है। चूँकि कहा है —"मित्रों की सचाई पर भी विश्वास न करना चाहिये, तब शत्रुओं की लल्लो-चप्पो से क्या भली आशा की जासकती है?" जो निर्बल शत्रु को तुच्छ समझता है, वह उसके माफ़िक है जो आग की छोटीसी चिनगारी की परवा नहीं करता। अगर तुम में शक्ति है, तो आग को आज ही बुझादो, क्योंकि जब वह प्रचण्ड रूप धारण करेगी, तब वह संसार को जला देगी। जब कि तुझमें शत्रु को बाणसे छेदने की शक्ति हो, तब तू शत्रु को कमान खींचने का मौक़ा मत दे।

दो दुश्मनों के दर्म्यान अगर कुछ बात कहे, तो इस भाँति कहे, कि यदि वे आपस में दोस्त भी होजावें, तोभी तुझे लज्जित न होना पड़े। दो मनुष्यों की दुश्मनी आगके समान है और जो बातें बनाता है वह आगमें ईंधन डालता है। जब दो दुश्मन आपस में सुलह कर लेते हैं, तब वे दोनों ही चुगलखोर को बुरी नजर से देखते हैं। जो शख़्स दो आदमियों के बीच में आग लगाता है, वह खुद अपने तई उसमें जलाता है। अपने मित्रों से इस तरह चुपचाप बात कर, कि तेरे खूनके प्यासे शत्रु तेरी बात सुन न लें। अगर दीवार के सामने भी कुछ बात कहे, तो होश रख, कि दीवार के पीछे कान न लग रहे हों।

जो मनुष्य अपने मित्र के शत्रुओं से मित्रता करता है, वह अपने मित्रको नुकसान पहुँचाना चाहता है। ए बुद्धिमान मनुष्य! तू उस मित्र से हाथ धोले, जो तेरे शत्रुओं से मेल-जोल रखता है।

जब तुम्हें किसी काम के आरम्भ करने के समय ऐसा सन्देह उठ खड़ा हो, कि इस काम को किस ढँग से जारी करें, तब तुम्हें वह ढँग अख्त्यार करना चाहिये, जिस से तुम्हें नुकसान न पहुँचे। कोमल स्वभाव के मनुष्य से कड़ाई से बातें न करो और वह शख्स जो तुम से मेल रखना चाहता है, उससे लड़ाई-झगड़ा मत करो।

जब तक रुपया खर्च करने से काम निकल सके, तब तक जान खतरे में न डालनी चाहिये, जब हाथ से किसी तरह काम न निकले, तब तलवार खींचना ही मुनासिब है।

बलहीन शत्रुपर दया मत करो, क्योंकि यदि वह बलवान हो जायगा, तो तुम्हें हरगिज न छोड़ेगा। जब तुम किसी दुश्मन को कमज़ोर देखो, तब अपनी मूछोंपर ताव मत दो, क्योंकि हर हड्डी में गूदा और हर लिबास में मर्द है। जो शख्स दुष्ट को मार डालता है, वह दुनिया को उसकी दुष्टताओं से बचाता है और अपने तई ईश्वर के कोपसे छुड़ाता है। क्षमा प्रशंसा-योग्य है, तथापि अत्याचारी—जालिम—के पर मरहम न लगाओ। जो साँप की जान बख्शता है,

वह यह नहीं जानता, कि मैं आदम की औलाद को नुक़सान पहुँचाता हूँ।

शत्रु की सलाह के माफ़िक़ काम न करो, किन्तु उसकी बात अवश्य सुनो। शत्रु की सलाह के विरुद्ध काम करना ही बुद्धिमानी है। शत्रु जिस काम के करने को कहे, वह काम मत करो। अगर तुम उसकी सलाह के माफ़िक़ काम करोगे, तो तुम्हें रञ्ज करना और पछताना पड़ेगा, अगर शत्रु तुम्हें तीरके समान सीधी राह भी दिखावे, तोभी तुम उस राहको छोड़ दो और दूसरी राह अख़त्यार करो।

अधिक क्रोध करने से भय पैदा होता है और अधिक मिहरबानी से रोब नहीं रहता। न तो इतनी सख़्ती करो कि, लोग तुम से नफ़रत करने लगें और न इतनी नरमी अख़त्यार करो कि, लोग तुम्हारे सिर पर चढ़ें। सख़्ती और नरमी उस ज़र्राह के माफ़िक़ काम में लानी चाहिये, जो पहले तो चीरा देता है, किन्तु साथ ही मरहम भी लगाता है। बुद्धिमान आदमी न तो अत्यधिक कड़ाई ही करता है और न इतनी नरमी ही करता है कि, उसकी क़दर भी घट जाय। एक जवान ने अपने पिता से कहा —"आप बुद्धिमान हैं, अपने अनुभव से मुझे कुछ उपदेश दीजिये।" उसने उत्तर दिया —"सिधाई और भलमनसई से काम ले, मगर इतनी सिधाई मत रखे कि, लोग भेड़िये के तेज़ दाँतों से तेरा अपमान करें।"

दो शख्स बादशाहत और मजहब के दुश्मन हैं, बादशाह बिना रहम के और फकीर बिना इल्म के। ईश्वर की आज्ञा न पालनकरनेवाला बादशाह किसी मुल्क में न होवे।

दुष्ट मनुष्य शत्रु के हाथ में गिरफ्तार है, वह चाहे जहाँ क्यों न जावे, किन्तु अपनी सजा के चङ्गुलों से रिहाई नहीं पा सकता। अगर दुष्ट आदमी आफत से बचनेके लिये आसमान पर भी चला जावे, तोभी अपनी दुष्टता के कारण आफत से नहीं बच सकता।

जब शत्रु की सेना में फूट देखो, तब खूब साहस करो, किन्तु यदि वे आपस में मिले हुए हों, तो तुम खबरदार रहो। जब तुम दुश्मनों के दर्म्यान लड़ाई-झगड़ा देखो, तब चैन से दोस्तोंके पास जा बैठो, किन्तु जब तुम उन्हें एक-दिल देखो, तब कमान पर चिल्ला चढ़ाओ और किलेकी दीवारों पर पत्थर जमा करो।

जब दुश्मन की कोई चाल काम नहीं करती, तब वह दोस्ती पैदा करता है, क्योंकि दोस्ती के बहाने से वह उन सब कामों को कर सकता है, जिनको कि वह दुश्मनी की हालत में न कर सका था।

सांपके सिरको अपने दुश्मन के हाथ से कुचलो। ऐसा करनेसे दो लाभोंमें से एक तो अवश्य ही होगा। अगर दुश्मन सांप को जीत ले, तब तो तुमने सांपको मार लिया और अगर

साँप तुम्हारे दुश्मन को जीत ले, तो तुमने अपने दुश्मन से रिहाई पाई।

युद्ध के दिन, शत्रु को निर्बल देखकर निर्भय मत रहो, क्योंकि जो जान पर खेलेगा, वह शेरका भेजा भी निकाल लावेगा।

जब तुम्हें किसीको ऐसी खबर देनी हो, जो उसका ( जिसे खबर दी जाती है ) दिल बिगाड़े, तब तुम्हें उचित है कि उसे वह खबर मत दो। तुम चुप्पी साध जाओ। उस बुरी खबर को वह किसी दूसरे शख्स से ही सुन लेगा। ए बुलबुल! मौसम बहार की खुश-खबरी ला। बुरी खबर उल्लू के लिये छोड़ दे।

किसी की चोरी की बात बादशाह से मत कहो, सिवा उस हालत के, जब कि तुम्हें यह विश्वास हो कि, वह तुम्हारी बात पसन्द करेगा. अन्यथा तुम अपने ही नाशका सामान करोगे। जब तुम्हें किसीसे कोई बात कहनी हो, तो पहले यह निश्चय करो कि, तुम्हारी बातका असर होगा या नहीं। अगर असर होनेकी उम्मीद दीखे, तो मुँहसे बात निकालो।

जो शख्स खुद-पसन्द—घमण्डी—आदमी को नसीहत देता है, वह खुद नसीहत का मुहताज है।

दुश्मन के धोखे में मत फँसो और खुशामदी की मन्नो-चप्पो से फूलकर कुप्पा न हो जाओ। उसने तारीफ़ जाल और इसने लालच का पत्ता फैलाया है। मूर्ख की तारीफ़

अच्छा मालूम होती है। खबरदार रहो और खुशामदी की बात मत सुनो, क्योंकि वह अपनी थोडीसी पूँजी लगाकर, तुमसे अधिक नफे की आशा करता है। "अगर तुम एक दिन भी उसकी इच्छा पूर्ण न करोगे, ता वह तुममें दो सौ ऐब—दोष—निकालेगा।

जब तक कोई शख्स किसी बात करनेवाले के दोष नहीं पकडता, तब तक उसकी बात दुरुस्त नहीं होती। मूर्ख की तारीफ़ और अपने विचार-बल पर निर्भर होकर, अपनी बात की सुन्दरता पर घमण्ड मत करो।

हर शख्स अपनी अक्ल को कामिल और अपने बच्चे को खूबसूरत समझता है। एक यहूदी और एक मुसल्मान, आपस में, इस ढंगसे झगड रहे थे कि मुझे हँसी आ गई। मुसल्मान ने गुस्सेमें भर कर कहा,—"अगर मेरा यह कौल दुरुस्त न हो, तो खुदा मुझे यहूदो की मौत मारे।" यहूदी ने कहा —"मै तौरेत की कसम खाता हूँ, अगर मेरी बात तेरी तरह झूठ हो, तो मैं तेरे माफ़िक मुसल्मान हूँ।" अगर ससार मे अक्ल न होती, तो कोई अपने नादान होनेका गुमान भी न करता।

दस आदमी एक थाली मे बैठकर खा लेंगे, मगर दो कुत्ते एक मुर्दार—लाश—से सन्तुष्ट न होंगे। अगर लालची आदमी के कब्ज़में तमाम दुनिया भी हो तोभी वह भूखा ही है, किन्तु जो सन्तोषी है, वह एक रोटीसे ही राज़ी रहता है। तग पेट

बिना गोश्तके एक रोटीसे ही भर जाता है, किन्तु तंग-नजर तमाम दुनिया की दौलतसे भी सन्तुष्ट नहीं होती। मेरे पिताने, मरते समय, मुझे यह नसीहत दी —"शहवत— मस्ती—आग है, उससे बचो। नरककी आगको तेज मत करो, क्योंकि तुम उस आगको सह न सकोगे। सन्तोष-रूपी जलसे वर्तमान आग को ही बुझा दो।"

जो मनुष्य शक्ति—अधिकार—रहते हुए भलाई नहीं करता, उसे शक्तिहीन—अधिकारहीन—होनेपर दुःख भोगना पड़ेगा। अत्याचारी से बढ़कर अभागा और नहीं है क्योंकि विपत्ति के समय कोई उसका दोस्त नहीं होता।

धैर्यसे काम बन जाते हैं, किन्तु जल्दबाजीसे बिगड़ जाते हैं। मैंने एक जङ्गलमें अपनी आँखोंसे दो आदमी देखे। एक जल्दी-जल्दी चलता था और दूसरा धीरे धीरे। धीरे-धीरे चलनेवाला तेज चलनेवालेसे पहलेही अपनी मञ्जिल मक़सूद पर पहुँच गया। तेज घोड़ा मैदान दौड़ते दौड़ते थक गया, जबकि ऊँटवाला धीरे-धीरे बराबर चला ही गया।

मूर्खके लिये "मौन" से बढ़ कर दूसरी अच्छी चीज नहीं है। अगर मूर्ख इस बात को जानता, तो मूर्ख न बनता। अगर तुममें कोई खूबी और होशियारी नहीं है, तो अपनी ज़बान को अपने दाँतोंके भीतर ही रक्खो। ज़बान मनुष्य की बेइज़्ज़ती कराती है। अखरोट बिना गुठलीके

हल्का होता है। एक अज्ञात मनुष्य, एक गधे को तालीम देनेमें, अपना सारा समय नष्ट किया करता था। किसीने कहा—"ए नादान! तू किस लिये इतनी कोशिश करता है? इस अज्ञानता पर तुझे धिक्कार है। जानवर तुझसे बोलना न सीखेंगे, तू जानवरोंसे चुप रहना सीख।" जो मनुष्य उत्तर देनेसे पहले विचार नहीं करता, वह अगड़-बगड़ बात ही बोलता है। या तो बुद्धिमान की भाँति अपने शब्दों को दुरुस्त करके बोलो अथवा जानवरों की भाँति चुप्पी साध लो।

यदि तुम दूसरे को अपनी बुद्धिमानी दिखाने और वाह-वाही लूटने की गरजसे, अपनेसे अधिक बुद्धिमानसे वाद-विवाद करोगे, तो उलटी तुम्हारी मूर्खता ही प्रकट होगी। जब कोई शख्स तुम्हारी अपेक्षा अच्छी बात कहे और तुम खुद भी उस बात को भली भाँति जानो, तोभी ऐतराज मत करो।

जो बुरोंकी सगति करता है, वह नेकी नहीं देखता। अगर कोई फरिश्ता किसी देव की सगति करे तो वह भय, चोरी और धूर्त्तता ही सीखेगा। तुम बुरोंसे नेकी नहीं सीख सकते, भेड़िया चमार का काम नहीं करता।

आदमियोंके छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो, क्योंकि उनकी बदनामी करनेसे तुम्हारी भी बेऐतबारी हो जायगी। जिसने इल्म पढ़ा, किन्तु उस पर अमल न किया वह

उस मनुष्यके समान है, जिसने ज़मीन जोती मगर बीज न बोया।

जो शख्स कि लड़ाई झगड़ा करनेमें तेज़ है, काम करने में दुरुस्त नहीं हो सकता, चादरसे ढकी हुई सूरत बहुत सुन्दर मालूम हो सकती है, किन्तु चादर हटाते ही नानी नज़र आवेगी।

अगर तमाम रातें क़दरकी लायक़ होतीं, तो क़दर करने लायक़ रातें बेक़दर हो जातीं, अगर हरेक पत्थर बदख़शाँ का लाल होता, तो लाल और पत्थरों का मोल एक समान होता।

हरेक सुन्दर सूरतवाले का मिज़ाज भी अच्छा हो, यह कठिन बात है, क्योंकि भलाई दिलके अन्दर होती है न कि सूरतमें। तुम आदमीके तौर तरीक़े देखकर, एक दिनमें, यह जान सकते हो कि इसने कितना इल्म हासिल किया है अर्थात् यह कितना विद्वान् है, मगर उसके दिलकी तरफ़से निर्भय न रहो और अपनी पहचान का घमण्ड न करो, क्योंकि मनुष्य की दुष्टता का पता बरसोंमें लगता है।

जो शख्स बड़े लोगोंसे लड़ाई करता है, वह स्वयं अपना खून बहाता है। जो अपने तईं बड़ा खयाल करता है, वह उसके समान है, जो कनखियोंसे देखता है मगर दूना देखता है। अगर मेंढे के सिरके साथ खेल करोगे, तो अपने सिर को जल्दी ही टूटा हुआ देखोगे।

शेरके साथ पञ्जा लड़ाना और तलवार पर मुट्ठी मारना, अक्लमन्दों का काम नहीं है। जबरदस्तके साथ । जोर-आज़माई और लड़ाई न करो। जब जबरदस्तका सामना हो जाय, तब अपने हाथों को बगलोंके नीचे दबा लो।

जो कमजोर आदमी जबरदस्तके साथ लड़ाई या जोर-आजमाई करता है, वह अपने दुश्मन का दोस्त बनकर अपनी मौत आप बुलाता है। जो छायामें पला है, वह योद्धाओंके साथ युद्धभूमिमें कैसे जा सकता है? जिसकी भुजाओंमें बल नहीं है, यदि वह लोहेकी कलाईवाले का सामना करता है, तो वह मूर्खता करता है।

दुर्जन लोग सज्जनों को उसी तरह नहीं देख सकते, जिस तरह बाजारू कुत्ते शिकारी कुत्तेको देखकर भौंकते और गुर्राते हैं, मगर उसके पास आनेकी हिम्मत नहीं करते।

जब कोई नीच मनुष्य किसी दूसरे को गुणोंमें बराबरी नहीं कर सकता, तब वह अपनी दुष्टताके कारण उसमें दोष लगाने लगता है। नीच और परगुण-द्वेषी मनुष्य गुणवान की निन्दा उसकी नामौजूदगीमें ही करता है, लेकिन जब सामना हो जाता है, तब उसकी बोलती बन्द हो जाती है।

जो पेट न होता तो चिड़िया चिड़ीमारके जालमें न फँसती और चिड़ीमार भी अपना जाल न फैलाता। पेट हाथों की हथकड़ी और पैरोंकी बेड़ी है। जो पेट का गुलाम है, वह ईश्वर की उपासना नहीं करता।

बुद्धिमान देरसे खाते हैं, धर्मात्मा आधे पेट भोजन करते हैं, योगी लोग सिर्फ उतना खाते हैं जितनेसे ज़िन्दगी कायम रह सके, जवान लोग जो कुछ थाली में होता है सब खा जाते हैं, बूढ़ोंके जब तक पसीना नहीं निकलता, तब तक खातेही रहते हैं, किन्तु कलन्दर इतने भुखमरेपनसे खाते हैं कि, पेट में सांस चलने को भी जगह नहीं रहती और थालीमें एक टुकड़ा भी दूसरी की जीविका को नहीं रहता। जो शख्स पेट का गुलाम होता है, उसे दो रात नींद नहीं आती, एक रात तो पेटके बोझके मारे और दूसरी रात भूख की फ़िक्रसे।

स्त्रियोंके साथ सलाह करनेसे बर्बादी होती है और उपद्रवियों अथवा राजद्रोहियोंके प्रति दातारी करनेसे अपराध लगता है। जो चीते पर रहम करता है वह बकरियों पर जुल्म करता है। अगर तुम दुष्टों पर दया करते हो और उनकी हिमायत लेते हो, तुम भी उनके किये हुए पापके अपराधी हो।

जो कोई अपने दुश्मन को अपने काबूमें पाकर भी, मार नहीं डालता, वह खुद अपना दुश्मन है। अगर पत्थर हाथ में हो और सांप पत्थरके तले हो तो उस समय पशोपेश करना और देर करना बेवकूफ़ी है। चीतेक तेज दांतों पर रहम करना, भेड़ों पर जुल्म करना है। किन्तु दूसरे लोग इस विचारके विरुद्ध हैं और कहते हैं कि, क़ैदियोंके मार-डालनेमें विलम्ब करना अच्छा है, क्योंकि पीछे उनका मारना

और छोड़ना हाथमें है, क्योंकि यदि कोई बिना विचारे मार डाला जावे और पीछे कोई ऐसी बात निकल आवे, जिससे उसका मार डालना अनुचित जँचे, तब वह ज़िन्दा नहीं हो सकता। मार डालना आसान है, मगर जिन्दा करना नामुमकिन—असम्भव—है। तीरन्दाज का सब्र करना अक्लमन्दी है, क्योंकि जो तीर कमानसे निकल जायगा, वह फिर लौटकर न आवेगा।

अगर कोई बुद्धिमान मूर्खों के साथ, किसी विषय पर, वाद-विवाद करे, तो उसे अपनी इज्जत की आशा त्याग देनी चाहिये, अगर कोई मूर्ख किसी अक्लमन्द को हरा दे, तो आश्चर्य न करना चाहिये, क्योंकि मामूली पत्थर भी तो मोती को तोड़ डालता है। जिस समय, एकही पिञ्जरे में, कोयलके साथ कव्वा हो, उस समय यदि कोयल न गावे तो आ र्य की क्या बात है? यदि कोई हरामज़ादा किसी बुद्धिमान पर जुल्म करे, तो बुद्धिमान को चाहिये कि कुपित और शोकार्त न हो। अगर एक निकम्मा पत्थर बेश-क़ीमत सोनेके प्याले को तोड़ दे, तो पत्थर बेश कीमत और सोना कम-क़ीमत न हो जायगा।

अगर कोई अक्लमन्द कमीनों की मण्डलीमें पड़कर, उनपर अपने उपदेश का असर न डाल सके अथवा उनका प्रशंसा-भाजन न बन सके, तो इसमें आश्चर्य की कौन बात है? बीन की आवाज़ ढोल की आवाज को दबा नहीं सकती और बद-

बूदार लहसन अम्बर की खुशबू का परास्त कर देता है। मूर्ख को अपनी ऊँची आवाज का घमण्ड हुआ, क्योंकि उसने गुस्ताखीसे एक अक्लमन्द को घबरा दिया। क्या नहीं जानते कि, हिजाजके बाजे की आवाज नटके ढोलसे दब जाती है? अगर एक रत्न कीचड़में गिर पड़े, तोभी वह वैसाही नफीस बना रहता है और यदि गर्दा आस्मान पर चढ़ जावे, तोभी अपनी असली नीचता नहीं छोड़ता। लियाकत बिना तालीमके और तालीम बिना लियाकतके बेकार है। शक्कर की कीमत गन्ने से नहीं है, किन्तु उसकी आपकी खासियतसे है। कस्तूरी वह है जो आप खुशबू दे, न कि अत्तारके कहनेसे। अक्लमन्द, अत्तारके तबले—डब्बे—के समान है जो चुपचाप रहता है, लेकिन गुण दिखाता है। मूर्ख नटके ढोल के समान है जो शोर बहुत करता है किन्तु भीतरसे पोला है। अन्धोंके बीचमें सुन्दरी कन्या और काफ़िरोंके घरमें क़ुरान की जो गति है, वही गति बुद्धिमान की मूर्खों में है।

जिस दोस्तको तुम एक मुद्दतमें अपने हाथमें लाये हो, उससे एक दममें नाराज़ न होजाओ। पत्थर जो बरसोंमें लाल हुआ है, उसे एक क्षणमें पत्थरसे न तोड़ डालो।

बुद्धि, ज्ञान-शक्तिके इस भाँति अधीन है, जिस भाँति एक सीधा-सादा पुरुष चालाक स्त्रीके वशमें। उस सुखदाई घरके

ाग न। बन्द कर दो, जिसके अन्दर औरत की आवाज गूँजता है।

बुद्धि, बिना बलके छल और कपट है और बल बिना बुद्धिके मूर्खता और पागलपन है। सबसे पहले विचार, उद्योग और बुद्धिमानीकी आवश्यकता है, इनके पीछे राज्यकी। क्योंकि मूर्खों के हाथमें हकूमत और दौलत देना खुद अपने विरुद्ध हथियार देना है।

वह उदार पुरुष जो खाता और दान करता है, उस धर्मात्मा से अच्छा है जो निराहार रहता और सञ्चय करता है। जो पुरुष, लोगो का प्रशंसापात्र होनेके लिये, विषय भोगोंका त्याग करता है वह उचित को छोड कर अनुचित रीतिसे विषय-वासना पूरी करता है। वह साधु जो ईश्वर-भजनके लिये एकान्त-वास नहीं करता, वह विचारा धुँधले शीशेमें क्या देखेगा? थोड़ा-थोड़ा करके बहुत हो जाता है और बूँद बूँदसे नदी बन जाती है॥

अक्लमन्द आदमी को मामूली आदमी की गुस्ताखी,लापरवाहीसे दरगुजर न करनी चाहिये, क्योंकि इससे दोनों तरफ नुकसान पहुँचता है, अक्लमन्द का रोब कम होता है और मूर्ख की मूर्खता बढती है। अगर तुम नीच मनुष्य के साथ मिहरबानी और खुशीसे बातें करोगे, तो उसका घमण्ड और हठ बढ जायगा।

पाप, किसीके भी द्वारा क्यों न किया जाय, घृणा उत्पादक

है, लेकिन विद्वानों में और भी ज़ियादा क्योंकि विद्या शैतान से युद्ध करने का शस्त्र है। अगर कोई हथियारबन्द आदमी क़ैद में पड़ जावे, तो उसे बहुत ही लज्जित होना पड़े। दुश्चरित्र मूर्ख दुश्चरित्र पण्डित से अच्छा है, क्योंकि मूर्ख ने तो अन्धे होने के कारण राह खोई, किन्तु पण्डित दो आँखें होते हुए भी कूएँ में पड़ा।

वह शख़्स जिस की रोटी लोग उसके जीते जी नहीं खाते, उस के मरने पर उस का नाम भी नहीं लेते। जब मिश्र देशमें अकाल पड़ा, तब यूसुफ़ने भरे पूरे भण्डार से कुछ न खाया, क्योंकि खाने में उसे भूखों के भूल जाने का अन्देशा था। बेवा अङ्गूर चखती है, न कि मालिक बाग़। जो सुख-सम्पद की अवस्था में रहता है, वह किस भाँति जान सकता है कि भूखा रहना कैसा है? जो आप दुःखी है, वही दुःखियों की दशा जानता है। ए मनुष्य! तू जो तेज़ घोड़े पर चढ़ा हुआ है, उस गधे का विचार कर, जो काँटों से लदा हुआ कीचड़ में फँसा है।

अपने पड़ोसी फ़क़ीर से आग मत माँग, क्योंकि उस की चिमनी से जो कुछ निकलता है, वह उसके दिलका धूआँ है।

अकाल और सूखा के समय किसी तंगहाल फ़क़ीर से यह मत पूछो कि किस तरह गुज़र होती है, यदि पूछना ही हो, तो उस हालतमें पूछो जबकि तुम्हारा इरादा उसे जीविका देकर उसके घावपर मरहम लगाने का हो। जब तुम किसी

... कुछ गधको कीचड़में फँसा हुआ देखो, तब उस पर रहम करो और किसी भाँति उसके सिरपर होकर न निकल जाओ। अगर तुम आगे बढ़ो और पूछो कि कैसे गिरा, तो कमर बाँधो और मर्दों के मानिन्द उस की पूँछ पकड़ कर खींचो।

दो बातें असम्भव है, एक तो भाग्य में लिखे से अधिक खाना, और दूसरे, नियत समय से पहले मरना। होनहार, हमारे हज़ारों बार रोने-पीटने या खुशामद और शिकायतें करने से टल नहीं सकती। हवा के खजाने के फरिश्ते को क्या परवा, यदि एक बेवा बुढ़िया का चिराग बुझ जावे।

ए रोजी—जीविका—माँगनेवाले! भरोसा रख, तू बैठकर खायगा और तू जिस को मौत का बुलावा आगया है भाग मत, क्योंकि भागकर तू अपनी जान बचा न सकेगा। बैठा रह या उद्योगकर, भगवान् तेरी रोज की रोटी अवश्य भेजेगा। शेर या चीते के मुँह में भी क्यों न चला जावे, यदि तेरे मरने का दिन न आया होगा, तो वे भी तुझे हरगिज न खा सकेंगे।

जो तेरे भाग्यमें नहीं है वह तुझे न मिलेगा और जो तेरे भाग्यमें है वह तुझे जहाँ तू होगा वहीं मिल जायगा। सुना है, कि सिकन्दर बड़ी मिहनतसे अँधेरी दुनियामें गया, किन्तु वहाँ पहुँच जानेपर भी वह अमृत न चख सका।

मछुआ बिना रोजीके दजला (नदी) में मछली नहीं पकड़ ... और मछली बिना मौत के खुश्की—स्थल—पर नहीं

मर सकती। लालची मनुष्य, जीविका की फ़िक्रमें, तमाम दुनिया में दौड़ता फिरता है और मृत्यु उसकी एड़ियों के पीछे लगी घूमती है।

द्वेषी मनुष्य निरपराध मनुष्यों से शत्रुता रखता है। मैंने एक मूर्खको एक प्रतिष्ठित मनुष्य का अपमान करते देखा। मैंने उससे कहा —"महाशय ! अगर आप भाग्यहीन हैं, तो इसमें भाग्यवानों का क्या दोष है?" जो तुमको देखकर जले, तुम उसका बुरा मत चीतो, क्योंकि वह अभागा स्वयँ आफ़त में फँसा हुआ है। जिसके पीछे ऐसा शत्रु (दूसरे को देखकर कुढ़ना) लग रहा है, उसके साथ शत्रुता करने की क्या आवश्यकता है?

श्रद्धाहीन विद्यार्थी निर्धन प्रेमी है, अनजान यात्री पङ्खहीन पक्षी है, अनभ्यस्त विद्वान् फल हीन वृक्ष है और विद्याहीन साधु बिना द्वारका घर है।

क़ुरान इस गरज़में प्रकाशित की गई थी, कि लोग उससे अच्छी-अच्छी नसीहतें सीखें, न कि इस मतलब से कि लोग उसका पाठ मात्र किया करें। निरक्षर योगी पैदल मुसाफ़िर के समान है और सुस्त विद्वान् सोते हुए सवार के माफ़िक़ है। वह पापी जो हाथ उठाकर ईश्वर से आशीर्वाद मांगता है, उस साधुसे अच्छा है जो अभिमान करता है। वह फ़ौजी अफ़सर जो शान्त, शील और मिलनसार है, उस क़ानून जाननेवाले से अच्छा है जो लोगोंपर ज़ुल्म करता है।

... को कीचड़में फँसा हुआ देखो, तब उस पर रहम करो और किसी भाँति उसके सिरपर होकर न निकल जाओ। अगर तुम आगे बढ़ो और पूछो कि कैसे गिरा, तो कमर बांधो और मर्दों के मानिन्द उस को पूँछ पकड़ कर खींचो।

दो बातें असम्भव है, एक तो भाग्य में लिखे से अधिक खाना, और दूसरे, नियत समय से पहले मरना। होनहार, हमारे हज़ारों बार रोने-पीटने या खुशामद और शिकायतें करने से टल नहीं सकती। हवा के खजाने के फ़रिश्ते को क्या परवा, यदि एक बेवा बुढ़िया का चिराग बुझ जावे।

ए रोजी—जीविका—माँगनेवाले! भरोसा रख, तू बैठकर खायगा और तू जिस को मौत का बुलावा आगया है भाग मत, क्योंकि भागकर तू अपनी जान बचा न सकेगा। बैठा रह या उद्योगकर, भगवान् तेरी रोज़ की रोटी अवश्य भेजेगा। शेर या चीते के मुँह में भी क्यों न चला जावे, यदि तेरे मरने का दिन न आया होगा, तो वे भी तुझे हरगिज़ न खा सकेंगे।

जो तेरे भाग्यमें नहीं है वह तुझे न मिलेगा और जो तेरे भाग्यमें है वह तुझे जहाँ तू होगा वहीं मिल जायगा। सुना है, कि सिकन्दर बड़ी मिहनतसे अँधेरी दुनियामें गया किन्तु वहाँ पहुँच जानेपर भी वह अमृत न चख सका।

मछुआ बिना रोज़ीके दजला (नदी) में मछली नहीं पकड़ ... और मछली बिना मौत के खुश्की—स्थल—पर नहीं

मर सकती। लालची मनुष्य, जीविका की फ़िक्रमें, तमाम दुनिया में दौड़ता फिरता है और मृत्यु उसकी एड़ियों के पीछे लगी घूमती है।

द्वेषी मनुष्य निरपराध मनुष्यों से शत्रुता रखता है। मैंने एक मूर्खको एक प्रतिष्ठित मनुष्य का अपमान करते देखा। मैंने उससे कहा,—"महाशय! अगर आप भाग्यहीन हैं, तो इसमें भाग्यवानों का क्या दोष है?" जो तुमको देखकर जले, तुम उसका बुरा मत चीतो, क्योंकि वह अभागा स्वयँ आफ़त में फँसा हुआ है। जिसके पीछे ऐसा शत्रु (दूसरे को देखकर कुढ़ना) लग रहा है, उसके साथ शत्रुता करने की क्या आवश्यकता है?

श्रद्धाहीन विद्यार्थी निर्धन प्रेमी है, धनवान यात्री पङ्खहीन पक्षी है, अनभ्यस्त विद्वान् फल हीन वृक्ष है और विद्याहीन साधु बिना द्वारका घर है।

क़ुरान इस गरज़से प्रकाशित की गई थी, कि लोग उससे अच्छी-अच्छी नसीहतें सीखें, न कि इस मतलब से कि लोग उसका पाठ मात्र किया करें। निरक्षर योगी पैदल मुसाफ़िर के समान है और सुस्त विद्वान् सोते हुए सवार के माफ़िक़ है। वह पापी जो हाथ उठाकर ईश्वर से आशीर्वाद माँगता है, उस साधुसे अच्छा है जो अभिमान करता है। वह फ़ौजी अफ़सर जो शान्त, शील और मिलनसार है, उस क़ानून जाननेवाले से अच्छा है जो लोगोंपर ज़ुल्म करता है।

यह विद्वान् जो शास्त्रोंको पढ़कर उनके अनुसार नहीं चलता, भिड़—बर्र—के समान है, जो डङ्क मारती है किन्तु मधु नहीं देती। कठोर और गँवार भिड़से कह दो '—"जब तू मधु नहीं देसकती, तब डङ्क न मार।"

जिस पुरुष में पुरुषत्व नहीं है वह औरत है और जो साधु लालची है वह बटमार—लुटेरा—है। जिस मनुष्य ने लोगोंकी दृष्टिमें पवित्र बनने के लिये सफेद कपड़े पहिने हैं, उसने अपना ऐमालनामा काला किया है। हाथको सांसारिक वस्तुओंसे रोकना चाहिये। आस्तीनों के लम्बी अथवा छोटी होनेसे क्या?

दो मनुष्यों के दिलसे रञ्ज नहीं जाता; एक तो व्योपारी जिसका जहाज समन्दर में डूब गया है और दूसरा वह जिस का वारिस—उत्तराधिकारी—कलन्दरों के साथ बैठा हुआ है। यद्यपि बादशाह की दी हुई खिलअत कीमती होती है, किन्तु अपने मोटे-झोटे और फटे-पुराने कपड़े उससे कहीं बढ़कर होते हैं। यद्यपि बड़े आदमियों का खाना—भोजन—मजेदार होता है, तथापि अपनी झोलीका टुकड़ा उससे जियादा स्वाद होता है। सिरका या साग-पात जो अपनी मिहनत से जुटाया जाता है, वह गाँवके सर्दार के दिये हुए भेड़के बच्चे और रोटीसे अच्छा होता है।

जिस दवा पर भरोसा न हो वह दवा खाना और बिना

देखी हुई राहपर, बिना काफले के, अकेले जाना,—ये दोनों बातें बुद्धिमानों की मतिके विरुद्ध हैं।

लोगोंने एक बड़े भारी विद्वान् से पूछा कि, आप ऐसे विद्वान् किस तरह हुए? उसने कहा —"मैं जिस बातको न जानता था, उसके दर्याफ़ करने में शर्म न करता था। अगर तुम चतुर वैद्यको नाड़ी दिखाओगे, तो आराम होनेकी आशा कर सकोगे। हर चीज़के विषय में जिसे तुम नहीं जानते, पूछो, क्योंकि पूछने की थोड़ीसी तकलीफ़ से तुम्हें विद्याकी प्रतिष्ठित राह मिल जायगी।"

जब तुम्हें इस बातका निश्चय हो, कि अमुक बात मुझे उचित समयपर आप ही मालूम हो जायगी, तब तुम उस बातके जानने के लिये जल्दी मत करो। अगर थोड़ा सब्र न करोगे और जल्दबाज़ी करोगे, तो तुम्हारी इज्ज़त और रौब में कमी आजायगी। जब लुक़मान ने देखा, कि दाऊदके हाथमें लोहा, करामातके बलसे, मोम होगया, तब उसने यह समझकर कि मुझे यह भेद बिना पूछे ही मालूम हो जायगा, उससे कुछ न पूछा।

सामाजिक योग्यताओं में यह बात ज़रूरी है, कि या तो तुम घर-धन्धेमें लगो या एकान्तमें बैठकर ईश्वर भजन करो। जब किसीसे कोई बात कहो तब पहले यह विचारो, कि यह बात उसे रुचेगी या नहीं और उसका ध्यान मेरी ओर है या नहीं। अगर उसका ध्यान तुम्हारी तरफ़ हो, तो उसके

मिज़ाज के माफ़िक़ बात कहो। जो बुद्धिमान मजनूँ के पास बैठेगा, वह लैलाके जिक्रके सिवा और बात न कहेगा।

अगर कोई आदमी ईश्वर-भजन करने के लिये किसी शराब की दूकान में जाय, तो लोग सिवा इस बात के कि वह वहाँ शराब पीने गया था और कुछ न कहेंगे। इसी भाँति जो मनुष्य दुष्टों की सङ्गति करता है, चाहे वह दुष्टोंके से आचरण पर न चले, तोभी लोग उस पर दुष्टोंकीसी चालपर चलने का दोष लगावेंगे। अगर तुम नादानों की सुहबत करोगे, तो तुम पर नादानी का कलङ्क लगेगा। मैंने एक अक़लमन्द से कहा कि मुझे कुछ नसीहत दो। उसने कहा —"अगर तुम विचारवान और बुद्धिमान हो, तो मूर्खों की सङ्गति मत करो, क्योंकि उनकी सुहबत से तुम गधे हो जाओगे और अगर तुम मूर्ख हो तो तुम्हारी अज्ञानता और भी बढ़ जायगी।"

अगर किसी सीधे ऊँटकी मुहरी एक बालक के भी हाथ में हो, तो ऊँट उसे १०० कोस तक राज़ी-राज़ी लिये चला जायगा। किन्तु अगर रास्तेमें एक ऐसा खन्दक आजावे, जिसमें जान जानेका भय हो और बालक अज्ञानता-वश ऊँट को उसी खन्दकपर लेजाना चाहे, तो ऊँट उस समय बालक के हाथसे मुहरी छुड़ा लेगा और उसकी आज्ञानुसार कदापि न चलेगा, क्योंकि आफ़त के समय मिहरबानी करना बुरा है। कहते हैं कि, मिहरबानी से दुश्मन दोस्त नहीं होता, बल्कि दुश्मनी औरभी बढ़ाता है। जो मनुष्य तुमपर मिहर-

बानी करें, उसके साथ नम्र रहो और जो उसके विरुद्ध आच-रण करे, उसकी आँखोंमें धूल झोंको । कठोर और सख़्त मिजाज आदमी के साथ मिहरबानी और नरमी से बात चीत न करो, क्योंकि ज़ङ्ग खाया हुआ लोहा घिसी हुई रेतीसे साफ़ नहीं होता ।

जो शख़्स, अपनी बुद्धिमानी दिखाने के लिये, दूसरोंकी बातोंके बीचमें बोलता है वह अपनी नादानी प्रकट करता है । होशियार आदमी से जब तक कुछ पूछा न जाय, तब तक वह जवाब नहीं देता । बात चाहें जैसी साफ़ क्यों न हो, किन्तु उसका दावा करना कठिन है ।

झूठ कहना ज़ख़्म करना है । अगर घाव आराम भी होजाय, तोभी निशान बना रहता है । यूसफ के भाई झूठ बोलने में बदनाम होगये थे । जब उन्होंने सच बोला, तब भी किसीने उनका विश्वास नहीं किया । जिसको सच बोलने की आदत है, वह अगर कभी गलती से झूठ भी बोलदे तो उसका क़ुसूर माफ़ हो सकता है, किन्तु वह शख़्स जो झूठ बोलने के लिये प्रसिद्ध है, यदि सच भी बोले तो आप उसे झूठाही कहेंगे ।

यह बात संशय-रहित है, कि सृष्टिमें मनुष्य सब जीवोंसे ऊँचा और कुत्ता सबसे नीचा जानवर है, लेकिन अक्लमन्द कहते हैं, कि कृतघ्नता न माननेवाले आदमी से कृतज्ञता स्वीकार करनेवाला कुत्ता अच्छा है । अगर कुत्तेको एक

टुकड़ा रोटीका दे दो और पीछे तुम उसके सौ पत्थर भी मारो, तोभी वह रोटीके टुकड़ेको न भूलेगा। यदि तुम एक नीचको चिरकाल तक पालो, तोभी वह एक तुच्छसी बात पर तुमसे लड़नेको मुस्तैद होजायगा।

वह फकीर जिसका अन्त अच्छा है, उस बादशाह से भला है जिसका अन्त बुरा है। सुखसे पहले दुःख भुगतना अच्छा है, किन्तु सुखके पीछे दुःख भोगना भला नहीं है।

आस्मान ज़मीन को वृष्टिसे उपजाऊ बनाता है, किन्तु जमीन उसे बदले में धूलके सिवा कुछ नहीं देती। घड़ेमें जो कुछ होता है, वह उसीको टपका देता है। अगर तुम्हारी नज़र में मेरा स्वभाव अच्छा न जँचे, तो तुम अपने स्वभाव की उत्तमता को न छोड़ो। सर्व्वशक्तिमान् भगवान् पापीके पाप-कर्म को देखते हैं, किन्तु पापको छिपाते हैं, परन्तु पड़ोसी देखता नहीं है, लेकिन हल्ला मचाता है। भगवान् रक्षा करें। अगर आदमी आदमी के शुभ कामोंको जानता, तो कोई किसी को दस्तन्दाजी से न बचता।

सोना खानसे खोदकर निकाला जाता है, किन्तु सूमसे उसकी जान खोदने से। कमीने लोग खर्च नहीं करते, किन्तु खबरदारी से जमा करते हैं। उन लोगों का कहना है कि खर्च कर देनेसे खर्च करने की उम्मेद अच्छी है। तुम एक दिन कमीने को शत्रुओंकी इच्छानुसार रुपया छोड़ कर मरा हुआ देखोगे।

जो निर्बलोंपर दया नहीं करता, उसे बलवान के अत्याचार सहने पड़ेंगे। ऐसा सदा नहीं होता, कि बलवान भुजा निर्बल भुजाको परास्त ही करती रहे। निर्बल का दिल न दुखाओ, अन्यथा कोई तुमसे अधिक बलवान तुमको नीचा दिखावेगा।

एक फ़कीर अपनी ईश्वर-उपासना के समय कहा करता था —"हे भगवन्! बुरों पर दया करो, क्योंकि नेकोंपर दया करके तुमने उन्हें नेक बनाया है।"

अकलमन्द झगड़ा देखकर दूर हट जाता है और जब शान्ति देखता है तब लङ्गर डाल देता है, क्योंकि झगड़े के समय दूर रहने में कुशल है और शान्ति के समय, बीचमें रहने में सुख है।

बादशाह जालिमों के दूर करने के लिये, कोतवाल खून करनेवालों की खबरदारी के वास्ते और काजी चोरीके मुक़दमे सुनने के लिये है। दो ईमानदार आदमी अपनी नालिश करने काजीके पास नहीं जाते। जो तुम्हें हक़ मालूम हो उसे दे दो। झगड़े-तकरार के साथ देनेसे, राजीसे देना भला है। यदि कोई मनुष्य राजीसे सरकारी टैक्स नहीं देगा, तो हाकिम के नौकर जोरसे लेलेंगे।

बूढ़ी वेश्या सिवा फिर पाप न करने की प्रतिज्ञा के और क्या कर सकती है? पदच्युत कोतवाल मनुष्योंपर और जुल्म न करने के इकरार के सिवा और क्या कर सकता है? वह मनुष्य जो, जवानीमें, एकान्तमें बैठकर ईश्वर में चित्त

है, ईश्वर की राहमें शेर-मर्द हैं, क्योंकि वह मनुष्य तो अपने कोनेसे ही नहीं सरक सकता।

दो मनुष्य मरते समय अपने साथ शोक लेगये; एक वह जिसने जमा किया किन्तु भोगा नहीं, दूसरा वह जिसने विद्या पढ़ी किन्तु उसे काममें न लाया। किसीने ऐसा कञ्जूस विद्वान् नहीं देखा, जिसके दोष ढूँढने की लोगोंने कोशिश न की हो। लेकिन अगर एक दाता मनुष्य में दो सौ ऐब भी हों, तथापि उसकी दातारी उनको छिपा देती है।

---





# फुटकर नीति

विविध सस्कृत ग्रन्थों से ।



धनुर्धारी के बाण से कोई मरे और न भी मरे, किन्तु ुद्धिमान की बुद्धि से देश और देशाधिपति दोनों का नाश हो ाता है।

बुद्धिमान या तो सभा में जाय नहीं, यदि जाय तो यथार्थ ात कहे, क्योंकि बोलने और न बोलने, दोनो ही से, आदमी पराधी हो जाता है।

राज सभा में जाकर, राग-द्वेष छोड कर, ऐसी बात हनी चाहिये, जिससे मनुष्य को ईश्वर का अपराधी न नना पड़े।

राजाके पास कोई अदण्ड्य नहीं है, यदि गुरु, भाई, पुत्र, हित और माता पिता भी धर्म से डिग जावें, तो राजा को भी दण्ड दे सकता है।

अत्यन्त कठोर मालिक को त्याग देना ही ठीक है, मूर्ख र कृतघ्न स्वामी को भी छोड देना चाहिये, किन्तु सूम ी कन्जूस को तो सब से पहले छोड देना उचित है।

राजा के विचारवान न होने से, गुणवानों के गुण इस भांति नष्ट हो जाते हैं, जिस भांति पति के विदेश में होने से पतिव्रता स्त्रियों की छातियाँ नहीं उठती।

राज-माता, राज-पटरानी, राज कुमार, मन्त्री और राज प्रोहित इनके साथ राजा के समान बर्ताव करना चाहिये।

बुद्धिमान को चाहिए कि आमदनी से चौथाई खर्च करे, क्योंकि जिस दीपक में तेल होता है वह बहुत देर तक जलता रहता है।

बुद्धिमानों का काम है, कि धन को संग्रह करें, बढावें और यत्न से उसको रक्षा करें। जो मनुष्य बिना कमाये खाये चला जायगा, वह एक दिन सुमेरु को भी चाट जायगा।

राजा को उचित है, कि अज्ञानी अपराधियोंको, क्षमा करे क्योंकि सब आदमियों में चतुराई का होना कठिन है।

जो काम बड़े लोगों से नहीं होता, उसे छोटे आदमी कर लेते हैं, जैसे गुफा का अँधेरा सूर्य से दूर नहीं होता, किन्तु दीपक से दूर हो जाता है।

घर पर आये हुए दुश्मन का भी सम्मान करना चाहिए क्योंकि वृक्ष अपने काटनेवाले के सिर से अपनी छाया को हटा नहीं लेता।

सुगन्धपूर्ण केतकीका पुष्प जिस तरह कांटोंसे घिरा रहता है, उसी तरह राजा भी दुष्टों से घिरा रहता है।

बुद्धिमान को पदवी देने से राजा को तीन लाभ होते हैं यश, स्वर्ग और धन को प्राप्ति।

मूर्ख को पदवी देने से राजा को तीन दोष लगते हैं,— अपयश, नरक, और धन-हानि।

जो राजा का काम नमकहलाली से करता है और जिसे राजा चाहता है, उसे राजा के अन्य मुँह-लगे राज-सेवा से अलग करने के यत्न किया करते हैं।

राजा को उचित है, कि किसी बड़े काम पर किसी कर्मचारी को पाँच सात बरस से अधिक न रक्खे, क्योंकि जो पुराना नौकर होता है वह अपराध होने से भी नहीं डरता और स्वामी को कुछ न समझ कर स्वतन्त्रता से काम करता है।

विष मिला हुआ भात, हिलता हुआ दाँत, और बदनामी करानेवाला मन्त्री—सलाहकार—को एकदम जड़ से उखाड़ देना ही बुद्धिमानी है।

राजा, बावला, बालक और धन मदसे मतवाले, उस वस्तु की इच्छा करते हैं जिसका मिलना असम्भव हो।

छः कानों में पहुँचकर गुप्त-भेद प्रकट हो जाता है, इस लिए राजा को चाहिए कि दो से तीसरे के साथ सलाह न करे।

समय समय पर इनाम देनेवाला, अपराध हो जाने पर क्षमा करनेवाला और क़दरदान मालिक कठिनता से मिलता

है इसी भाँति स्वामी का भला करनेवाला और चतुर चाकर भी मुश्किल से मिलता है।

जो गुणों की कदर करना नहीं जानते, बुद्धिमान उनकी नौकरी नहीं करते। जिस भाँति ऊसर धरती के जोतने-बोने से कुछ लाभ नहीं होता, वैसेही अज्ञानी स्वामी की सेवा करने से कुछ नफ़ा नहीं होता।

राजा के रनवास में जानेवाली और रानियों से जो सलाह नहीं करता, वही राजा का प्यारा होता है।

जो मनुष्य राजाके वैरियोंसे वैर रखता है और उसके मित्रों अथवा कृपा-पात्रोंसे प्रेम रखता है, वही राजाका प्यारा होता है।

जो मनुष्य युद्ध में अपने स्वामी के आगे-आगे चलता है, नगर में उसके पीछे-पीछे चलता है और महल में द्वार पर बैठता है, वही राजा का प्यारा होता है।

राज-सभामें बिना पूछे कुछ न बोलना चाहिये। जो बिना पूछे बोलता है उसका अनादर होता है।

जिसे अच्छे-बुरे का ज्ञान नहीं है वह चाहे धनवान हो, चाहे कुलीन हो, चाहे राज-कुटुम्ब का हो और चाहे स्वयं राजा ही क्यों न हो, बुद्धिमान लोग उसकी नौकरी नहीं करते।

जिसकी नज़र में कांच मणि है और मणि कांच है, उसके पास अच्छा नौकर कदापि नहीं ठहर सकता।

यदि स्वामी भले-बुरे नौकरों से एकसा बर्ताव करता है, तो नौकरों का उत्साह भङ्ग हो जाता है।

प्रजा पर कृपादृष्टि रखने वाले राजा की वृद्धि होती है। प्रजा के नष्ट होने से राजा भी नष्ट हो जाता है।

निरक्षर ब्राह्मण, वृद्ध गृहस्थ, धनहीन कामी, धनिक तपस्वी, कुरूपा वेश्या और डरपोक राजा—ये छः व्यर्थ हैं।

कुत्ते में शुद्धता, ज्वारी में सत्य, सर्प में शान्ति, स्त्रियों में काम-शान्ति, मद्यप में तत्त्वविचार और राजा में मित्रता, न तो किसी ने देखी और न सुनी होगी।

बुद्धिमान को चाहिए कि मूर्ख के पास न जाय, यदि जाय तो ठहरे नहीं, यदि ठहर भी जाय तो कुछ कहे नहीं, यदि कहे भी तो मूर्खता की ही बात कहे।

बहुत मेल-जोल से अवज्ञा होती है और किसी जगह बारम्बार जाने से अनादर होता है। प्रयाग में गङ्गा बहती है, किन्तु प्रयाग वासी, गङ्गा को छोड़कर, कुओं पर ही स्नान करते हैं।

निष्कपट मित्र से, गुणवान चाकर से, शक्तिमान स्वामी से और प्यारी स्त्री से, मनुष्य अपने दुःख की बात कहकर, सुख पाता है।

जो बिना बुलाये जाता है, बिना पूछे बोलता है और अपने लिए राजा का प्यारा समझता है, वह मूर्ख है।

जो मनुष्य अपनी भला चाहनेवाले मित्र और सेवकों

बात नहीं मानता, वह अपने तईं मुसीबत में फँसाता और दुश्मनों को राजी करता है।

बड़े लोगों के घरमें; आसन, भूमि, जल और मीठी वाणी,—इनका अभाव कभी नहीं होता।

जैसे अपने प्राण प्यारे होते हैं वैसेही और जीवों को भी अपने प्राण प्रिय लगते हैं, इसीलिए सज्जन, सब जीवोंके प्राणों को अपने प्राणों के समान समझकर, उन पर दया करते हैं।

निर्बलों का बल राजा है, बालकों का बल रोना है, मूर्खों का बल चुप है और चोरों का बल झूठ है।

पुत्रसे अधिक कोई लाभ नहीं है, अपनी विवाहिता स्त्रीसे बढ़कर सुख नहीं है और झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है;

चतुर पुरुष को चाहिए कि अपने मा-बाप और गुरु की प्रशंसा उनके मुँह-सामने करे, मित्र और बन्धु-बान्धवों की बड़ाई उनकी पीठ-पीछे करे, सेवकों की प्रशंसा उनके काम करने के पीछे करे, किन्तु पुत्र और स्त्री की तारीफ़ उनके आगे या पीछे कभी न करे।

बुद्धिमान को चाहिए, कि बीती बातका सोच न करे और आगे होनेवाली बात की चिन्ता न करे, किन्तु सदा वर्तमान कालके अनुसार काम करे।

बिना सवारी सफर करने, मानहीन भोजन करने और नासमझ मालिक की नौकरी करने से बढ़कर और दूसरा दुःख नहीं है।

अन्नदान से विद्यादान की महिमा अधिक है, क्योंकि अन्नदानसे तो क्षण-भरका ही सुख होता है, किन्तु विद्यादान से जीवनभर सुख मिलता है।

जो मनुष्य कभी राजी और कभी नाराज होता है अथवा क्षण में प्रसन्न और क्षण में अप्रसन्न होता है, उससे दूर रहने में ही भलाई है।

घोड़े हाथी का बलिदान कोई नहीं करता, सिंह का बलिदान तो कियाही नहीं जाता, परन्तु बकरे की बलि दी जाती है, इससे मालूम होता है कि दैव भी दुर्बल को ही मारता है।

हवा वनके जलानेवाली आग की तो सहायता करती है, किन्तु दीपक को बुझा देती है, इससे मालूम होता है कि, गरीब से कोई दोस्ती नहीं करता।

जो आदमी अपने से दूर हो, जल में हो, दौड़ रहा हो, धनके घमण्ड में चूर हो अथवा मदसे मतवाला हो रहा हो, उसको नमस्कार प्रणाम आदि न करना चाहिए।

मूर्ख शिष्यके पढाने, बदचलन स्त्रीकी परवरिश करने और शत्रुओं की सङ्गति करने से बुद्धिमानों में भी दोष लग जाता है।

अपनी आज्ञानुसार चलनेवाले, निरपराध और प्रेमी को जो त्याग देता है, वह उसी तरह दुःख पाता है, जिस तरह रामचन्द्र ने सीता को त्याग कर दुःख पाया था।

अ... का जीव-हिंसा, चोरी, और पर-स्त्री-गमन से सदा बचना चाहिए।

जो मनुष्य किसी से वैर-विरोध नहीं रखते, न किसी से कुछ माँगते और न किसी की निन्दा करते हैं और बिना बुलाये किसी के घर नहीं जाते, वह मनुष्यरूप में देवता हैं।

विवाह के समय ऋतुदानके समय, सूली चढ़ने के समय, सर्व्वस्व नाश होने के समय तथा ब्राह्मण के लिए आवश्यकता होने से, पुरुष झूठ बोल सकता है, क्यों कि इन पाँच मौकों पर झूठ बोलने से पाप नहीं लगता।

स्त्रीकी जुदाई, स्वजनों का अपवाद, क़र्जदारी, कञ्जूस की नौकरी, दरिद्रता में मित्र-दर्शन,—ये पाँच बिना आग ही शरीर को जलाते हैं।

जो मित्रके साथ बात-चीत, खाना पीना और बैठना करते हैं, उनके समान पुण्यवान और नहीं है।

बिना कहे जिस भाँति शरीर का भला हाथ और आँख का भला पलक करते हैं, उस भाँति बिना कहे-सुने जो भलाई करे वही मित्र है।

मित्र चार प्रकार के होते है—(१) पेटके (२) सम्बन्ध के, (३) यशके (४) और वह जिनको दुःख से छुड़ाया हो।

रोगी, निर्धन, परदेशी और शोकाकुल मनुष्य के लिये मित्र-दर्शन ही औषधि है।

स्वाभाविक मित्र भाग्यसे मिलता है। उसकी मित्रता आपत्ति कालमें भी कम नहीं होती।

गुप्त भेदको प्रकाश कर देना, माँगना, निठुरता करना, चित्त चलायमान करना, क्रोध करना और मिथ्या बोलना, ये सब मित्रताके दूषण हैं।

सिंहनी एक ही पुत्र जनकर सुख पाती है, किन्तु गधीको एक सौ पुत्र होने पर भी, भार ही लादना पड़ता है।

बचपन में जिसने विद्या न पढ़ी, जवानी में जिसने धन नहीं कमाया, बुढ़ापे में जिसने पुण्य नहीं किया, वह चौथी अवस्था में क्या कर सकेगा?

बुद्धिमान अपने मनमें ऐसा समझकर, कि मैं न तो बूढ़ा हूँगा और न मरूँगा, विद्या और धनका संग्रह करे तथा मृत्युके हाथमें अपनी चोटी समझकर पुण्य करे।

विद्या के समान भाई नहीं है, रोगके समान शत्रु नहीं है, पुत्रके समान मित्र नहीं है और लेनदेनसे बढ़कर कोई दुःख दर्द नहीं है।

बिना विद्याके जीवन शून्य है, बिना बान्धवों के दिशाएँ सूनी हैं, बिना पुत्रके घर सूना है और जहां दरिद्रता है वहाँ सब ही सूना है।

आलसी को विद्या नहीं आती, विद्याहीन को धन नहीं मिलता, धनहीन का कोई मित्र नहीं होता और बिना मित्रके इस जगत् में सुख नहीं मिलता।

जुआ, वाहियात पुस्तकें पढना, नाटक से प्रेम, स्त्री-संग, आलस्य और नींद—ये छः विद्याभ्यास में बाधक हैं ।

बुद्धिमानको चाहिये कि अवस्था चढ जाने पर भी विद्या अभ्यास मन लगाकर करे, यदि इस जन्ममें फल न मिलेगा, तो अगले जन्ममें तो अवश्य ही मिलेगा ।

वसन्त बीतनेपर कोकिल के शब्द से क्या लाभ ? कायर के अस्त्र-शस्त्रों के सजने में क्या फायदा ? विपत्ति में जो काम न आवे, उस मित्र से क्या प्रयोजन ? विद्याहीन मनुष्यके जीनेसे क्या मतलब ? तात्पर्य्य यह है कि, ये सब वृथा हैं ।

मूर्ख मनुष्यको धनवान देखकर, विद्या-प्रेमी विद्यासे मन न खींचें, क्योंकि वेश्याओं को जडाऊ ज़ेवरों से लदी हुई देखकर, भले आदमियों की स्त्रियाँ वेश्या नहीं हो जाती ।

जो धन-लोलुप हैं, उनका न कोई गुरु है न मित्र, जो कामातुर हैं, उनको न लज्जा है न भय; जो विद्या-प्रेमी हैं, उनको न सुख है न निद्रा, जो भूखसे पीडित हैं, उनको न रुचि है न समय ।

विद्वान् दरिद्री भी उत्तम होता है । किन्तु मूर्ख धनवान अच्छा नहीं होता, क्योंकि सुन्दरी मृगनयनी स्त्री फटे पुराने कपडे पहन कर भी अच्छी मालूम होती है, किन्तु नेत्र-हीना—अन्धी—स्त्री वस्त्राभूषणों से सजी हुई भी अच्छी नहीं लगती ।

जिस कुलमें स्त्रियोंका आदर होता है वहाँ देवता प्रसन्न रहते हैं और जहाँ इनका अनादर होता है वहाँ यज्ञ-हवन आदि सब निष्फल हो जाते हैं।

जिस कुलमें स्त्री, पुत्री, पुत्र-वधु और बहिन दुखी रहती हैं वह कुल शीघ्र ही निर्धन हो जाता है, और जिस कुलमें उपरोक्त स्त्रियाँ सुखी रहती हैं, वह कुल धन-धान्य आदि से भरा-पूरा रहता है।

उन्नति चाहनेवाले पुरुष को चाहिये कि यज्ञोपवीत, विवाह आदि उत्सवों में वस्त्र-अलङ्कार आदि से स्त्रियों का सम्मान करें।

जिस कुलमें पतिसे स्त्री और स्त्रीसे पति प्रसन्न रहता है, उस कुलमें अवश्य सुख होता है।

स्त्रीको उचित है, कि बालकपन, जवानी और बुढ़ापे आदि किसी अवस्था में भी स्वतन्त्र न रहे। उसे हमेशा पति-पुत्र के अधीन रहना उचित है।

स्त्री बचपनमें पिताके अधीन रहे, जवानी में पतिके अधीन रहे, जब पति मर जावे तब पुत्रके अधीन रहे, किन्तु स्वतन्त्र कभी न रहे।

स्त्रीको पिता, पुत्र और पतिसे कदापि अलग न होना चाहिये। इनसे अलग रहने से स्त्री दोनों कुलोंका नाम बदनाम करती है।

पति स्त्रीको ऋतुदान एवं अनेक दूसरे अवसरों पर सुख

देना । स्त्रीके लिये पतिसे बढकर सुख देनेवाला और कोई नहीं है, अत. स्त्रीको सदा पतिकी आज्ञा में रहना ही आवश्यक है।

यदि पति दुष्ट, क्रोधी, नपुन्सक, लम्पट, कोढी, लँगडा, लूला, काना, अन्धा, बहरा हो, तोभी पतिव्रता को ऐसे पति का भी अपमान न करना चाहिये, क्योंकि ऐसा पति भी देवता के समान पूजनीय है।

स्त्रीके लिये न व्रत-उपवासकी आवश्यकता है न यज्ञ की, वह केवल पति-सेवासे ही स्वर्गमें सम्मान पाती है।

पति-लोक चाहनेवाली पतिव्रता अपने जीवित अथवा मृत पतिका अप्रिय कार्य कदापि न करे।

यदि स्त्रीका पति मर जावे, तो वह पुष्टिकारक भोजन न करे, किन्तु कन्दमूल फल-फूल खाकर गुज़ारा करे और पर-पुरुष का नाम भी न ले।

जो स्त्री पुत्रके लिये पर-पुरुष का सग करती है, वह इस लोकमें बदनाम और पतिलोक से च्युत होती है।

जो स्त्री पर-पुरुष से व्यभिचार करती है, वह इस लोक में निन्दित होती है, और मरनेके पीछे स्यारी होती है एव कुष्ठ आदि रोगोंसे पीडित होती है,

वही स्त्री है जो गृह-कार्यमें प्रवीणा है, वही स्त्री है जो सन्तान प्रसव करती है, वही स्त्री है जो पतिप्राणा है, वही स्त्री है जो पतिव्रता है।

जिस स्त्रीसे पति प्रसन्न न हो, उसे स्त्री नहीं कह सकते। पतिके प्रसन्न रहने से स्त्रियोंके सब देवता प्रसन्न रहते हैं।

पतिके क्रोध करने और कुपित होनेपर भी जो स्त्री प्रसन्न सुखी रहती हैं, वह धर्मभागिनी है।

स्त्रीके पास अच्छे-अच्छे कपड़े और गहने न हों, तो कोई हर्जकी बात नहीं है, क्योंकि स्त्रीका सच्चा भूषण ( गहना ) तो पति ही है। जो स्त्री पतिहीना है, वह कैसी ही सुन्दरी क्यों न हो, किन्तु भली नहीं मालूम होती।

जिस भांति सपेरा जबरदस्ती सांपको बिलसे निकाल लेता है, उसी भांति पतिव्रता पतिको लेकर स्वर्गमें जाती है।

स्त्रीका धर्म है कि, अपने पतिकी कही हुई गुप्त बातें और घरका धन वगैर किसी शख्स को भूलकर भी न बतावे।

झूठ बोलना, साहस करना, फ़रेब करना, पर धन देखकर कुढ़ना, अत्यन्त-लालच करना, मूर्ख रहना और अपवित्र रहना,—ये सब स्त्रियोंके स्वाभाविक दोष हैं।

अग्निकी ईंधन से, समुद्र की नदियों से, मृत्युकी मनुष्यों से और स्त्रियोंकी पुरुषों से कभी तृप्ति नहीं होती।

दान, मान, सम्मान, सिधाई, सेवा, शस्त्र, शास्त्र, इनमें से किसीसे भी स्त्रियां प्रसन्न नहीं होतीं। स्त्रियां सब तरह विषम हैं।

गुणवान, कीर्त्तिमान, रतिशास्त्र पारङ्गत, धनवान,

* दर्शन पतिका तिरस्कार करके स्त्री मूर्ख से मन मिला लेती है।

लज्जा, नम्रता, चातुरी और भय,—स्त्रीके पातिव्रत के कारण नहीं। स्त्रीके चाहनेवाले का अभाव ही उसके पातिव्रत का कारण है।

जिस शास्त्रको शुक्र और वृहस्पति जानते हैं, उस शास्त्रको स्त्री स्वभाव से ही जानती है।

घोड़ों का कूदना, बादल का गरजना, स्त्रियोंके मनकी बात, पुरुष के भाग्यका हाल, दृष्टि का होना या न होना,—इन छ बातोंको देवता भी नहीं जानते, तब मनुष्य विचारे किस भांति जान सकते हैं?

राजाके मनकी बात, सूमके धनका हाल, दुष्टके दिल की इच्छा, स्त्रीका चरित्र और पुरुषका भाग्य,—इनके विषयमें देव भी अनजान हैं, तब मनुष्य विचारा किस खेतकी मूली है?

जो पुरुष अज्ञान औरत की बातपर चलता है और आप कुछ नहीं विचारता, वह काठका उल्लू है।

नदी, नखवाले जानवर, सींगवाले पशु, हथियारबन्द सिपाही, राजकुल और स्त्री का विश्वास हरगिज़ न करना चाहिये।

जिन घरोंमें स्त्री पुरुषों के दर्म्यान प्रेमका अभाव होता है, उन घरोंसे लक्ष्मी कूँच कर जाती है और वहां दरिद्रता का निवास हो जाता है। ऐसे स्त्री-पुरुषों का संसारमें होना ही वृथा है।

## उर्दू और फारसी की पुस्तकों से अनुवादित।

धन और यौवन पर जो अभिमान करता है, वह मूर्खों का सिरताज है, बुद्धिमान जानते हैं, कि दौलत और जवानी बादल की छाया और चपला की चमकके समान है।

जब तक तुम्हारी जान और इज्जत खर्च करने से बच सके, तब तक जानको खतरेमें न डालो और इज्जतमें बट्टा मत लगाओ। ध्यान रक्खो कि, काया नाश होने पर फिर नहीं मिल सकती और गयी हुई इज्जत फिर नहीं लौट सकती। यदि आप सलामत रहे गे, तो धन फिर भी बहुतेरा हो सकेगा। मनुष्य धन कमाता है, किन्तु धन मनुष्य को पैदा नहीं करता।

यदि कोई मनुष्य तुम्हारी खुशामद करे, तो उसकी खुशामद में आकर फूल न जाओ, क्योंकि आजकल मतलब की खुशामद रह गई है। बिना मतलब कोई खुशामद नहीं करता। यदि तुम खुशामद से खुश होगे, तो तुम्हें बहुत कुछ ठगाना और दुःखित होना पड़ेगा।

जिससे पहले कुछ दुश्मनी हो चुकी हो, उससे खूब होशियार रहो। यदि वह तुमसे दोस्ती करना चाहे, तो सम्हल कर दोस्ती करो। अगर सिधाई से धोखेमें आजाओगे, तो पीछे बहुत पछताना पड़ेगा।

अगर तुम्हारा कहना बावन तोले पाव रत्ती ठीक हो, तोभी मूर्ख से बहस न करो। मूर्ख के साथ बहस करनेसे सिवा नुकसान के नफ़ा न होगा।

जहाँ बहुत से गप्पी गप्प हाँक रहे हों, वहाँ तुम चुप रहो, क्योंकि जब मेंडक टरटर किया करते हैं, तब कोयलें नहीं कूका करतीं।

कम बोलना, कम खाना, कम सोना, कम क्रोध करना, और कम लालच करना,—काम बुद्धिमानों का है।

किसीको अगर कुछ बुरा भला कहना हो, तो एकान्तमें ले जाकर कहो। जो बात चार आदमियों के सामने कही जाती है, वह बहुत ही नागवार गुज़रती है। यदि दो चार बार एकान्त में समझाने से न समझे, तब तुम उसे चार आदमियों में फटकार कर शर्मिन्दा कर सकते हो।

अगर किसी पर नाराज हो और उसे बुरा भला कहना चाहो, तो खूब सोच समझकर मुँहसे बात निकालो, क्योंकि ज़बान का जख्म तीरके जख्म से बुरा होता है।

जो धनवान होकर सुख-भोग नहीं करता और दरिद्रियों का पालन नहीं करता तथा जो विद्वान् होकर दूसरोंको विद्या-दान नहीं करता, वह इस जगत् में वृथा आया है।

चोर, ज्वारी, रण्डीबाज, राजद्रोही और बदमाशों की सुहबत मत करो। जो खुद ऐसा कोई ऐब नहीं करता; किन्तु

इनकी संगति मात्र करता है वह भी बदनाम हो जाता है और किसी न किसी दिन मुसीबत में फस जाता है।

बुद्धिमान को चोर, ज्वारी, बेईमान, बदमाश एवं औरतों की चालाकियाँ जान लेनी चाहिये, किन्तु अक्लमन्दी तभी है, जब खुद कभी इनके फन्देमें न फँसे।

बात, बख्त, जवानी और आब, एक बार जाकर नहीं लौटतीं; अत: बुद्धिमानों को इनकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये।

मोती और मनुष्य की कीमत आब पर है। बेआब मोती और बेइज्जत मनुष्य निकम्मे हैं। मनुष्य को, जिस तरह बने, अपनी इज्जत बचानी चाहिये।

राजकर्मचारियों की आँखोंमें शील या मुहब्बत नहीं होती। ये लोग जिससे दोस्ती रखते हैं और जिससे पैसा पाते हैं, उसीकी अधिक मिट्टी खराब करते हैं।

नीति और धर्मके अनुसार चलकर पैसा पैदा करो। जो अन्याय, अनीति और अधर्म के आश्रय से धन कमाते हैं, अन्तमें उनका बुरा ही होते देखा गया है।

नीचके साथ वाद-विवाद और झगड़ा मत करो; अगर करोगे तो लज्जित होगे और पछताओगे। यदि तुम उससे जीते तोभी हारे और हारे तो हारे ही हो।

दुनिया में अनेक प्रकार के इल्म और हुनर हैं। अगर

तुम ... न्द और हुनरमन्द होना चाहो, तो अक्लमन्द और हुनरमन्दों की सुहबत करो।

वनमें, सूने मकान में और युद्धभूमि में हरगिज गाफ़िल होकर मत सोओ ; जहाँ तक हो सके, जागते रहो । यदि इस नसीहत पर अमल न करोगे , तो शायद आपको अपनी जानसे हाथ धोना पड़ेगा ।

दिल्लगी करनेसे दिल ज़रूर खुश होता है , मगर ज़रासी दिल्लगी से अक्सर बड़ी-बड़ी दुर्घटनायें हो जाती हैं , अतः चतुर पुरुषोंको अधिक दिल्लगी न करनी चाहिये । अक्लमन्दों ने कहा है :—"रोगका घर खाँसी और लड़ाई का घर हाँसी ।"

अगर दो आदमी एकान्त में बातें करते हों, तो उनके पास मत जाओ । अगर तुम्हें उनसे कुछ काम हो, तो ज़रा सब्र करो । अगर बहुत ही जल्दी हो, तो जिससे काम हो उसको अपने पास बुलाकर या उसे अपने आनेकी सूचना देकर उससे मिलो ।

आपको जो ज़रूरी ज़रूरी काम करने हैं, उन्हें झटपट कर डालो , जब मौत सिरपर आजायगी, तब रोने पछताने और हाथ मलनेके सिवा कुछ न कर सकोगे। जिन्दगी का कुछ भरोसा नहीं है, साँस आया और न आया ।

बुद्धिमानको चाहिये कि जैसी सभा हो वैसी बात कहे , जितनी शक्ति हो उतना ही बोझ उठावे, जैसा घोड़ा हो वैसा ही चाबुक लगावे और जैसा समय हो वैसी ही बात बनावे ।

अगर तुम्हारा कोई काम ख़ुशामदसे निकल सके, तो अवश्य खुशामद करो, क्योंकि ख़ुशामदसे ख़ुदा भी राज़ी हो जाता है, तब मनुष्य क्यों न राज़ी होंगे। जो ऐंठमें आकर अपना काम निकालनेके लिये खुशामद नहीं करते, वे मूर्ख हैं। बुद्धिमान वही है, जो जैसे तैसे अपना काम बना ले।

अगर क़दरदान गरीब भी हो जावे तोभी उससे मिलो, अगर क़दर न जाननेवाला धनवान भी हो, तोभी उसके पास न जाओ।

अगर तुम्हें रेल, ट्राम या किसी दूसरी चलती सवारीसे उतरना हो, तो जिस तरफ सवारी जाती हो उसी तरफ़ मुँह करके फुर्तीसे उतर पड़ो। यदि दूसरी तरफ़ मुँह करके उतरोगे, तो गिर पड़ोगे और सख़्त जख़्मी हो जाओगे।

जब तक हो सके, किसीके क़र्ज़दार मत बनो। क़र्ज़दारी बड़ी खराब है। इसके आगे बड़े-बड़े योधाओंको हार खानी पड़ती है। बातकी बात सुननी पड़ती है और ब्याजका ब्याज देना पड़ता है। हम तो यही कहते हैं, कि अगर घरमें खाने को न हो तो फ़ाका कर लो, मगर किसीसे कुछ उधार न माँगो। किसी बात की चिन्ता मत करो, चिन्तासे काया खाक हो जाती है। चिन्ता करनेसे कुछ लाभ भी नहीं होता। जो होनहार होती है, वह होकर रहती है। इसीलिये अक्लमन्द लोग चिन्तासे दूर ही रहते हैं।

खाने-पीनेमें, व्योपारमें, पढ़ने-पढ़ानेमें और सवाल जवाब करनेमें शर्म न करो।

नौकर, बालक, शागिर्द और औरत को बहुत मुँह मत लगाओ। अगर इनको सिरपर चढाओगे, तो ये नाकमें दम कर देंगे, अतः इनको मौके-मौके पर घुड़की बताना ही भला है।

अगर बड़प्पन चाहते हो तो नम्रता धारण करो, यदि धनवान होना चाहते हो, तो सब्र करो और नियत साफ़ रक्खो।

रसायन कोई नही बना सकता। जो रसायन बनाने का दावा करे, उसे ठग और मक्कार समझो। बहुतेरे बनावटी साधु फ़कीर गली-कूचोंमें फिरते रहते हैं और भोले-भाले लोगों को अपने फन्देमें फँसाकर महा कंगाल बना देते हैं। रसायन बनवानेवालों की रसायन तो नहीं बनती, किन्तु ठगोंकी रसायन तो बन ही जाती है।

जो आदमी धनवान, विद्वान्, बलवान, हाकिम और हकीम तथा चुगलखोरसे मेल-मुलाक़ात रखता है, वह सदा सुखी रहता है।

मिहनत करने और नियत साफ़ रखनेसे धन आता है। अपने दोष और दूसरोंके गुण प्रकट करनेसे बड़प्पन मिलता है।

अगर कोई कुछ लिखता हो, तो तुम उसके पास जाकर उसकी लिखी हुई चीज़ मत देखो। यदि वह इजाज़त दे, तो देख सकते हो।

अगर किसीके घर जाओ, तो एकाएक धड़धड़ाते हुए उसके घरमें न घुस जाओ। कौन जाने, घरके लोग किस तरह बैठे हों या क्या करते हों। जानेवाले को पहले आवाज देनी चाहिये, यदि दरबान हो तो उसके द्वारा खबर भिजवानी चाहिये। जब घरवाले बुलावें तब अन्दर आना चाहिये।

किसीके घरमें जाकर उसकी चीजों को उलट-पुलट कर देखना अथवा यों पूछना कि, अमुक चीज तुमने कहांसे और कितने को खरीदी इत्यादि बातें मूर्खता प्रकट करती हैं।

अगर किसी चिट्ठी, बिल, चिक, हुण्डी, दस्तावेज वगैर दस्तखत करने हों, तो उन्हें खूब पढ़ समझकर दस्तखत करो, अन्यथा धोखा खाओगे और पछताओगे। साथही लोग तुम्हें उल्लू बनावेंगे।

अगर कोई शख्स तुम्हारे सामने आकर किसी की निन्दा करे, तो तुम समझ लो कि वह तुम्हारी निन्दा भी दूसरेके सामने जरूर करेगा।

अशराफ़ अगर गरीब हो जावे, तोभी अशराफ़-अशराफ़ है। अगर नीच धनवान होजावे, तोभी नीच-नीच ही

विद्या, बुद्धि, बल या धन, वह पर वही काम आता है जो अपने पास होता है। पराई विद्या-बुद्धि आदिसे समय पर काम नहीं निकलता।

अगर नीचके हाथ धन आजाता है, तो वह अभिमान करने

[illegible] यदि उसके हाथ हुकूमत आजाती है, तो वह लोगों पर जुल्म करने लगता है।

जो आदमी अपना कारोबार दूसरेके हवाले करके, आप आनन्द की वंशी बजाता है, उसका काम अवश्य बिगड जाता है। दूसरोंसे कोई काम सिद्ध नहीं होता, खेती खसम से होती है। हां, काम दूसरोंसे कराइये, मगर निगरानी अपनी रखिये, फिर कुछ नुकसान न होगा।

यदि चोर, ज्वारी और बदमाश आदमी कोई चीज सस्ती से सस्ती बेचे, तोभी मत खरीदो, अन्यथा एक न एक दिन पकडे जाओगे और अपने किये का फल पाओगे।

बडोंके पास बैठनेसे बडप्पन मिलता है, छोटोंके पास बैठनेसे छुटाई आती है। गन्धी की दूकान पर बैठनेसे खुशबूसे दिमाग तर होता है, किन्तु लुहार की दूकान पर बैठनेसे कपडे काले होते हैं।

बुरा काम यदि छिपकर भी करोगे, तोभी छिपा नहीं रहेगा; अन्तमें दुनिया जान ही जायगी। यदि दुनिया न भी जानेगी, तो सर्व्वव्यापक परमात्मा तो उसे देखही लेगा।

जो मनुष्य भगवान्, मृत्यु और अपनी इज्जतसे डरता है, उससे कोई बुरा काम नहीं होता।

माता-पिताने तुम्हारे पालने-पोषनेमें बडा कष्ट उठाया है, अत: तुम सदा उनकी आज्ञापालन करो। जिस कामसे

उनका जो राजी रहे वही काम करो। भूलकर भी ऐसा काम न करो, जिससे उनके दिलको ठेस पहुँचे।

गुण माने उसे गुण सिखाओ, कङ्गाल को धन-दान करो, सबको नसीहत दो और नेकी बुरे-भले दोनों प्रकारके मनुष्यों के साथ करो।

स्त्री, बालक, मतवाला, मूर्ख और रोगी अगर तुम्हें गाली भी दें, तो भी बुरा मत मानो, बुरा उनकी बातों का मानना चाहिये, जिनमें कुछ अक्ल हो। मूर्खकी बातका बूरा माने, वह भी मूर्ख ही है।

अगर तुमसे बडे या तुम्हारे गुरु रास्ते में मिल जावे, तो उनको प्रणाम राम राम आदि अवश्य करो। बड़ोंके सामने नीचे स्थान पर बैठो। उनके सामने हँसी-मसखरी और चपलता आदि मत करो।

आजकल वह ज़माना है, कि बात करनेमें दुश्मनी पैदा हो जाती है, इसवास्ते किसी से अधिक मेल-जोल मत बढ़ाओ। जहाँ अधिक मेल होता है वहीं दुश्मनी होते देखी जाती है। जिनसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता, उनसे दुश्मनी कभी नहीं होती।

अभिमान भूल कर भी न करो। अभिमानी से सभी नफ़रत करते हैं। अभिमानी का सिर नीचा हुए बिना नहीं रहता।

अगर कोई गुप्त सलाह करनी हो तो चारों ओर

किलाकार देख लो , क्योंकि दुश्मन हर समय टोहमें रहता है। शत्रुके पास गुप्त भेद चला जानेसे सब काम चौपट हो जाता है।

जिस घरमें बेवकूफों के साथ सलाह-मशवरा होता है और जहां स्त्री-पुरुषोंमें झगडा हुआ करता है, वहांसे दौलत हजार कोस दूर भागती है।

जिस भाँति तपाने, छेदने, काटने और गलानेसे सोने की परीक्षा होती है , वैसेही विद्या, बुद्धि, स्वभाव और चालचलन से पुरुष की जाँच होती है।

छुरी, छडी, छाता, छल्ला और लोटा,—ये पाँचों चीजें सफरमें अपने पास अवश्य रक्खो।

अगर अदालतमें जानेका काम पडे, तो हाकिमके सामने उतनी ही बात कहो जितनी कि वह पूछे। सवाल का जवाब बढाकर देना या और-का-और जवाब देना मूर्खता की निशानी है। ऐसी मूर्खतासे हाकिम लोग अकसर चिढ भी जाते हैं।

बालक, मूर्ख, बुजुर्ग, पागल, शागिर्द और मुसाफिर से मसखरी मत करो , अगर करोगे तो अवश्य दुःख पाओगे।

जिस बात को तुम भली भाँति नहीं जानते,उसके विषय जिद मत करो और न अनजानी बात पर बाजी लगाओ।

किसी की बुराई मत करो। जो और का बुरा करता है उसका ईश्वर बुरा करता है , कहते हैं कि जो दूसरे को कुआ खोदता है उसके लिये खाई तय्यार हो जाती है।

जिस बातसे दूसरेका दिल बिगडे, वह बात अपनी जबान से हरगिज़ न निकालो। दूसरेके दिल को रञ्ज पहुँचानाही सबसे बड़ा पाप है।



है और मृत्यु-काल तक रुपये का लोभ नहीं त्यागते, उनको सुख और स्वर्ग नहीं मिल सकता।

अगर मनुष्य खाने-पीने और सोने के सिवा कुछ काम न करे, तो मनुष्य और पशुओं में कुछ अन्तर नहीं है। इस से मालूम होता है कि, मनुष्यका भाग्योदय उसके अपने हाथमें है।

जो मनुष्य जवानी में पराये धनसे आनन्द नहीं करता; किन्तु अपनी भुजाओं के बल से कमाये हुए धनसे ही सुख भोगना चाहता है, वह पिछली अवस्थामें अवश्य धनवान और सुखी होता है।

अगर तुम्हें कोई जवाब-तलब चिट्ठी मिले, तो तुम उसका जवाब फौरन लिख दो। यदि तुम उसके जवाब लिखनेमें देर करोगे, तो आलस्य-वश देर पर देर होती चली आयगी।

अगर तुमको अपनी घरू चिट्ठी में किसी मनुष्य की बुराई लिखनी हो तो उसका नाम न लिखो, क्योंकि उस चिट्ठी का दूसरे मनुष्य के हाथ में पड़ जाना सम्भव है।

अगर तुम विदेश में धन्धा-रोज़गार करने के लिये जाओ; तो नियत समय पर घरवालों को चिट्ठी लिखा करो। चाहे महीने में एक बार भेजो, चाहे चौथे आठवें दिन भेजो, मगर नियत समय पर चिट्ठी अवश्य भेजो। घरवाले चिट्ठी की बाट देखा करते हैं और जब समय पर चिट्ठी नहीं पहुँचती, तब बहुत कुछ घबराते हैं। तुमको इस बात का ख़याल रखना

चाहिये, कि तुम्हारी ज़रासी सुस्ती और गफ़लत से उन लोगों को कितना कष्ट होगा।

जब तुम्हें कोई ऐसी चिट्ठी मिले जिसका जवाब देना जरूरी है, तब तुम चिट्ठी पढ़ने के साथ उसका जवाब लिख दो, क्योंकि उस समय तुम्हें उस चिट्ठीका मतलब भली भाँति याद होगा। चिट्ठी पढ़कर तत्काल जवाब लिखने से चिट्ठीका जवाब अच्छा लिखा जाता है, दूसरे जवाब लिखने में आसानी होती है और दिक्कत कम होती है।

चिट्ठी पढ़ने में निम्नलिखित बातों पर ध्यान रक्खो —

(१) जब तुम्हें किसी परिचित मनुष्य या किसी रिश्तेदार की चिट्ठी मिले, तो यह बात देखो कि लिखावट उसीके हाथ की है या नहीं। इस बातपर ध्यान देनेसे बहुत कुछ लाभ होता है (२) चिट्ठी खोलने से पहले, जहाँ से चिट्ठी चली और जहाँपर आयी है, उन दोनों स्थानोंकी मुहरोंकी तारीख वगैरह देख लो। इससे आपको यह मालूम हो जायगा कि, चिट्ठी लिखनेके दिन ही डाक में छोड़ी गयी थी या पीछे। यही पोष्टमैन ने चिट्ठी आनेके दिन ही दी या पीछे दी।(३) सब कामों को छोड़ कर पहले चिट्ठी पढ़ लो। (४) चिट्ठी खोलने के समय इस बात का ध्यान रक्खो कि डाक-मुहर न फटने पावे। सम्भव है कि डाक-मुहर फाड़ देने से तुमको उसके बिना छटपटाना पड़े।

जिस समय तुम्हें कोई बीमारी हो, उस समय किसी को

भी पत्र मत लिखो। अगर तुम्हें किसीको अपनी सेवा-सुश्रुषा के लिये बुलाना हो, तो बेशक बुलवा सकते हो।

जो मनुष्य अपनी अन्तिम अवस्थामें धनवान, कीर्त्तिमान होते हैं या ऐसी अवस्था में मरते हैं, वे ही सच्चे धनवान और कीर्त्तिमान हैं।

जब तक तुम किसी की अन्तिम अवस्था न देख लो, तब तक उसे सुखी मत कहो, क्योंकि जो आज पूर्ण सुखी और ऐश्वर्य्यशाली है वह कल राह का भिखारी या उससे भी बदतर हो सकता है। जो मरने के समय तक सुखी है, वही सच्चा सुखी है।

जिन्हें खाने को अन्न और पहनने को कपड़े नहीं मिलते, उनसे मिहनत-मजदूरी करा कर उनका पेट भरने से बड़ा धर्म होता है।

अगर कोई काम तुम्हारी इच्छानुसार न हो, तो रात-दिन उसी चिन्ता में मत लगे रहो। अगर ऐसा करोगे तो तुम्हारा दिमाग खराब हो जायगा और तुम पूरे पागल हो जाओगे। अगर काम न बने और मनोरथ पूर्ण न हो, तो बिलकुल चिन्ता न करो। अपना ध्यान उस बात से हटाकर किसी दूसरी आनन्ददायिनी बात की तरफ लगा दो। अगर तुम्हारा चित्त एक ही विषय में लगा रहता हो, तो सफर करके अपना ध्यान दूसरी तरफ लगा दो।

दरवाजे के सूराख से किसी की गुप्त बात छिपकर सुनना,

किसी को कुछ करते हुए छिपकर देखना और किसी की चिट्ठी बिना मालिकको आज्ञाके पढना,—ये दोनों बातें बहुत ही बुरी हैं।

जब तुमको क्रोध आ रहा हो, तब एक भी अक्षर मत लिखो। क्रोध की हालत में लिखने से, तुम्हारा लेख बिल्कुल खराब हो जायगा।

छोटे-छोटे बालकों और नौकरों को गाली देकर मत बुलाया करो। ऐसा करने से परिणाम में बड़ी भारी बुराई होना सम्भव है।

जो काम तुमको कल करना है, उसका ढंग आज ही लगा लो। दूसरे दिनके काम का कार्य्य-क्रम पहले दिन ही निश्चित कर लेने से काममें कभी गड़बड़ नहीं होती। बड़े-बड़े सभी काम, विशेष कर छापेखाने के काम, इस ढंग से सुचारु रूप से चलते हैं।

जब तुम्हारे हाथमें एक काम हो, तब दूसरा काम हाथमें मत लो। जब एक काम हो जावे, तब दूसरेमें हाथ लगाओ। बहुत आदमी एक कामको पूरा किये बिना ही, दूसरे काममें हाथ लगा देते हैं, इससे उनके दोनोंही काम बिगड़ जाते हैं।

किसी काममें शीघ्रता मत करो। जो काम अत्यन्त शीघ्रता से किये जाते हैं, वे सब बिगड़ जाते हैं, बल्कि उन कामोंको फिरसे करना होता है और धीरे-धीरे करनेसे जितना समय लगता, उससे दूना समय फिर करनेसे लग जाता है।

जिस कामके करनेसे तुम्हारा और तुम्हारे बालबच्चोंका पेट भरता है, उस कामको छोड़कर दूसरा काम मत करो, क्योंकि जिस कामको तुम कर रहे हो, उसमें तुम्हारा अनुभव है। दूसरे कामको तुम कर सको, या न कर सको, इसमें सन्देह है। जो जाने हुए कामको छोड़कर, अनजाना काम करता है, उसे कभी लाभ नहीं होता।

अगर मनुष्य किसीका क़र्ज़दार न हो और उसके पास अपने घरकी जमीन हो, तो बहुतही अच्छा हो, क्योंकि खेतीसे बढ़कर सुखदायी और स्वतन्त्र धन्धा और नहीं है।

जब तुम खेती और व्यापार दोनोंमें से एक भी न कर सको, तब नौकरी करो। खेती वगैर हो सकने पर, नौकरी करना भूल है। नौकरी करना और साँपसे प्रेम करना एक ही बात है।

जो मनुष्य सुकर्म करता है वह बहुत दिन तक जीता है और जो दूसरोंके सुखकी फिक्र रखता है, वह स्वयं सुख पाता है।

दूसरोंको अच्छी-अच्छी चीज़ें देना उदारताका लक्षण है और अपने लिये अच्छी-अच्छी चीज़ें चुनकर रख छोड़ना स्वार्थपरता और नीचताकी निशानी है।

अगर किसीके साथ भलाई करो, तो उसे अपने मुँहसे मत कहो, क्योंकि ऐसा करनेसे किया हुआ उपकार नष्ट हो जाता है।

जिसने बहुतसा धन कमाया वह धन्य नहीं है, किन्तु वह पुरुष निस्सन्देह धन्य है और वही सच्चा सुखी है, जिसने परोपकार किया है।

संसारमें ऐसा कोई जीव नहीं है, जिससे कुछ काम न निकले अत वृथा जीव-हिंसा न करो।

अगर तुम्हें तुम्हारी इच्छानुसार धन्धा-रोजगार या नौकरी न मिले, तो हाथ पर हाथ धरकर न बैठ जाओ। अपने मामूली खर्चके लायक़ तो धन्धा अवश्य ही करो। दूसरोंसे ऋण ले लेकर या उनके गले पड़कर पेट भरना लज्जाकी बात है।

रोज़गार चाहे जूते पोंछनेका ही क्यों न हो, यदि वह चतुराई से किया जाय, तो उसमेंभी बहुत लाभ हो सकता है।

जो मनुष्य अपने भीतर-बाहर एकही विचार रखता है और अपने विचारके अनुसार सच्चे अन्त करणसे काम करता है, वह अन्तमें कीर्ति लाभ करता है।

जिसके सिर पर एक कौड़ीका क़र्ज़ नहीं होता और जो किसीका ज़ामिन नहीं होता, वह सदा सुखकी नींद सोता है।

जो विवाहित पुरुष, रातको भोजन आदिसे निपट कर, गलियोंमें बीड़ी पीता हुआ फिरता रहता है, वह सांसारिक सुखसे हाथ धो बैठता है।



जो शख्स तुम बारम्बार भला-बुरा कहते हो, यदि वह शख्स तुम्हारी बातोंका प्रकटमें बुरा न माने, सब कुछ बर्दाश्त करता रहे और अपनी गुप्त बात तुम पर ज़रा भी ज़ाहिर न होने दे, उस शख्ससे खूब खबरदार रहो। कौन जाने, वह किस दिन तुम्हारा गला काटेगा? ऐसे मनुष्यका भरोसा कभी न करना चाहिये।

जिसका मुख हमेशा प्रसन्न रहता है, उसे सब कोई प्यार करते हैं। प्रसन्न-मुखी मनुष्य किसीको अप्रिय नहीं मालूम होता, इसीलिये प्रसन्न-मुखी मनुष्यके सब काम सिद्ध हो जाते हैं।

जो मनुष्य धैर्य और शान्तिसे काम करते हैं, वे बड़े-बड़े कामोंको, थोड़ीसी मिहनतसे, बहुत अच्छी तरह पूरा कर डालते हैं, किन्तु जो अधीरता और शीघ्रतासे काम करते हैं, उनके काम या तो पूरे नहीं होते या उनमें दोष रह जाते हैं।

अगर तुम्हें अपने बच्चों या नौकरोंकी बदचलनीकी कुछ बातें मालूम हो जायँ, तो उनको यह न मालूम होने दो कि, तुम उनके ऐबोंको जान गये हो। अगर उन लोगोंको यह मालूम हो जायगा, कि तुम उनके ऐबोंको जान गये हो, तो वे निर्भय और निर्लज्ज हो जायँगे। ऐसे मौकों पर तुम दूसरोंके द्वारा उनसे कहलवाओ कि यदि तुम्हारे पिता अथवा तुम्हारे स्वामी ये सब बातें जान जायँगे, तो तुम पर नाराज़

होंगे और तुमको दण्ड देंगे। इस तरकीबसे चलने पर, वे तुमसे डरते रहेंगे और बदचलनीसे बाज़ आवेंगे।

इस पर जो बार-बार आफ़तें आती रहती हैं, वह सब हमारी या दूसरोंकी मूर्खताका फल है। अगर हम सोच समझ कर चलें, तो हम बहुतसी विपत्तियों से बच सकते हैं।

जो मनुष्य अपना दिल एकही ओर लगाये रहता है, उस को प्रत्येक काममें सफलता नहीं होती। साथ ही उसका स्वास्थ्य भी ख़राब हो जाता है।

यदि तुम्हारे चित्तमें कोई दुःख या कष्ट हो, तो तुम उसे अपने सच्चे मित्रोंके सामने कह दो, क्योंकि दुःखको दिलमें दबा रखनेसे काया क्षीण होती है।

अगर तुम विद्वान् और धनवान होना चाहते हो, तो उद्योग और परिश्रमका सहारा पकड़ो, क्योंकि उद्योगी और मिहनती मनुष्य हर काममें सफलता प्राप्त करता है।

किसी मनुष्यने किसी बुद्धिमानसे पूछा —"क्योंजी! साहस और बुद्धि, इन दोनोंमें कौन सबसे उत्तम है?" बुद्धिमानने उत्तर दिया —"बुद्धिकी अपेक्षा साहस उत्तम है, क्योंकि सारे काम साहस ही से बनते हैं।"

पेट-भर कर खालेनेपर भी, जो मनुष्य उसी समय दूसरे भोजनकी फ़िक्र करता है, वह महा हतभाग्य है।

जिस बातको तुम नहीं जानते, उसको शीघ्र ही दूसरेसे

पुरुषोंका स्वभाव डालो। अगर तुम्हारा स्वभाव ऐसा हो जायगा, तो तुम सब कामोंमें निपुण हो जाओगे।

जब तुम्हें कोई काम करना हो तो दूसरोंका सहारा मत ताको। जो अपना काम आप करते हैं, उनका कोई काम अपूर्ण नहीं रहता। मनुष्यको अपने ही पुरुषार्थ पर भरोसा रखना उचित है।

अपने रोजगार-धन्धेमें पूर्ण प्रवीणता प्राप्त करके, कोशिश करो। यदि हिम्मत न हारोगे और विघ्न पर विघ्न होने पर भी उद्योग करते ही रहोगे, तो अन्तमें लक्ष्मीको तुम्हारी चेरी बनना ही पड़ेगा।

जो मनुष्य धन-दौलत और विद्या-बुद्धि तथा अधिकार आदिसे स्वास्थ्यको बढ़कर समझता है, वही सच्चा बुद्धिमान है। धन-दौलत अधिकार आदि चले जाने या नाश हो जाने पर फिर मिल जाते हैं, किन्तु यह शरीर नाश होने पर फिर नहीं मिलता। अतः शरीर-रक्षा करना बुद्धिमानोंका पहला काम है।

जब तुम अपने पास बैठे हुए आदमियोंको अपने पाससे टालना चाहो, तब तुम उनकी मीठी दिल्लगी करने लगो। वे नाराज होकर आप ही उठ जायँगे।

अगर तुम सवेरे उठकर, इस बातका नियम कर लो कि दिन-भरके कामोंमें क्रोध, शीघ्रता और निर्दयतासे काम न लूँगा अर्थात् न गुस्सा हूँगा, न जल्दबाजी करूँगा और न

कठोर वचन बोलूँगा, तो तुम्हारा संसारी सुख बहुत कुछ बढ़ जायगा।

मनुष्यको धन पैदा करनेके लिये चतुराई चाहिये। पैदा करके रखनेके लिये उससे दुगुनी चतुराई चाहिये। फिर इसे अच्छे कामोंमें लगानेके लिये उससे भी दस गुनी अधिक चतुराई चाहिये।

फिजूलखर्च आदमी कम खर्च करनेवाला हो सकता है, किन्तु कञ्जूस आदमी उदार नहीं हो सकता।

जो लोग न्याय और चतुराईसे रुपया पैदा करते हैं, उनका जगत्में आदर होता है तथा उनका चित्त प्रसन्न रहता है, लेकिन जो लोग अन्यायसे पैसा पैदा करते हैं वह संसारकी नजरोंमें फ़क़ीर बनते हैं और उनका चित्त भी कभी शान्त नहीं रहता।

अगर दो पक्षके आदमी अपना-अपना झगड़ा तुम्हारे पास लावें, तो तुम एक तरफ़ की बात सुनकर ही फैसला मत कर दो, ऐसा करना अन्याय है, क्योंकि दोनों पक्षकी बातें सुने बिना, झगड़े का असल तत्त्व और मारामार मालूम नहीं होता।

जो लोग अपने धर्मसे नहीं डिगते, अपने ही धर्मपर पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखकर जीवन बिताते हैं, वह सुखकी मौत मरते हैं।

जिस घर में बाप बात बातमें दोष निकालनेवाला और

महात्माने उत्तर दिया,—"यह प्रश्न बड़े महत्व का है। तमाम रीति-रस्मो या व्यवहारोंमें फिजूलखर्चीसे सादगी अच्छी है। मरे हुश्रोंके शोक-प्रकाशनार्थ तुमायशी रोने-पीटने और हाय-हाय करने से मनके भीतर दुःखित होना अच्छा है।"

जिस जगह के आदमी दयालु और दानी हों, उसी पड़ोस मे रहना उचित है। जो ऐसे गुणवानो का पड़ोस नही ढूंढता, वह अक्लमन्द नही है।

सत्पुरुष मेल-मिलापी होते है, किन्तु खुशामदी नही होते। नीच पुरुष खुशामदी होते है, किन्तु मेल-मिलापी नही होते।

सज्जन लोग बातें बनाने में सकोच करते है, किन्तु कामों में उदारता दिखाते है। तात्पर्य्य यह है, कि अच्छे आदमी बोलते कम है, लेकिन काम अधिक करते हैं।

जो दयावान और चिन्तारहित है, वह श्रेष्ठ पुरुष है। जो बुद्धिमान और निष्कपट है, वह सत्पुरुष है। जो सच्चा शूरवीर और निर्भयचित्त है, वह वास्तविक महात्मा है।

महात्मा कनफ्यूशियस, अपने एक चेलेसे जो एक बड़े देशका हाकिम था, कहते है —"अपने निजके जीवन में आत्म-प्रतिष्ठा दिखाओ, कारोबार करने या किसी देशकी प्रबन्ध करनेमें पूर्ण बुद्धिमानीसे काम लो और सावधान रहो। दूसरों के साथ करोबार या व्यवहार करनेमें ईमान्दारी और

सचाई से चलो। अगर तुम जगलियोंमें भी जा पड़ो, तो-भी इन नियमोंका पालन करना मत छोड़ो।"

एक बार जूचङ्ग नामक शागिर्दने महात्मा कनफूशियस से पूछा —"मनुष्यको कीर्त्तिमान् होने के लिये क्या उपाय करने चाहियें?' महात्माने पूछा —"कीर्त्तिमान्से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?" उसने कहा —जिसका नाम घर-बाहर और देश-मुल्कमें सब जगह हो, वही कीर्त्तिमान है।" महात्माने कहा —"जिसका नाम जगह-जगह हो रहा हो, वह कीर्त्तिमान नहीं है, वह तो येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध हो गया है। सच्चा कीर्त्तिमान् वह है जिसके ढँग सादा हैं, जो ईमान्दार,सत्यप्रेमी, न्यायप्रिय और धर्मपर चलनेवाला है। जो मनुष्योंकी आकृति और चेहरेके उतार-चढ़ावसे उनकी भीतरी अवस्था को समझ सकता है, जो खाली लोगोंके शब्दों पर ही विश्वास नहीं करता, किन्तु उनके शब्दोंको विचाररूपी तराज़ू में तोलता है और अपने तईं सब से नीचा समझता है, वही मनुष्य कीर्त्तिमान हो सकता है, किन्तु जो सब से दयालु और दानी होनेका ज़ाहिरा ढोंग रचता है, लेकिन वास्तवमें उसके सब कामोंमें पोल रहती है, वह प्रसिद्ध तो हो जाता है, किन्तु अपने गुप्त और प्रत्यक्ष जीवन में कीर्त्तिमान नहीं हो सकता।"

सज्जन एक क्षणके लिये भी अच्छे मार्ग से इधर-उधर नहीं होते। वे कष्ट, दुःख और विपत्तिमें भी सदा की भाँति सुमार्ग पर ही दृढता से टिके रहते हैं।

सज्जन धर्मज्ञान सञ्चय करनेमें निपुण होता है, किन्तु नीच केवल रुपया पैदा करनेमें ही अपने ज्ञानकी इतिश्री कर देता है।

अगर खानेको बुरा भला भोजन और पीनेका जल मिले तथा अपनी मोड़ी हुई भुजासे तकिये का काम चल जाय, तो यह सुख क्या कुछ कम है? धन और उच्च पदवी जो अधर्म से प्राप्त की जाती है, वह चलते हुए बादलोंके समान अनस्थिर है।

फिजूलखर्ची से घमण्ड और किफ़ायतशारीसे कञ्जूसी पैदा होती है, किन्तु घमण्डी होने की अपेक्षा कञ्जूस होना अच्छा है।

यदि किसी मनुष्यमें चूकाङ्ग के सब श्रेष्ठ गुण मौजूद हों, किन्तु वह अभिमानी और लालची हो, तो उसके सब गुण इन दो अवगुणोंके नीचे दब जाते हैं।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि चूकाङ्ग नामक व्यक्ति चीन देशमें खूब गुणवान हुआ है। यदि मनुष्यमें उसकी भाँति सब श्रेष्ठ गुण मौजूद भी हों, लेकिन साथही घमण्ड और लोभ भी हों, तो उस मनुष्यके सर्व्वश्रेष्ठ गुण वृथा हैं। लोभ और अभिमान बड़े भारी दुर्गुण हैं। इनके आगे सब अच्छे अच्छे गुण नहीं के समान हैं। अत मनुष्य को लोभ और अभिमानसे बिल्कुल बचना चाहिये।

महात्माने कहा—मुझे ऐसा मनुष्य नहीं मिला, जिसके धर्म-प्रेम ने शारीरिक सुन्दरताके प्रेम की बराबरी की हो।

हमें अपने-से-नीचे दर्जेके लोगोंकी भली भाँति प्रतिष्ठा करनी चाहिये। कौन जानता है, कि वे लोग अपने तईं धीरे-धीरे आजके बड़े आदमियोंके बराबर न बना लेंगे। यदि वे चालीस या पचास सालकी उम्र तक भी अपने तईं प्रसिद्ध न कर सकें, तो हमें उनसे भय करने की आवश्यकता नहीं है।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि हमें निर्धन मनुष्योंका अनादर न करना चाहिये, किन्तु यथोचित सम्मान ही करना चाहिये। हमारा ऐसा समझना, कि अमुक दरिद्री या पद-हीन मनुष्य सदा इसी बुरी हालतमें रहेगा, भूल की बात है। मनुष्य चालीस या ५० वर्षकी अवस्था तक उन्नति करके धनी या उच्चपदाधिकारी हो सकता है। जिसका हमने उस की गिरी अवस्थामें सम्मान नहीं किया है, यदि वह ऊँचा हो जावे तो क्या हमें अपनी पिछली कार्रवाई पर पश्चात्ताप न होगा? यदि मनुष्य ५० साल दुःख-दारिद्रमें बिता दे, तो पीछे उसका उन्नतिके उच्च सोपान पर चढ़ना असम्भव है।

जब जाड़ा आता है तभी सनोवर और सदाबहारके वृक्षों की सरसब्ज़ी मालूम होती है; अर्थात् विपत्तिके समय ही मनुष्यों का ठीक-ठीक हाल मालूम होता है।

जिसका दिल पराई निन्दासे साफ़ है, वह सचमुचही सूक्ष्मदर्शी और दूरदर्शी है।

चतुर मनुष्योंको अपने आदमियोंको युद्धमें ले जानेसे पहले

साल से ले तक सैनिक शिक्षा देनी चाहिये। अशिक्षित सेना को युद्ध में ले जाना, उसको फेंक देनेके समान है ।

अपने अन्दर दोष रखना और उसके निर्मूल करनेकी चेष्टा न करना, वास्तविक दोष है ।

बड़े लोगोंके सामने तीन गलतियोंसे परहेज़ करना चाहिये,—पहली भूल जल्दबाज़ी है यानी जब तक अपने बोलनेकी बारी न आवे उसके पहले बोलना, दूसरी भूल लज्जा है यानी जब अपने बोलनेकी बारी आवे तब न बोलना, तीसरी भूल गफ़लत है यानी श्रोताके मुख पर गौर किये बिना ही बकते चले जाना ।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि चतुर मनुष्य, बिना अपनी बारी आये अथवा बिना पूछे न बोले, जब बोलने की बारी आवे या कोई कुछ पूछे तब अवश्य बोले, जब बात सुनने वालेका ध्यान या दिल बातें सुनने की ओर न हो, तब न बोले। जो इसके विपरीत करते हैं यानी बिना बारी आये या बिना पूछे बोलते हैं, बारी आने या पूछने पर नहीं बोलते तथा सुननेवाले का ध्यान या मन न होने पर भी बोलेही जाते हैं,—वे मूर्ख हैं। बड़े लोग ऐसे मूर्खों को बुरा समझते हैं।

जिनकी विद्या स्वाभाविक है वे प्रथम श्रेणीके पुरुष हैं, जिन्होंने अभ्यास करके विद्या पढ़ी है वे द्वितीय श्रेणीके पुरुष हैं, जो मन्दबुद्धि हैं किन्तु पढ़नेकी चेष्टा करते हैं, वे तृतीय

श्रेणीके पुरुष है, किन्तु जो मनुष्य मन्दबुद्धि है और पढनेका उद्योग भी नहीं करते, वे अधमाधम हैं।

नौकरों और लड़कोंसे काम चलाना बड़ा कठिन है। अगर तुम उनसे हेल-मेल रक्खोगे, तो वे तुम्हारी अप्रतिष्ठा करेंगे और यदि उन्हें दूर रक्खोगे तो वे अप्रसन्न होंगे।

बूक आइने पूछा कि मुझे अपने लोगोंको सन्तुष्ट करनेके लिये क्या करना चाहिये? महात्माने उत्तर दिया —"सुयोग्य कर्मचारियों की पदोन्नति कर और अयोग्योंको निकाल दे, तो तेरे लोग तुझसे सन्तुष्ट हो जायँगे। अगर अयोग्योंको पदोन्नति करेगा और सुयोग्योंको पदच्युत करेगा, तो लोग तुझसे असन्तुष्ट हो जायँगे।"

जूकइने अच्छे राज्यकी परिभाषा पूछी, तब महात्माने कहा —"खानेको काफ़ी सामान तय्यार रखना, राज्यरक्षाको यथेष्ठ सेना रखना और रय्यतके दिलमें विश्वास जमाये रखना— राज्यके यही तीन दृढ़ अङ्ग है। अगर सेना न रहे, तोभी राज्य कायम रह सकेगा। अगर खानेको भी न मिले, तोभी राज्यको धक्का न लगेगा। किन्तु यदि रैयतके मनमें राजा का विश्वास न रहे, तो कोई भी राज्य टिक नहीं सकता।"

किसीने महात्मासे अच्छे राज्यके लक्षण पूछे। महात्माने उत्तर दिया —"राज्य वही अच्छा है, जिसकी छायामें रहने वाले सुखी हों और अन्य राज्यके लोगोंका दिल उस राज्यमें आनेको चाहे।"

साथ साथ उन्हें सैनिक शिक्षा देनी चाहिये। अशिक्षित सेना को युद्धमें ले जाना, उसको फेंक देनेके समान है ।

अपने अन्दर दोष रखना और उसके निर्मूल करनेकी चेष्टा न करना, वास्तविक दोष है ।

बड़े लोगोंके सामने तीन गलतियोंसे परहेज़ करना चाहिये,—पहली भूल जल्दबाज़ी है यानी जब तक अपने बोलनेकी बारी न आवे उसके पहले बोलना, दूसरी भूल लज्जा है यानी जब अपनी बोलनेकी बारी आवे तब न बोलना, तीसरी भूल गफ़लत है यानी श्रोताके मुख पर गौर किये बिना ही बकते चले जाना ।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि चतुर मनुष्य, बिना अपनी बारी आये अथवा बिना पूछे न बोले, जब बोलने की बारी आवे या कोई कुछ पूछे तब अवश्य बोले, जब बात सुनने वालेका ध्यान या दिल बातें सुनने की ओर न हो, तब न बोले। जो इसके विपरीत करते हैं यानी बिना बारी आये या बिना पूछे बोलते हैं, बारी आने या पूछने पर नहीं बोलते तथा सुननेवाले का ध्यान या मन न होने पर भी बोलेही जाते हैं,—वे मूर्ख हैं। बड़े लोग ऐसे मूर्खों को बुरा समझते हैं।

जिनकी विद्या स्वाभाविक है वे प्रथम श्रेणीके पुरुष हैं, जिन्होंने अभ्यास करके विद्या पढ़ी है वे द्वितीय श्रेणीके पुरुष हैं, जो मन्दबुद्धि हैं किन्तु पढ़नेकी चेष्टा करते हैं, वे तृतीय

श्रेणीके पुरुष है, किन्तु जो मनुष्य मन्दबुद्धि है और पढ़नेका उद्योग भी नहीं करते, वे अधमाधम हैं।

नौकरों और लड़कोंसे काम चलाना बड़ा कठिन है। अगर तुम उनसे हेल-मेल रक्खोगे, तो वे तुम्हारी अप्रतिष्ठा करेंगे और यदि उन्हें दूर रक्खोगे तो वे अप्रसन्न होंगे।

ड्यूक आइने पूछा कि मुझे अपने लोगोंके सन्तुष्ट करनेके लिये क्या करना चाहिये? महात्माने उत्तर दिया — "सुयोग्य कर्मचारियों की पदोन्नति कर और अयोग्योंको निकाल दे, तो तेरे लोग तुझसे सन्तुष्ट हो जायँगे। अगर अयोग्योंकी पदोन्नति करेगा और सुयोग्योंको पदच्युत करेगा, तो लोग तुझसे असन्तुष्ट हो जायँगे।"

जूकङ्गने अच्छे राज्यकी परिभाषा पूछी, तब महात्माने कहा —"खानेकी काफी सामान तय्यार रखना, राज्यरक्षाको यथेष्ठ सेना रखना और रय्यतके दिलमें विश्वास जमाये रखना— राज्यके यही तीन दृढ़ अङ्ग है। अगर सेना न रहे, तोभी राज्य कायम रह सकेगा। अगर खानेको भी न मिले, तोभी राज्यको धक्का न लगेगा। किन्तु यदि रैयतके मनमें राजा का विश्वास न रहे, तो कोई भी राज्य टिक नहीं सकता।"

किसीने महात्मासे अच्छे राज्यके लक्षण पूछे। महात्माने उत्तर दिया —"राज्य वही अच्छा है, जिसकी छायामें रहने वाले सुखी हों और अन्य राज्यके लोगोंका दिल उस राज्यमें आनेको चाहे।"

यदि तुम्हारे माता-पिता जीते हो, तब तुम उन्हें छोडकर दूर देश की यात्रा मत करो। अगर दूर ही जाना हो, तो ऐसी जगह जाओ, जहांसे तुम्हारे मा-बाप को तुम्हारी खबर मिल सके।

बुद्धिमान मनुष्य बोलनेमें सुस्त होता है, किन्तु काम करनेमें तेज होता है, मूर्ख काम थोडा करता है, किन्तु बातें बहुत बनाता है।

ऊंचे दर्जेका आदमी दृढचित्त होता है, किन्तु झगडालू नही होता। वह सबसे मेल-मिलाप रखता है, किन्तु सब से भाईबन्दीका व्यवहार नही डालता।

दूसरोके साथ वैसा वर्ताव मत करो, जेसा तुम खुद दूसरो से नही चाहते।

इसका खुलासा मतलव यह है, कि यदि तुम चाहते हो कि कोई हमें गाली न दे, तो तुम भी किसीको गाली मत दो। अगर तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारा नुकसान न करे तो तुम भी किसीका नुकसान मत करो। अगर तुम चाहते हो कि कोई तुम्हें घृणाकी दृष्टिसे न देखे, तो तुम भी किसी को नफरत की नजरसे मत देखो। अगर तुम चाहते हो कि कोई तुम्हारा खून न करे, तो तुम भी किसीकी हत्या मत करो। कनफूशियस की यह वाणी ईसामसीहकी सुनहरी नीतिसे बिल्कुल मिलती है। वह यह है—Do to others as ye would that they should do

to you. इसका मतलब यह है कि दूसरोंके साथ वैसाही बर्त्ताव करो, जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें। बात एक ही है, सिर्फ लखने और कहनेके ढंगमें फ़र्क़ है।

"बुद्धिमान मनुष्य निम्न-लिखित नौ बातोंपर विशेष रूपसे ध्यान रखता है :—वह हरेक विषय को बारीकी से देखता है, हर बातको साफ़-साफ़ सुनना चाहता है, अपनी आंखोंमें दया और नम्रता रखना चाहता है, अपने आचरण को प्रतिष्ठित बनाने की फ़िक्रमें रहता है, मुंहसे बात निकालनेमें ईमान्दारी का ध्यान रखता है, जब उसे किसी बातका संशय रहता है, तब वह उसके पूछनेमें नहीं हिचकता; जब उसे क्रोध आता है, तब वह परिणाम—नतीजे—का विचार करता है; जब उसे धन कमाने का मौक़ा मिलता है, तब वह अपने धर्मका ध्यान रखता है।"

कानफ़्यूशियसने कहा है कि आत्मप्रतिष्ठा, उदारता, सत्य, साहस और दयालुता—ये पाँच गुण जिस मनुष्यमें हों, वह सर्व्वश्रेष्ठ पुरुष है। "यदि आत्मप्रतिष्ठा दिखाओगे, तो लोग तुम्हारी प्रतिष्ठा करेंगे। अगर उदारतासे काम लोगे, तो सब लोग तुम्हारे वशीभूत हो जायेंगे। अगर सत्यसे विचलित न होगे, तो जगत् तुम पर विश्वास करेगा। अगर साहससे काम करोगे, तो तुम बड़े बड़े कामोंमें सफलता प्राप्त करोगे। अगर दिलमें दया रखोगे, तो दूसरों को अपनी इच्छा पर चला सकोगे।"

एक दिन महात्मा कनफ्यूशियससे पूछा :—"क्या श्रेष्ठ पुरुष भी किसीसे घृणा रखता है ?" महात्माने उत्तर दिया :—"हां, वह उन लोगोंसे नफ़रत करता है जो दूसरोंके ऐबों को प्रकाशित करते हैं, जो ऊँचे दर्जेके मनुष्यों की बदनामी करते हैं, जिन में आत्मशासन का साहस नहीं है, जो बहादुर हैं किन्तु तङ्ग-दिल हैं। जूलू! तुम भी तो कुछ लोगोंसे घृणा करते होगे।" चेले ने उत्तर दिया :—"हां, मैं भी उन लोगों से नफ़रत करता हूँ, जो भेद लेने और दखल देनेमें ही अक्लमन्दी समझते हैं, जो हर बातमें अपनी अनिच्छा या नाराज़मन्दी दिखानेमें ही साहस समझते हैं और जो दूसरों की निन्दा करनेमें ही ईमान्दारी समझते हैं।"

जूलूने पूछा—"क्या श्रेष्ठ पुरुष साहस को मूल्यवान नहीं समझता ?" महात्माने उत्तर दिया :—"वह धार्म्मिकता को सबसे ऊपर मानता है। उच्चपदस्थ मनुष्यमें, यदि धार्म्मिकता-रहित साहस है, तो वह राज्य का नायक है। अगर साधारण मनुष्यमें धर्म्म-हीन साहस है तो वह लुटेरा है।"

ईमान्दारी और सचाई को अपना आसूला (motto) बना लो। अपने समान लोगोंसे मित्रता रक्खो। अगर तुम से भूल हो जाय, तो उसके सुधारनेमें लज्जित मत हो।

जब किसीका पिता जीवित हो तब उसकी इच्छा—रुचि-का झुकाव देखो और उसके बापके मरनेके बाद उसके काम

देखो। मगर मातम—शोक—के तीन सालके अन्दर वह अपने पिताके बांधे हुए नियमोंसे न डिगे, तो उसे पिताका सच्चा पुत्र समझो।

मोड नामके जो तीन सौ भजन 'मिइचिङ्ग' नामक पुस्तक में लिखे हैं, उनका सारांश एक शब्दमें आ सकता है '—"बुरे खयालातोंको दिलमें जगह न दो।"

यदि तुम किसी मनुष्यके कामोंको गौरसे देखो, उसके विचारों की आलोचना करो और उन बातों का ध्यान रक्खो, जिनसे उसे प्रसन्नता होती है, तो वह तुमसे अपनी असलियत न छिपा सकेगा।

इसका खुलासा मतलब यह है, कि यदि तुम किसी मनुष्यके विषयमें उपरोक्त तीनों बातों का विचार गौरसे करोगे, तो तुमसे यह बात कदापि न छिपेगी कि, वह कैसा आदमी है। वास्तवमें, कौन मनुष्य कैसा है, इस-बातके जाननेके लिये उपरोक्त नसीहत बहुतही उमदा है।

पुरानी विद्या पर विचार करते हुए, नई विद्या सीखते जाओ, इस तरह करने से तुम दूसरों के उस्ताद बन जाओगे।

बिना विचारके विद्याभ्यास करना वृथा है और विचार बिना विद्या भयानक है।

महात्मा कनफ्यूशियसने कहा—"मैं नहीं जानता कि, मनुष्य का काम सत्य बिना कैसे हो सकता है और बिना जूए

की गाड़ी या छकड़ा किस तरह चल सकता है ?"

जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन न करे, उसमें उचित साहसका अभाव समझना चाहिये।

यह शख़्स जो अपने स्वामीको सेवा उचित रोतिसे करता है, लोग उसे खुशामदी कहते हैं।

जो काम हो गया है उसपर वाद-विवाद करना वृथा है, जिसका इलाज या सुधार नहीं हो सकता उसका विरोध करना फ़िज़ूल है और बीती हुई बातोंमें दोष निकालना बेफ़ायदा है।

मनुष्य के दोषोंसे भी शिक्षा मिल सकती है, यानी, मनुष्य के दोषोंपर ध्यान देनेसे मनुष्य गुणवान हो सकता है।

उस विद्यार्थीको जो धर्म-शास्त्र पढ़ता है, अगर अपने फटे-पुराने कपड़ों और बुरे-भले भोजनसे लज्जा आती हो, तो उसे धर्म-शिक्षाके अयोग्य समझना चाहिये।

अगर तुम किसी पद पर न हो, तो इस बात का विचार करो कि तुम पद पाने के योग्य किस भांति हो सकते हो? यदि तुम प्रसिद्ध न हो, तो इस बात का विचार करो कि तुम कौनसी योग्यता रखने से प्रसिद्ध हो सकोगे।

जब तुम किसी भले आदमी को देखो, तब तुम, उस से गुणों में बढ़ जाने या बराबरी करने का विचार करो। जब तुम किसी बुरे आदमीको देखो, तब अपने ही दिलकी जांच करो।

प्राचीन काल के मनुष्य अपने विचारों को ज़बान पर लाने में हिचकिचाते थे। उनको इस बात का भय था, कि कहीं हमारे काम हमारी बातोंसे कम न हों।

कनफूशियस ने कहा —"अफ़सोस! मुझे अपने दोष आप देख सकनेवाला और अपने अन्तःकरण की अदालत से अपने तईं दोषी ठहरानेवाला मनुष्य न मिला।"

# मिश्रित नीति

इङ्गलैंडके महाकवि यो, वलायतके कालिदासको शिक्षित-समाज में कौन नहीं जानता ? जिस तरह कालिदास ने शकुन्तला, कुमारसम्भव, रघुवंश आदि नाटक और काव्योंकी विचित्र रचना की है, उसी तरह शेक्सपियर ने रोमियो-जूलियट, वेनिसका व्योपारी आदि कितने ही नाटकों की अद्भुत रचना की है। जिस तरह हमारे भारत में कालिदास का सम्मान है, उसी तरह वलायत मे शेक्सपियर की प्रतिष्ठा है। उसने "खुशामद और दोस्ती" पर एक अच्छी कविता लिखी है। हम उसका हिन्दी गद्यानुवाद अपने पाठकों की भेंट करते है :—

"इस समय जो तुम्हारी खुशामदें करता है, जरूरत के समय हरगिज़ तुम्हारे काम न आवेगा। बातें बनाना हवा की भांति सहज है, किन्तु सच्चा दोस्त मिलना कठिन है। जब तुम्हारी अण्टीमें टका है, तबतक अनेक मनुष्य तुम्हारे

दोस्त बने रहेंगे। जब अपनी खाली हो जायगी, कोई तुम्हारे पास भी न फटकेगा।

यदि कोई मनुष्य खूब धन-दौलत उड़ाता है, तो खुशामदी लोग उसे उदार—फैयाज—कहते हैं। यदि उसका झुकाव कुकर्मों की तरफ़ होता है, तो खुशामदी उसे आसमान पर चढ़ा-चढ़ा कर फ़ुसलाते और बिगाड़ देते हैं। अगर किसी तरह उसकी क़िस्मत फूट जाती है, पास कौड़ी नहीं रहती, तो वही खुशामदी जो पहले उसे झुक-झुककर सलामें किया करते थे, उसकी ओर झांकते भी नहीं, बल्कि उस के सङ्ग रहना भी नहीं पसन्द करते।

जो तुम्हारा सच्चा मित्र है ज़रूरत या विपत्ति के समय अवश्य तुम्हारे काम आवेगा। अगर तुम शोक करोगे, तो उसे रुलाई आवेगी। अगर तुम्हें नींद न आवेगी, तो उसे भी नींद न आवेगी। सच्चा दोस्त तुम्हारे हरेक सङ्कट में तुम्हारा साथ देगा। ऊपर जो कुछ लिखा है, वह सच्चे दोस्त और खुशामदी दुश्मनकी पक्की पहचान है। (शेक्सपियर)

खुशामद तेज़ शराब की भांति शीघ्र ही मगज़ में चढ़ जाती है और सिर को फिरा देती है।

खुशामद मानव स्वभावकी तीन नीचातिनीच प्रवृत्तियों—असत्य, नीचता और कपट के योग से बनी है।

किसी ने एक यूनानी विद्वान से पूछा कि "साहब! कौन जानवर सबसे बड़ा डङ्क मारते हैं।" उसने जवाब ।—

"निन्दक और खुशामदी। इन दोनो में कोई बड़ा अन्तर नहीं है। एक तुम्हारी पीठ के पीछे काटता है और दूसरा तुम्हारे मुंह के सामने।"

खुशामदी धूपघड़ी की छाया के समान है, जो धूप में तो मौजूद रहती है, किन्तु बादलके आते ही नहीं रहती।

जिस समय तुम मधुमें लपेटे हुए शब्दोंको निगलने लगो तब होशियार रहो, क्योंकि मधुमें बर्रका होना भी सम्भव है।

सच्चे मित्र और खुशामदीकी यही पहचान है, कि खुशामदी तुम्हारे गुण-दोष दोनों को अच्छा बतलावेगा और सच्चा मित्र तुम्हें बुराई से रोक कर भलाई की तरफ़ लगावेगा।

बुद्धिमान अपने मित्रों को पहचान कर, उनसे इस भांति चिपटा रहता है जिस भांति बालक अपनी मा से चिपटा रहता है। उसका दूसरों की उदारता में हिस्सा लेना, वैसा ही है जैसा एक मधुमक्खी का फलों की सुन्दरता और सुगन्ध को नाश किये बिना ही शहद जमा करना।

गज़ाली नामक एक फ़ारस के विद्वान ने लिखा है:—"मैं उस दोस्त से परहेज़ करता हूं, जो मेरे बुरे कामों को भी अच्छा बताता है। मुझे वही दोस्त अच्छा लगता है, जो दर्पण की तरह मेरे दोषों को मेरे सामने रख देता है।"

शेखसादी ने लिखा है:—"सच्चे मित्र की मित्रता सामने और पीठ पीछे एकसी होती है; उनके माफ़िक नहीं होती, जो तुम्हारे पीठ-पीछे तुम्हारी निन्दा करते हैं और

सामने तुम्हारे लिए जान देने को तैयार रहते है। जब तुम मौजूद होते हो तब तो वह भेडके बच्चे के माफिक सोये रहते है और जब मौजूद नही होते, तब मनुष्य-भक्षी भेडिये के समान हो जाते है। जो शख्स तुम्हारे सामने तुम्हारे पडोसी की बुराई करता है वह तुम्हारा कैसा ही दोस्त क्यों न हो, तुम्हारी बुराई भी दूसरों के सामने अवश्य ही करेगा।

जिस तरह नमकके बिना आचार और मुरब्बे वगैर सड जाते हैं उसी तरह परोपकार-रूपी लवण बिना धन नष्ट हो जाता है।

ऐ सुख की नींद सोनेवाले! उसका खयाल जरूर रख, जिसे शोक सोने नहीं देता।

ऐ धनी पुरुष! उनको मत भूल, जो दरिद्रताके अत्याचार से पीड़ित है।

ए जल्दी जल्दी चलनेवाले! उस साथी पर दया कर, जो तेरे साथ साथ चलने में असमर्थ है।

बड़े-बड़े वृक्ष, बड़ी बड़ी नदियाँ, रोग नाशक बूटियाँ और महात्मा लोग "परोपकार" के लिए ही पैदा हुए है।

फ्रान्स देश के विक्रमी सम्राट् नेपोलियन बोनापार्ट ने, जिसके नामसे एक समय सारा ससार चकित हो रहा था और यह सोचा जाता था कि कही ससार के बहुत से राज्य और जातियों को वह अपने हाथमें कर इङ्गलैंड को अपने अधीन करने मे समर्थ न हो जाय, अपने नीचे के अफसरों

। ... थी कि हमारी निन्दा यदि कहीं भी छपे तो हमें अवश्य दिखा देना तारीफ़ को तो उसके दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं। यदि निन्दा झूठी होगी तो हमारी कोई हानि नहीं होगी। यदि ठीक होगी तो हमें अपने दोषों को दूर करने की कोशिश करनी होगी।

जो शख्स अपने जन्मदाता के कृतज्ञ नहीं हैं, उन पर लक्ष्मी की कृपा हरगिज न होगी।

ए समझदारो! बुद्धिमानों की राय में, गर्भवती स्त्री का साँप जनना अच्छा, किन्तु दुष्ट बच्चा जनना भला नहीं है।

मनुष्य जिस भाँति संसारी काम-धन्धोंमें दिल लगाता है, अगर उसी भाँति ईश्वर में दिल लगावे, तो देवताओं से भी बढ़ जावे। जिस समय तूभ गर्भाशय में पूर्णरूपसे बना भी न था, तब भी ईश्वर तझे न भूला। उसने तझ में जीव डाला और बुद्धि समझ, प्रकृति, सुन्दरता और विचार-शक्ति दी। उसने तेरे कन्धे पर दो भुजाएँ लगाईं और उँगलियों-सहित हाथ दिये। ए नीच मनुष्य! क्या तू समझता है कि, वह तुझे तेरा नित्य का भोजन भी न देगा?

लम्पट आदमी जब खुशी के नशे में मतवाले हो जाते हैं तब कङ्गालों के दिनों का खयाल नहीं करते। उस वृक्ष में, जो गरमी के मौसम में फलों से लद जाता है, जाड़े में पत्तियाँ भी नहीं रहती।

एक बादशाह के लड़केको पढ़ने को चाँदी की तख्ती पर

लिखा हुआ था —' उस्ताद की मार तो, पिता के प्यार दुलार से, अच्छी होती है।"

जिसे बाल्यावस्था में कुछ गुण नहीं सिखाये गये हैं वह जवानीमें क्या गुण सीखेगा ? हरी लकड़ी को तुम जितना चाहो मोड़ सकते हो, किन्तु जब वह सूख जायगी, तब आग बिना हरगिज सीधी न होगी।

विद्वान् जहाँ जाता है वहाँ ही उसकी प्रतिष्ठा होती है और वह सबसे ऊँचा आसन पाता है किन्तु मूर्खको जरासा भोजन मिलता है और उसे मुसीबतका सामना करना पड़ता है।

जिसमें स्वाभाविक बुद्धि नहीं है, उसे विद्यासे कुछ लाभ नहीं हो सकता। खराब लोहे पर कितनीही पालिस क्यों न करें, वह कभी चिकना और अच्छा न होगा। कुत्तेको सात नदियोंमें न धोओ, क्योंकि जब वह भीगेगा, तब फिर मैला हो जायगा।

जो मनुष्य किसी भारी काम पर, किसी नातजुरबेकारको नियत करेगा उसे अवश्य पछताना होगा और अक्लमन्द लोग उसे नादान समझेंगे। बुद्धिमान आदमी भारी काम अयोग्य मनुष्यके सिपुर्द कदापि नहीं करता। चटाई बनानेवाला बुननेवाला है, तथापि उसे रेशमके काममें नहीं लगाते।

जिसके पास खानेको नहीं है उसे सुवर्णसे क्या फायदा ? मरुस्थलमें धूपसे जलते हुए मुसाफिरको उबाली हुई शलगम जितनी प्यारी है उतनी चाँदी नहीं।

तुम जो लोगोंसे माँग-ताँग कर खाते हो, इससे शरीरको लाभ हो सकता है किन्तु वह भोजन आत्माको हानिकारक है। अगर बाजारमें नामवरीके बदलेमें अमृत बिकता होता तो बुद्धिमान नामवरी देकर कदापि न खरीदते। अपमान-सहित जीनेकी अपेक्षा, मान-सहित मरना अच्छा है।

दुर्जनको सज्जन बनाना असम्भव है। बादल सब जगह एकसा पानी बरसाते हैं, तथापि बागोंमें गुल-लाला पैदा होते हैं, किन्तु ऊसर जमीनमें केवल घास।

जो राजा अपनी प्रजा पर अत्याचार करता है, विपत्तिके समय उसके मित्र भी प्रबल शत्रु हो जाते हैं। अत राजाओ! अपनी प्रजाके साथ अच्छा बर्ताव करो और शत्रुके आक्रमणसे बेफ़िक्र होकर बैठे रहो, क्योंकि न्यायी राजाके लिये उसकी प्रजाही उसकी सेना है।

जो तुमसे डरे, तुम भी उससे डरो, चाहे तुम वैसे सैकड़ों को कुचलनेकी शक्ति क्यों न रखते हो। क्या तुम नहीं जानते कि अपनी जानसे निराशो बिल्ली चीतेकी भी आँखें निकाल लेती है? सांप अपना सिर पत्थरसे कुचले जानेके भयसे किसानको डस लेता है।

आदमके बच्चे एक दूसरेके अङ्ग हैं और एकही मसालेसे बनाये गये हैं। जब एकको कष्ट होता है तब दूसरेको भी पीडा होती है। वह शख्स जो दूसरोंके दु ख पर लापरवाही दिखाता है, मनुष्य कहलानेके योग्य नहीं है।

दौलत और ताकत, उम्र या हुनरसे नहीं मिलती, किन्तु ईश्वरकी सहायतासे मिलती है। अक्सर देखनेमें आता है कि दुनियामें मूर्ख लोगोंका सम्मान होता है और बुद्धिमानोंका अपमान, एक महाविद्वान् शोक और दुःखसे मर गया, जबकि मूर्खने एक खंडहरमें दबा हुआ खजाना पाया।



# उत्तम और निकृष्ट समूह।

## मनुष्यमात्रके याद रखने योग्य, कोई डेढ़ सौ, अनमोल बातें।

१ अन्न—जीवन-निर्वाहक पदार्थोंमें सर्वोत्तम है।
२ जल—प्यास मिटानेवालोंमें सबसे अच्छा है।
३ शराब—थकान दूर करनेवालोंमें सबसे अच्छी है।
४ निमक—रुचिकारक पदार्थोंमें सबसे अच्छा है।
५ खटाई—हृदयके लिये हितकारी पदार्थोंमें सर्वोत्तम है।
६ मुर्गेका मास—बलकारी पदार्थोंमें सबसे उत्तम है।
७ मगरका वीर्य—वीर्य बढ़ानेवालोंमें सबसे अच्छा है।
८ शहद—कफ-पित्त-नाशक पदार्थोंमें सबसे अच्छा है।
घी—वातपित्त-नाशक द्रव्योंमें सर्वोत्तम है।
० तेल—वातकफ नाशक द्रव्योंमें सर्वोत्तम है।*

* तेल वातकफ-नाशकोंमें सर्वश्रेष्ठ लिखा है, इसका यह मतलब है कि तेल वात नाशक है और वात-प्रधान वात-कफ नाशक है।

११ वमन—कफ नाश करनेके लिये सबसे अच्छा उपाय है।
१२ विरेचन—पित्त हरण करनेवालोंमें सर्वोत्तम उपाय है।
१३ वस्ती—वात हरण कर्त्ताओंमें सबसे उत्तम है।
१४—स्वेद—पसीना शरीरको नम करनेवालोंमें सर्वोत्तम है।
१५ कसरत—शरीरको मज़बूत करनेवाले उपायोंमें राजा है।
१६ मैथुन—शरीरको दुबला करनेवालोंमें सबसे बढकर है।
१७ क्षार—पुरुषत्व-नाशक पदार्थोंमें सबसे बढकर है।
१८ तिन्दुक फल—अन्नमें अरुचि करनेवालोंमें सबसे बढ़कर है।
१९ कच्चा कैथ—स्वर भङ्ग करनेवालोंमें सबसे तेज़ है।
२० भेडका घी—दिलको नुकसान पहुँचानेवालोंमें राजा है।
२१ बकरीका दूध—शोष नाशको, रक्त रोकनेवाली, रक्त-पित्त-रोग नाशको और दूध बढानेवालोंमें सबसे उत्तम है।
२२ भेडका दूध—पित्त-कफ बढानेवालोंमें सबसे ज़बर्दस्त है।
२३ भैंसका दूध—नींद लानेवालोंमें सबसे उत्तम है।
२४ दही—अभिष्यन्दी पदार्थोंमें सबसे बढकर है।
२५ ईख—पेशाब लानेवालोंमें सबसे बढकर है।
२६ जौ—मल प्रकट करनेवालोंमें सबसे बढकर है।
२७ जामुन—वायु प्रकट करनेमें सबसे बढकर है।
२८ खली—पित्त-कफ करनेवालोंमें सबसे बढकर है।
२९ कुलथी—अम्ल-पित्त करनेवालोंमें सबसे बढकर है।
३० उडद—पित्त कफ कारकोंमें सबसे बढकर है।

*ि चनाना त णाना पश, मा र परमतम ।*

*अलपाक भा ि िगान् कर्मनिभ्रमात् ॥*

३५ धौंगेके बीज -शिरोविरेचन करनेवालोंमें सबसे उत्तम है।

३६ बायविडङ्ग —कृमि या कीड़े नाशकोंमें सबमें अच्छी है।

३७ सिरसके बीज—विषनाशक पदार्थोंमें सर्वोत्तम है।

३८ खैर--कोढ़ नाश करनेवाले पदार्थोंमें राजा है।

३९ रास्ना—वात नाशक पदार्थोंमें सबमें बढ़कर है।

४० आमला—अवस्था-स्थापकोंमें सर्वश्रेष्ठ है।

४१ हरड़—सब तरहके अच्छे पथ्योंमें श्रेष्ठ है।

४२ अरण्डकी जड़—बलवर्द्धक और वातनाशकोंमें सर्वोत्तम है।

४३ पीपरामूल—आनाह नाशकोंमें सर्वोत्तम है।

४४ चीतेकी छाल—गुदाका दर्द,गुदाकी सूजन नाश करनेवालों और भूख बढ़ानेवालोंमें सर्वोत्तम है।

४५ नागरमोथा—दीपन, पाचन और सग्राहकोंमें प्रधान है।

४६ कूट और पुहकरमूल—श्वास,खाँसी,हिचकी और पसलीका दर्द नाशकोंमें परमोत्तम है।

४७ अनन्तमूल—अग्निज्वाला-निवारक, दीपन, पाचन तथा अतिसार-नाशकोंमें उत्तम है।

---

सञ्चयको भी नाश करता और भयानकसे भयानक रोगोंको शान्ति करता है, इसलिये इस जुलाबको ऐसे-वैसे अनजानके कहनेसे न लेना चाहिये। सुश्रुतमें लिखा है'—

४८ गिलोय—दस्त बांधनेवाली, वाटी नाश करनेवाली, अग्नि दीपन करनेवाली, कफनाश करनेवाली, और कफरक्तका विबन्ध नाश करनेवालोंमें सर्वोत्तम है।

४९ कच्चा बेलफल—मलको गाढा करनेवाली, अग्नि दीपन करनेवाली, वात-कफ-नाशक द्रव्योंमें उत्तम है।

५० अतीस—दीपन, पाचन, सग्राहक और सब दोष करनेवालों में सर्वोत्तम है।

५१ कमलगट्टा, कमल और केसर एवं कमोदिनी—सग्राहक और रक्तपित्त-नाशकोंमें सर्वोत्तम है।

५२ जवासा—पित्त-कफ-नाशकोंमे सर्वोत्तम है।

५३ गन्धप्रियगु—रक्त पित्तके अतियोग नाशकोंमे सर्वोत्तम है।

५४ कुडाको छाल—कफ पित्त रक्त सग्राहको और उपशोषक द्रव्योंमें सबसे अच्छा है।

५५ गभारीफल—सग्राहक और रक्तपित्त-नाशकोंमें सबसे परमोत्तम है।

५६ पिठवन—सग्राहक, वातहर और हृद्योंमें सर्वोत्तम है।

५७ विदारीकन्द—हृष्य और सब दोष नाशकोंमे उत्तम है।

८ बला ( खिरैंटी )—सग्राहक, बलवर्द्धक और वातनाशक द्रव्योंमें उत्तम है।

५९ गोखरू—मूत्रकृच्छ्र और वायुनाशक द्रव्योंमें सर्वोत्तम है।

६० हींग—छेदन, दीपन, अनुलोमन और वात-कफ-नाशकोंमें सर्वोत्तम है।

६१ अमलवेत—भेदन, दीपन, अनुलोमन, और वात कफ-हरणकर्त्ताओंमें सर्वोत्तम है।

६२ जवाखार—स्त्र मन, पाचन और बवासीर-नाशक द्रव्योंमें सर्वोत्तम है।

६३ माठा—ग्रहणीके दोष नाश करनेवालों, बवासीर नाश करनेवालों, और अधिक घी खानेके विकारोंके नाश करनेमें माठा या छाछ प्रधान है।*

६४ मांसखोर जानवरोंका मांस—ग्रहणी दोष, शोष, और बवासीरमें खाना उत्तम है।

६५ दूध घी का अभ्यास—बुढ़ापा नाशकरनेवाले उपायोंमें श्रेष्ठ है।

६६ सत्तू और घी का समपरिमाणसे रोज़ खाना—वृष और उदावर्त्त नाशक द्रव्योंमें उत्तम है।

६७ तेलके कुल्ले—दाँतोंके मजबूत करनेवाले और रुचि करने-वाले उपायोंमें सर्वश्रेष्ठ हैं।

६८ चन्दन और गूलर—दाह नाशक लेपोंमें सर्वोत्तम है।

* भोजनके बाद भुना हुआ ज़ीरा, सेंधा नोन मिला हुआ गायका माठा पीनेसे खूब भूख लगती है। एक कोरी हाँडीमें चीतेकी जड़की छालको जलमें पीसकर लेप करदो। पीछे सुखालो। इस हाँडीमें गायका दूध जमाकर दहीको बिलो कर माठा बनाया करो और रोज पिया करो। बेहद लाभ होगा। बवासीरके लिये अकसीर है।

१०२ विषाद—रोग बढानेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१०३ स्नान—परिश्रम हरण करनेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१०४ हर्ष—प्रीति करनेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१०५ बहुत साग खाना—सुखानेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१०६ सन्तोषसे रहना—पुष्टि करनेवालोंमें उत्तम है ।
१०७ पुष्टि—निद्राकारकोंमें उत्तम है ।
१०८ निद्रा—तन्द्रा करनेवालोंमें उत्तम है ।
१०९ सर्व रसाभ्यास—बल करनेवालोंमें सर्वोत्तम है ।
११० एक रस खाना—दुर्बल करनेवालोंमें सर्वोपरि है ।
१११ गर्भशल्य—अनाकर्षणीयोंमें सर्वोपरि है ।
११२ अजीर्ण—क्षय कराने योग्योंमें सर्वोपरि है ।
११३ बालक—मृदु औषध द्वारा चिकित्सा करने योग्योंमें प्रधान है ।
११४ बूढे का रोग—याप्य रोगोंमें सबसे बढकर है ।
११५ गर्भवती स्त्री—तेज औषधि,कसरत, मिहनत और पुरुष-संसर्गसे बचनेवालोंमें सर्वोपरि है ।
११६ मनकी प्रसन्नता—गर्भधारकोंमें सबसे उत्तम है ।
११७ सन्निपात—दुश्चिकित्स्योंमें सबसे बढकर है ।
११८ आम चिकित्सा—विरुद्ध चिकित्साओंमें सबसे ऊपर है ।*

* आमदोष—जब लाल आदि लक्षणोंसे युक्त होता है, उसे विष कहते हैं । जब आम-दोष विषके समान हो, तब उसकी शीत चिकित्सा करनी चाहिये, किन्तु इस मौके पर गरम इलाज लाभदायक होता है , इसीसे आमकी चिकित्साका विरोध है ।

११९ ज्वर—रोगोंमें सबसे अधिक बली है।

१२० कोढ—बहुत समय तक रहनेवाले रोगोंमें राजा है

१२१ राजयक्ष्मा—रोगोंमें प्रधान है।

१२२ प्रमेह—न छोड़नेवाले रोगोंमें सबसे बढकर है।

१२३ शोष—उपशम्योंमें सबसे अच्छो है।

१२४ बस्ती—पञ्चकर्मों में उत्तम है।

१२५ हिमालय—औषधि भूमिमें सर्वश्रेष्ठ है।

१२६ मरुभूमि—आरोग्य देशोंमें सबसे उत्तम है।

१२७ सोमलता—औषधियोंमें सर्वोत्तम है।

१२८ अनूपदेश—अहितकर्ता देशोंमें सबसे बढकर है।

१२९ वैद्य की आज्ञापालन करना—रोगीके गुणोंमें सर्वोत्तम है।

१३० चिकित्सक—चिकित्साके चतुष्पादोंमें प्रधान है।

१३१ नास्तिक—वर्जनीयोंमें सबसे अधिक वर्जनीय है।

१३२ लोभ—क्लेशकारकोंमें सबसे बढकर है।

१३३ रोगी की असाध्यता—मृत्यु-लक्षणोंमें प्रधान लक्षण है।

१३४ अस्थिरता—डरपोक मनके लक्षणोंमें प्रधान है।

१३५ देशकाल आदिके विचार-पूर्वक औषधि देना—वैद्य के गुणोंमें प्रधान गुण है।

१३६ वैद्यसमूह—निःसंशय कारकोंमें प्रधान है।

१३७ शास्त्रज्ञान—औषधोंमें प्रधान है।

१३८ शास्त्रानुमोदित युक्ति—ज्ञानोपायोंमें प्रधान है।

१३९ उत्तम ज्ञान—कालज्ञान योजनाओंमें उत्तम है।

१४० [illegible]—व्यवसाय नाशक और काल-नाशक हेतुओंमें सर्वोत्तम है।

१४१ चिकित्सक की बहुदर्शिता—नि सन्देह करनेवाले उपायोंमें प्रधान है।

१४२ असमर्थता—भय पैदा करनेवालोंमें सर्वोपरि है।

१४३ अपने सहपाठीसे शास्त्रार्थ करना—बुद्धिवर्द्धक उपायोंमें प्रधान है।

१४४ आचार्य्य—शास्त्राधिकार हेतुओंमें प्रधान है।

१४५ आयुर्वेद—अमृतोंमे प्रधान है।

१४६ सद्वचन—अनुष्ठान करने योग्योंमे प्रधान है।

१४७ बिना विचारे बोल उठना—सब तरहके अहित करनेवालोंमे प्रधान है।

१४८ सर्वत्याग—सुख करनेवालोंमे सर्व्वोत्तम है।

१४९ दूध—जीवनीयोंमे प्रधान है।

१५० मांस—बृंहणियोंमे प्रधान है।

१५१ गवेधुकधान्य—कृशताकारकोंमे प्रधान है।

१५२ उद्दालक अन्न—रूक्ष करनेवालों यानी रूखापन करनेवालोंमे प्रधान है।

उपरोक्त १५२ उत्तम बातें चरकके सूत्र-स्थानमें कही हैं। इनमे की प्रत्येक बात वैद्यक करनेवालों और वैद्यक न करने वालों दोनोंके लिये परम लाभप्रद हैं। चरकमें लिखा है —

*एतन्निशम्य , निपुणश्चिकित्सा सम्प्रयोजयेत् ।*

*एवं कुर्वन् सदा वैद्यो, धर्मकामौसमुश्नुते ।*

निपुण वैद्य इन सभी विषयोंको,यानी इन १५२ बातों को, याद करके चिकित्सा करे। यदि वैद्य इस प्रकार करे तो धर्म और काम की प्राप्ति करे।



# अनमोल उपदेश।

यदि बुढापेमें वात-कफके रोगोंसे बचना चाहते हो, तो सदा तेल की मालिश कराया करो।

यदि शरीर को बलवान बनाना चाहते हो, जल्दीही बुढापेका आना पसन्द नहीं करते, तो कसरतका अभ्यास करो।

यदि शरीर को मोटा-ताज़ा देखना चाहते हो, तो मैथुनसे भरसक बचो।

यदि बुढापे से बचना चाहते हो, बहुत उम्र तक जीना चाहते हो, सदा निरोग रहना चाहते हो, तो हरड़ अथवा आँवले अथवा त्रिफलेका विधि-पूर्वक सेवन करो।

यदि शरीरमें बलवीर्य की वृद्धि चाहते हो, स्त्रियोंका-मान भञ्जन करना चाहते हो, तो विदारीकन्द या मुलहटी का सेवन करो, इनके सेवन करनेकी विधि हमारी लिखी "स्वास्थ्य-रक्षा" नामक पुस्तक के पृष्ठ २६८-२७१ में देखो।

यदि चाहते हो कि बुढापा हमसे दूर रहे, हमारी आँखों

की ज्योति बनी रहे, शरीरका रंग सुन्दर बना रहे, तो आप सब झगड़े छोड़ कर घी दूध और मुलहटी का सेवन कीजिये, शरीरमें अपार वीर्य होगा। देखो स्वास्थ्यरक्षा पृष्ठ २६८-२७१

यदि आप चाहते हो कि हमारे दाँत मटा पत्थरके समान मज़बूत बने रहें —कभी न हिलें, तो आप काले तिलोंके तेलके कुल्ले नित्य करते रहें।

यदि आप सुखसे जीवन का बेड़ा पार करना चाहते हैं, तो आप अत्यन्त भोजन, भारी पदार्थों का सेवन, अधिक स्त्री प्रसंग, चलते या निकलते हुए वीर्य को रोकना, व्रत-उपवास, अजीर्ण होने पर भी फिर खाना, विषम भोजन, संयोग-विरुद्ध भोजन, अपने बलसे अधिक परिश्रम, रजस्वला-गमन, आहार विहारके मिथ्या योग, अधिक शोक चिन्ता, एक रस खाना, बिना विचारे बोल उठना—मलमूत्रादि वेगोंका रोकना,—इतने कामोंसे अवश्य बचिये।

अत्यन्त भोजन करनेसे विषके समान आम-दोष पैदा हो जायँगे, भारी पदार्थ बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे पचेंगे। अधिक स्त्री-प्रसंगसे आपका शरीर दुर्बल हो जायगा, बिना अवस्थाके बुढ़ापा आजायगा और राजयक्ष्मा नामक ऐसा रोग हो जायगा, जिसके आराम करनेवाले वैद्य इस जगत्में चिराग लेकर खोजने से भी न मिलेंगे।

चलते हुए वीर्यको और ज़रासी देरके मज़ेके लिये रोकने से आपका पुरुषत्व मारा जायगा, आप हींजड़ेके समान हो जायँगे,

घृत सेवन करना और तीन प्रकारके वस्ति-कर्म करना—ये उपाय चरकमें इसकी शान्तिके लिखे हैं।

## पाखाने

या मलके वेग को रोकनेसे पेटमें गुड़गुड़ाहट और दर्द होता है, गुदामें कतरने की सी पीड़ा होती है, टट्टी साफ नहीं होती, डकारें आती हैं अथवा मुँहसे मल निकलता है। ये लक्षण माधवाचार्य्यने लिखे हैं। चरक में लिखा है, पक्वाशय और मस्तकमें पीड़ा होती है। अधोवायु और मल दोनों रुक जाते हैं। नाभि मलसे लिहस जाती है और पेट फूल जाता है।

चरकमें लिखा है, मलके रुकने पर स्वेदन, अभ्यङ्ग, अवगाहन, तीन प्रकारकी बत्ती, वस्ती-कर्म तथा वायुको अनुलोमन करने वाले खान पान,—इन सबसे काम लेना चाहिये।

## शुक्र

यानी वीर्य्य के रोकनेसे मूत्राशयमें सूजन, गुदा और फोतों में पीड़ा, पेशाव का कष्टसे होना, शुक्र की पथरी, वीर्यका रिसना,—माधवने लिखा है, ऐसे-ऐसे अनेक रोग होते हैं। चरकने लिखा है, मैथुन करते समय छुटते हुए वीर्यके रोकने से लिङ्ग और फोतोंमें दर्द, शरीर टूटना यानी अङ्गड़ाई आना, हृदयमें पीड़ा और पेशाव का रुक रुक कर ... होते हैं।

ऐसी हालत होने पर मालिश, अवगाहन, यानी गोते लगाकर जलमें नहाना, शराब पीना, मुर्गेका मांस खाना, शाली चांवल खाना, दूध पीना, निरूह बस्ती और मैथुन करना—ये उपाय उत्तम हैं।

## अधोवायु

यानी गुदा द्वारा निकलनेवाली हवाको शर्म या लज्जावश रोकनेसे अधोवायु, मल और मूत्र ये रुक जाते हैं, पेट फूल जाता है, अनायास थकानसी मालूम होती है, पेट में बादीसे दर्द होता है, तथा औरभी वायुके उपद्रव होते हैं।

ऐसा होने पर स्नेह, स्वेद और बस्तीकर्म करना तथा वायुको अनुलोम करनेवाले भोजन और पान देना उत्तम उपाय है।

## वमन

के वेगको रोकने यानी आती हुई कयको रोकनेसे खुजली, चकत्ते, अरुचि, मुँह पर झांई, सूजन, पीलिया सूखी खांसी और विसर्प—ये उपद्रव होते हैं। चरकमें कोढ अधिक लिखा है।

इन रोगोंके दूर करनेके लिये भोजनके बाद वमन करानी चाहिये, उसके बाद धूम पान और लङ्घन कराने चाहिये तथा फस्त खोलनी चाहिये। इनके सिवा रूखे पदार्थों का सेवन, कसरत और जुलाब, ये सब भी उत्तम हैं।

## छींक

के वेग को रोकनेसे गर्दनके पीछे की मन्या नामक नस जकड़ जाती है, सिरमें शूल चलते हैं, आधा मुँह टेढ़ा हो जाता है, इन्द्रियाँ दुर्बल हो जाती हैं और अर्द्धाङ्गमें वात रोग हो जाता है। चरकने लिखा है—गर्दन का जकड़ना, मस्तक शूल, लकवा, आधाशीशी और इन्द्रियोंकी दुर्बलता होती है।

ऐसी हालतमें हँसलीके ऊपरी भागमें मालिश करना, स्वेदन, धूम्रपान, और नस्यका प्रयोग करना, वात नाशक क्रिया करना और भोजनके पहले और पीछे घी पीना—ये उत्तम उपाय हैं।

## डकार

के वेग को रोकनेसे वादीके इतने रोग होते हैं—कंठ और मुख का भारीपन मालूम होना, एकदमसे नोचनेका-सा दर्द होना, समझमें न आवे ऐसी बात कहना। चरकने लिखा है—हिचकी, खाँसी, अरुचि, कम्प, और हृदय तथा छातीका बँधासा होना—ये रोग होते हैं।

ऐसा होने पर हिचकी-रोगमें जो इलाज किया जाता है, वो इसमें भी करना चाहिए। हिचकी और श्वास का कारण वायु है और दोनो का स्थान भी आमाशय है। इस लिए ऐसा उपाय करना चाहिए, जिससे छेदोंमें चिपटा हुआ

कफ पिघल जाय और श्वास-वायु अपनी राह में ठीक आने-जाने लगे। रोगीको लेट कराकर चिकना भोजन देना चाहिए, जिससे कफ बढ़े, पीछे पीपल, सेंधे नोन और शहत में या और किसी दवासे जो वायु की विरोधी न हो, वमन करा देनी चाहिए। वमन होने से कफ निकल आयगा, छिद्रो के शुद्ध होनेसे वायु स्वच्छन्दता-पूर्व्वक विचरने लगेगा, रोगीको आराम मालूम होगा। फिर भी यदि कुछ दोष रह जाय, तो धूमपान द्वारा निकाल देना चाहिए। जौ की बत्ती को चिलम में रखकर पिलाना, मोम, राल और घी—इन तीनों को इकट्ठा पीस कर, मल्लक सम्पुट में रखकर,धूम पान कराना अथवा हिचकी-नाशक नस्य सुँघाना,इस काम के लिए उत्तम उपाय है। हम हिचकी नाशक चन्द परीक्षित उपाय लिखते हैं—

(१) नाकमें हींग की धूनी दो

(२) ज़रासे सेंधानोनको जलमें पीसकर सुँघाओ

(३) मक्खी के गू को दूध में पीसकर सुँघाओ

(४) सोंठ को गुड़ मिलाकर सुँघाओ

(५) मुलेठीको शहतमें मिलाकर सुँघाओ।

(६) शहत और काला निमक मिलाकर बिजौरे का रस पिलाने या केवल शहत चटाने से असाध्य हिचकी भी आराम होती है।

(७) सोंठ, पीपल, धायके फूल, इनके चूर्ण को शहत में मिलाकर चटाओ

(८) डराने, आश्चर्यजनक बात कहने, प्राणायाम करने, अद्भुत बात कहने, मनमें चोट लगनेवाली बात कहने आदि से हिचकी आराम हो जाती है।

## जँभाई

के वेग को रोकने से गर्दनके पीछे की नस और गलेका ज कड जाना, मस्तक में बादी के विकार होना, नेत्र-रोग, नासा-रोग, मुखरोग, और कर्णरोग का जोरसे होना—ये सब उपद्रव होते है। चरक में लिखा है—अङ्गों का नव जाना,—आक्षेपक वायु, सङ्कोच, शरीरके अङ्गोंका सोजाना और काँपना ये उपद्रव होते है।

इससे हुए रोगोंमे वातनाशक औषधि देना हितकारी है।

## भूख

के वेगको रोकने से तन्द्रा, शरीर टूटना, अरुचि, थकाई, और नज़र कम होना ये रोग होते है। चरक मे लिखा है—देह में दुर्बलता, कृशता, विवर्णता, अङ्ग टूटना और भ्रम,—ये लक्षण होते हैं।

इसमें चिकने, गर्म और हल्के भोजन देना हितकारी है।

## प्यास

के वेग को रोकने से कण्ठ और मुँह सूखते है, कानों से

कम सुनायी देता है और हृदय में पीड़ा होती है। चरक में—श्रम और श्वास का होना अधिक लिखा है।

इससे हुए रोगोंमें शीतल क्रिया और तर्पण करना हितकारी है।

हम चन्द उपाय लिखते हैं —

(१) शहत का गण्डूष धारण करो।

(२) बड़के अङ्कुर, शहत, कूट, कमल और खील—इनको एक जगह पीस कर गोलियाँ बना लो। पीछे इन गोलियों को मुख में रक्खो।

(३) अनार, बेर, लोध और बिजौरे नीबू को एक जगह पीसकर माथे पर लेप करो।

(४) गीले कपड़े को शरीर पर लपेट लो

(५) चाँवलों के जलमें शहत मिलाकर पीओ

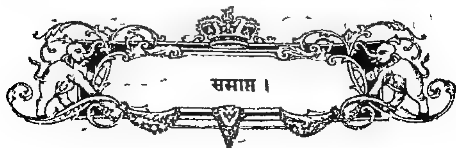
(६) छटाँकभर मिश्रीको शीतल जलमें घोलकर शर्बत बना लो, पीछे उसमें ४।५ छोटी इलायची, चाँवलभर कपूर, २।३ लौंग १०।१५ काली मिर्च—इन सबको पीसकर मिला दो। शेषमें बारीक कपड़ेसे छान कर पिला दो। इसे "शर्करोदक" कहते हैं। यह बहुत ही उत्तम चीज है। यह वीर्य पैदा करनेवाला, पेट की जलन नाश करनेवाला, दस्त साफ़ लाने वाला, स्वाद में मजेदार, वात, पित्त, और खूनविकार का नाश करनेवाला; बेहोशी, जी मिचलाना और प्यास आदिके शान्त करनेमें परमोत्तम

झूठ मत बोलो, दूसरे को जिससे कष्ट हो ऐसी बात चित्त में भी न लाओ, रण्डीबाज़ी से बचो, चोरी का ध्यान भी न करो, किसी भी प्राणी की हत्या मत करो इत्यादि।

यदि आप शारीरिक वेगों को न रोकेंगे, मन-वच कर्म से निष्पाप रहेंगे, तो आप 'पुण्यश्लोक' हो जायँगे। आप सदा सुखी रहेंगे, आपका धन-धर्म बढ़ेगा, कामकी प्राप्ति होगी और लक्ष्मी आपकी चेरी रहेगी।

कसरत अच्छी है। सामर्थ्यानुसार कसरत करने से शरीर हलका और मज़बूत होता है, काम करने और क्लेश सहने की सामर्थ्य होती है, तीनों दोषोंका क्षय होता है, भूख बढ़ती है, मगर इसके भी अधिक करने से थकान, ग्लानि, क्षय-रोग,प्यास, रक्तपित्त, प्रतमक-श्वास, खाँसी, ज्वर और वमन—ये उपद्रव होते हैं।

इसीलिए बुद्धिमानको ज़रूरत होने से भी अत्यन्त कसरत, बहुत हँसना, बहुत बोलना, बहुत रास्ता चलना, बहुत स्त्री संसर्ग करना, और बहुत जागना—इनसे बचना चाहिए।



# नीतिकारों का संक्षिप्त विवरण।

चाणक्य। चाणक्य ब्राह्मण थे। यह उस जमानेमें हुए थे, जब यहाँ महानन्द नामक राजा राज्य करता था। यह बड़े कूटनीतिज्ञ थे। इन्होंने नन्दके पुत्रोंको गद्दीसे उतार कर, अपने नीति-बलसे, अपने शिष्य चन्द्रगुप्तको राज्य दिलाया। इन्हें पैदा हुए कोई २३०० वर्ष हुए। इनकी बनाई नीतिका संसारमें बड़ा आदर है।

विदुर। यह महापुरुष एक तरह धृतराष्ट्रके भाई थे। दासीसे पैदा होनेके कारण मन्त्रीका काम करते थे। इन्होंने राजा धृतराष्ट्रको बहुत कुछ समझाया बुझाया कि, आप अनीति न कीजिये—पाण्डवोंका राज्य पाण्डवोंको दे दीजिये, मगर धृतराष्ट्रने भावीके कारण या पुत्र-प्रेमके कारण उनका कहना न माना। यह भी बड़े भारी नीतिज्ञ हुए हैं। इनका एक-एक वचन लाख-लाख रुपयेकी भी महँगा नहीं है। इन्हें हुए कोई ५००० वर्षसे ऊपर हुए।

शुक्र। इन्हें शुक्राचार्य्य कहते हैं। सबसे पहले नीतिकार यही हुए हैं। इनके समयका पता नहीं लगता। इन्होंने खूब बढ़िया नीति कही है।

भर्तृहरि। महाराजा भर्तृहरि राजा विक्रमादित्यके भाई

और उज्जैनके राजा थे। अपनी परम-प्यारी रानी पिङ्गलाके व्यभिचारिणी सिद्ध हो जाने पर, इन्होंने राजपाट त्याग कर वैराग्य ले लिया और तीन शतक लिखे। पहले शतकमें नीति* दूसरेमें शृङ्गार और तीसरेमें वैराग्य विषय पर लिखा है। इन को पैदा हुए भी अनुमान से २००० वर्ष हुए हैं। इन्होंने जो लिखा है, वह विचित्र और मनोमोहक है।

**शेख सादी।** आप मुसलमान थे और ईरान में पैदा हुए थे। आपने गुलिस्ताँ नामक अपूर्व्व नीति-ग्रन्थ लिखा है। गुलिस्ताँका प्रत्येक वाक्य अनमोल है। हमने इस पुस्तकमें सिर्फ़ एक अध्यायका अनुवाद दिया है। सम्पूर्ण गुलिस्ताँका अनुवाद भी हमारे यहाँ छपकर बिकनेको तय्यार है। पृष्ठ संख्या ४०० दाम २) डाक महसूल और पैकिंग ।⁄)

**महात्मा कनफ्यूशियस।** आप चीन के महापुरुष थे। आपको हुए भी कई हज़ार वर्ष बीत गये। आपको

---

*इनके तीनों शतक उत्तम हैं। परन्तु तीनोंमें नीतिशतक सर्वोत्तम है। इसे स्त्री, बालक, जवान और बूढ़े सभी पढ़ सकते और लाभान्वित हो सकते हैं। नीति शतक हमारे यहाँ बड़ी ख़ूबीसे छपा है। संस्कृत श्लोक है, नीचे पद्यानुवाद है, उसके नीचे भाषानुवाद है, और उसके भी नीचे अँगरेजी अनुवाद है। प्रत्येक मनुष्यके देखने योग्य चीज़ है। छपाई-सफाई अत्युत्तम। दाम ॥) डाकखर्च और पैकिंग ⁄) अवश्य देखिये।

नीति और आपकी बुद्धिमानीकी वजहसे आप चीनके घर-घर में पूजे जाते हैं। आपने पहले लड़के पढ़ाये। पचास वर्षकी उम्रमें आपको हाकिमी मिली। पीछे आपने इस्तेफा दे दिया और गली-गली फिर कर अपने उपदेश-रूपी अमृत की वर्षा करने लगे।